आंचलिक पत्रकार

ISSN 2319-3107

425

सितंबर, 1981 से प्रकाशित

15 सितंबर 2017

मूल्य ₹ 25/-

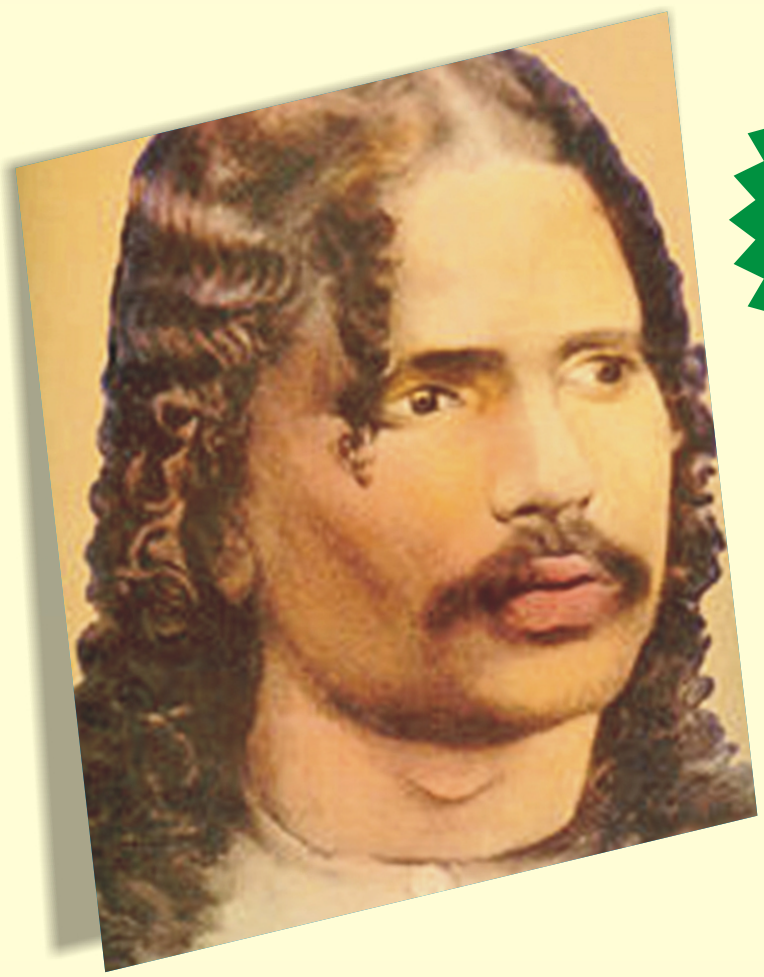

36वाँ वार्षिकांक

"निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को शूल।।
विविध कला शिक्षा अमित
ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन से लै करहू
भाषा माही प्रचार।।"

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

हिन्दी नवयुग के प्रवर्तक

सा विद्या या विमुक्तये

जनसंचार माध्यमों और विज्ञान संचार की शोध पत्रिका

आर.एन.आई.पं.क्र. MP HIN/2004/12178, डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल/162/2015-17

देशवासियों आगे बढ़ो
और वादा करो कि हम
भारत को विश्व की
कौशल राजधानी बनाएंगे।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

हम ऐसे प्रदेश की
कल्पना करते हैं जो
हमारे राष्ट्र की
कौशल राजधानी बन सके।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना

उन्नत हुनर सशक्त कल

- प्लंबिंग • टेलीकॉम • ग्रीन जॉब्स • फूड प्रोसेसिंग
- कैपिटल गुड्स • डोमेस्टिक वर्कर • रीटेल • ऑटोमोटिव
- टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटालिटी • इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड हार्डवेयर
- अपैरल मेड-अप्स एण्ड होम फर्निशिंग • एग्रीकल्चर
- सिक्यूरिटी • कंस्ट्रक्शन • फर्नीचर एण्ड फिटिंग्स
- आईटी एवं आईटीईएस • बैंकिंग एण्ड फायनेंशियल सर्विसेस।

मैं चाहता हूँ, मध्यप्रदेश के हर युवा के हाथ में हुनर और रोज़गार हो, इसके लिए मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना एवं मुख्यमंत्री कौशल्या योजना राज्य के युवाओं के लिए वरदान सिद्ध होगी।

दीपक जोशी
राज्यमंत्री, तकनीकी शिक्षा एवं
कौशल विकास विभाग (स्वतंत्र प्रभार)
मध्यप्रदेश शासन

मुख्यमंत्री कौशल्या योजना

प्रतिभा प्रेरणा प्रगति

- हेल्थकेयर • रीटेल • सिक्यूरिटी
- ऑटोमोटिव • आईटी एवं आईटीईएस
- बैंकिंग एण्ड फायनेंशियल सर्विसेस
- अपैरल मेड-अप्स एण्ड होम फर्निशिंग
- ब्यूटी एण्ड वेलनेस • डोमेस्टिक वर्कर
- फूड प्रोसेसिंग • टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटालिटी।

ये योजनाएं परिणामोन्मुखी दृष्टिकोण रखते हुए सफल प्रशिक्षणार्थियों में से कम से कम 70% प्रशिक्षणार्थियों (50% वैतनिक रोज़गारव 20% स्वरोज़गार) को सतत् रोज़गार प्रदान करने का लक्ष्य सुनिश्चित करती है।

लक्ष्य ▶▶▶

वर्ष 2017-18 से प्रतिवर्ष 2.50 लाख युवाओं और 2.00 लाख महिलाओं को प्रशिक्षित किया जायेगा।

आवेदकों की पात्रता ▶▶▶

- 15 साल से अधिक उम्र के महिला या पुरुष।
- एनएसक्यूएफ पाठ्यक्रमों के लिए भारत सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमों के तहत न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता आवश्यक है।

प्रशिक्षण की अवधि ▶▶▶

- सामान्यतः 15 दिवस से लेकर 9 महीने (लगभग 100 से 1200 घंटे) तक होगी।

पंजीयन की प्रक्रिया ▶▶▶

- पंजीयन के समय आधारकार्ड की जानकारी होना अनिवार्य है।
- पंजीयन हेतु पोर्टल **www.mpskills.gov.in** अथवा निकटतम आईटीआई में स्थापित हेल्पडेस्क पर संपर्क करें।

इस योजना में दिया जाने वाला प्रशिक्षण, प्रशिक्षणार्थियों के लिये निःशुल्क होगा।

कौशल विकास संचालनालय एवं मध्यप्रदेश राज्य कौशल विकास मिशन (एमपीएसएसडीएम)
तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग, मध्यप्रदेश शासन

Indstrial Training Institute

गैस राहत आईटीआई, रायसेन रोड, गोविंदपुरा, भोपाल, फोन : +91 755 2581138 https://www.facebook.com/Mapskills https://twitter.com/MaP_Skills

ISSN 2319–3107

आंचलिक पत्रकार

जनसंचार माध्यमों
और विज्ञान संचार
की शोध पत्रिका

अनुक्रम

4. **यह अंक**
5. **किसानी का संकट और मीडिया**
   पी. साईनाथ
16. **बहुआयामी सृजन के अथक यात्री**
   रमेश नैयर
18. **सरोकारी पत्रकारिता के पहरुए प्रभाष जोशी** / संत समीर
21. **'आंचलिक पत्रकार' : 36 वर्ष की विवरणी**

- पता, फोन-मोबाइल नं., ईमेल बदले तो सूचना दीजिए ताकि संपर्क बना रहे।
- जब किन्हीं पाठक का पता बदल जाए, तब कृपया अपना नया डाक का पता, पिन कोड नं. सहित तत्काल सूचित करने का कष्ट करें।
- कृपया टेलीफोन नं., मोबाइल नं. और ईमेल भी भेजिए।
- संवाद का सिलसिला बनाए रखने के लिए यह जरूरी है।

संपादक (मो. 09425011467)
- ईमेल -
editor.anchalikpatrakar@gmail.com
sapresangrahalaya@yahoo.com

सितंबर, 1981 से प्रकाशित

सितंबर – 2017

वर्ष–37, अंक–1, पूर्णांक–425

एक प्रति – ₹ 25/– वार्षिक – ₹ 250/–

संपादक मंडल

डा. शिवकुमार अवस्थी
श्री अशोक मानोरिया
डा. मंगला अनुजा
डा. राकेश पाठक
श्री लालबहादुर ओझा

.....

संपादक

विजयदत्त श्रीधर

.....

प्रकाशक

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र
संग्रहालय एवं शोध संस्थान
माधवराव सप्रे मार्ग (मेन रोड नं. 3)
भोपाल (म.प्र.) 462 003

.....

मुद्रक

दृष्टि आफसेट, प्रेस काम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, जोन–I
भोपाल (म.प्र.) – 462 011

.....

संपर्क

फोन – (0755) 2763406
(0755) 4272590
(0755) 2552868

.....

E-mail

editor.anchalikpatrakar@gmail.com
sapresangrahalaya@yahoo.com

यह अंक

'आं चलिक पत्रकार' ने उम्र के छत्तीस साल पूरे कर लिए हैं। सैंतीसवें साल का यह पहला अंक आपके हाथों में है। पूर्णांक 425 है, जबकि होना चाहिए थे 432। अर्थात 7 अंक संयुक्तांक निकले। परन्तु निरंतरता में व्यवधान नहीं आया। प्रकाशन कभी स्थगित नहीं हुआ। पाठकों की संख्या क्रमशः बढ़ती रही है। लेखकों का परिवार भी बढ़ा। विषयों की विविधता बढ़ी। पत्रकारिता और जनसंचार के साथ-साथ विज्ञान संचार विषय जुड़ा। सम-सामयिक सामग्री देते हुए जहाँ पाठकों की जानकारियों को अद्यतन रखने का प्रयास किया गया, वहीं शोधपरक आलेखों ने पत्रिका को विमर्श का माध्यम बनाए रखा है। जब पत्रिका का कोई अंक किसी पाठक को नहीं मिलता है, तब दुबारा भेजने के लिए आने वाले आग्रह यह बताते हैं कि 'आंचलिक पत्रकार' की उपादेयता स्वीकारी जा रही है। पाठक खरीद कर पढ़ रहे हैं। सिलसिलेवार फाइल बना कर रख रहे हैं। 'आंचलिक पत्रकार' को इस मुकाम तक पहुँचाने के लिए लेखकों, पाठकों, विज्ञापनदाताओं की सहयोग-भावना के प्रति हम हृदय से आभारी हैं।

x x x

पिछले एक दशक से 'आंचलिक पत्रकार' के वार्षिकांक में अब तक प्रकाशित शोध-संदर्भ की दृष्टि से महत्वपूर्ण सभी आलेखों की विवरणी प्रकाशित की जाती है। यह विवरणी शोध-छात्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। पत्रकारिता एवं जनसंचार विषयों पर लिखने वालों को भी इस विवरणी से सहायता मिलती है। पत्रकारिता की प्रवृत्तियाँ और सरोकार, शैली और सलीका, भाषा और वर्तनी, संघर्ष और उपलब्धियाँ, संपादक और पत्रकार, विश्लेषण और नवाचार इत्यादि विषयों पर पाठ सामग्री का वैविध्य मीडिया विषयक इस पत्रिका की विशेषता है।

x x x

सप्रे संग्रहालय पत्रकारिता विषयक आयोजनों की रिपोर्ट प्रकाशित करने के अलावा, अब पत्रकारिता जगत की अन्य सूचनाएँ देने के लिए भी नियमित स्तंभ आरंभ करने जा रहा है।

सप्रे संग्रहालय ने मध्यप्रदेश के पत्रकारों, जनसंपर्क अधिकारियों और मीडिया शिक्षकों का डाटाबेस तैयार करने का काम शुरू किया है। इसका उद्देश्य आपसी सद्भाव और भाईचारा तथा सुख-दुख में सहभागिता बढ़ाना है।

x x x

सप्रे संग्रहालय ने (एक) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और (दो) श्री गंगाप्रसाद ठाकुर पत्रकारिता फैलोशिप आरंभ की है। युवा पत्रकारों में तथ्य संग्रह और विश्लेषण, सुरुचिपूर्ण लेखन और प्रभावी अभिव्यक्ति की दक्षता बढ़ाने के इस उपक्रम से 'आंचलिक पत्रकार' का कलेवर भी समृद्ध होगा।

■ **संपादक**

प्रभाष प्रसंग

किसानी का संकट और मीडिया

■ **पी. साईनाथ**

मैं, हिन्दी में बात करने की कोशिश करता हूँ। मैं तीन दिन पहले आंध्र प्रदेश के काकीनाडा में था। वहाँ लोगों ने मुझसे कहा कि आप इतनी दूर से आए हैं, आप तेलुगु में बात करें। मैंने कहा, देखो आंध्र प्रदेश की एक खास बात है। यहाँ कोई भाषाई दंगा नहीं हुआ। लेकिन अभी तेलुगु में बात करूँ तो हंगामा हो जाएगा। मैंने वहाँ तेलुगु में भाषण दिया। आज हिन्दी में कोशिश करता हूँ। अँगरेजी-हिन्दी मेलजोल। 17 साल पहले जुलाई महीने में हमारी किताब का हिन्दी संस्करण आया था। उसका टाइटल था तीसरी फसल। इस टाइटल की भी एक कहानी है। इसमें प्रभाष जोशी का कनेक्शन क्या है, ये भी मैं आपको बताता हूँ। मैं और मेरे मित्र अनिल चौधरी एक बार राँची जा रहे थे। मेरी किताब उस समय बहुत सफल हुई थी। मैंने सोचा इस किताब की रायल्टी नहीं लेने वाला हूँ। ये किताब गरीबी के ऊपर है। हम सब हर साल दो पुरस्कार सिर्फ ग्रामीण पत्रकारों को देते हैं। ऐसे ग्रामीण पत्रकार जो अँगरेजी में नहीं लिखते। भारतीय भाषाओं में लिखते हैं। उसका पहला पुरस्कार प्रभात खबर अखबार के पत्रकार दयामनि उरांव को गया था। उस समय प्रभात खबर के संपादक हरिबंश जी थे। हम सोच रहे थे कि किसको यह पुरस्कार देने के लिए बुलाऊँ। मैंने अनिल भाई से कहा कि मैं तो अँगरेजी पत्रकार हूँ। तो अनिल भाई ने कहा कि वो देखो तीन सीट पहले कौन बैठे हैं। वो प्रभाष जोशी थे। मेरी समस्या का समाधान हो गया। मैंने उनसे प्रार्थना की। उनका कोई दूसरा प्रोग्राम था। वो उसको

> ***सन 1997 के बाद देश में ऐसी स्थिति हुई जिसको कहते हैं कृषि संकट। यह एक दो साल में नहीं हुआ। यह तो 20 साल से चल रहा है। इसके बारे में सीरियस रिपोर्टिंग हुई सन 2000 से। मीडिया और जर्नलिज्म इतनी बदल गई है कि तीन चार कारणों से कृषि संकट की व्याख्या नहीं कर सकते हैं। क्योंकि इसमें कोई इस्पेस्लाइजेशन नहीं है। जिसको हम एग्रीकल्चर संवाददाता कहते हैं, वह किसान से बात नहीं करता है। वह एग्रीकल्चर मिनिस्टर से और एग्रीकल्चर सेक्रेटरी से बात करता है। तो किसान से बात कौन करेगा?***

एडजस्ट करके आ गए। प्रभाष जोशी ऐसे आदमी थे। उन्हें पता था कि यह किसी ग्रामीण पत्रकार को पुरस्कार मिलने वाला है। इसीलिए वो अपने पूरे प्रोग्राम को चेंज करके आए। एक छोटे से स्कूल में प्रोग्राम किया। पूरा स्कूल भर गया। पूरी उरांव कम्युनिटी राँची की उस प्रोग्राम में आ गई थी। प्रभाष जोशी ने मेरे लिए ऐसा काम किया कि मैं कभी नहीं भूलूँगा। किताब का नाम बार-बार लोग पूछते हैं कि किताब का नाम 'एवरी बडी लव्स ए गुड ड्राउट' क्यों दिया? मैंने नहीं दिया। एक छोटे किसान एक्टिविस्ट ने दिया। पलामू में। उसका नाम था रामलखन। जब मैं बीडीओ के आफिस लातेहार गया। मैं तो मुंबई से आया था। किसी से बात करने का कोई चांस नहीं मिल रहा था। आफिस में कोई नहीं था। मैंने रामलखन से पूछा सब कहाँ गए हैं। उसका चेहरा देखने लायक था। मुस्कराते हुए उसने कहा कि तीसरी फसल लेने गया है। मैं चौंक गया। मैंने कहा कि रामलखन जी मैं मानता हूँ कि मैं किसान नहीं हूँ। मैं शहरी हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ रबी फसल और खरीफ फसल। ये तीसरी फसल क्या है। छूटते ही उसने कहा कि ड्राउट रिलीफ। वो सब तीसरी फसल लेने गया है। बीडीओ, सीओ से बीडीओ कहता हूँ। वो कह रहा था बीटीडीओ। मैंने पूछा - बीटीडीओ क्यों कह रहे हो। उसने कहा - ब्लाक द डेवेलपमेंट आफिसर। जब तक उसको 25 फीसदी कमीशन नहीं मिलता है, तब तक कोई काम नहीं करता है। इसीलिए उसको बीटीडीओ कहते हैं।

सन 1997 के बाद देश में ऐसी स्थिति हुई जिसको कहते हैं कृषि संकट। यह एक दो साल में नहीं हुआ। यह तो 20 साल से चल रहा है। इसके बारे में सीरियस रिपोर्टिंग हुई सन 2000 से। मैं पहले मीडिया और जर्नलिज्म के बारे में बात करना चाहता हूँ। इसमें मैं अंतर भी बताना चाहता हूँ। दोनों अलग चीज हैं। जब मैं मीडिया शब्द यूज करता हूँ तो इसका मतलब होता है इंस्टीट्यूशन, मालिक, न्यूज पेपर, चैनल। जर्नलिज्म का मतलब होता है पत्रकार। ये आपकी ट्रेजडी है कि मीडिया और जर्नलिज्म इतनी बदल गई है कि तीन चार कारणों से कृषि संकट की व्याख्या नहीं कर सकते हैं। क्योंकि इसमें कोई इस्पेस्लाइजेशन नहीं है। जिसको हम एग्रीकल्चर संवाददाता कहते हैं, वह किसान से बात नहीं करता है। वह एग्रीकल्चर मिनिस्टर से और एग्रीकल्चर सेक्रेटरी से बात करता है। तो किसान से बात कौन करेगा? कहता है कि दिल्ली में बैठकर मंत्री और सचिव से बात करेंगे। किसान से बात क्यों करेंगे? आपको कुछ नंबर देता हूँ जो नया नंबर निकला है। मैंने सीएमएस दिल्ली जो कि डा. भास्कर राव की संस्था है, मैंने उनसे बोला मुझे ये डाटा भेजिए। और देखिए एक ट्रेजडी है। मैं आपको कहना चाहता हूँ कि ये सारे नंबर एक जैसे हैं। अँगरेजी और हिन्दी के। इसीलिए कि पिछले बीस साल में आप जो भी अखबार देखेंगे, चाहे वो हिन्दी में या अँगरेजी में या तेलुगु में, सभी के मालिक एक ही हैं।

इंडिया टुडे तो अँगरेजी में है। क्या इंडिया टुडे मलयालम का कंटेंट अलग होगा? वही होगा जो इंडिया टुडे अँगरेजी का होगा। लेकिन उसमें एक लोकल स्टोरी होगी। रीजनल मीडिया में भी बहुत वेरायटी थी जो कि अब कम हो गई है। सीएमएस ने हमें यह एनलिसिस करके दिया। हम कहते हैं नेशनल डेली। दिस इज ए वेरी फनी वर्ड। नेशनल डेली का मतलब होता है जिसका मिनिमम दो एडिशन हो। एक दिल्ली से निकलता है, इसलिए वह नेशनल बन जाता है। औसत नेशनल डेली का एक दिन का नहीं, एक साल का नहीं, पाँच साल का औसत देता हूँ। 67 फीसदी न्यूज न्यू देल्ही से है। वह भी साउथ दिल्ली और लुटियन से है। बाकी दिल्ली, कोलकाता, मुंबई केवल 9 फीसदी है। भारत में और 42 शहर हैं। जिनका पापुलेशन 10 लाख से ज्यादा है। 53 अर्बन शहर हैं। जिसमें जैसे कि पटना, इनमें से 35 से 40 शहर का न्यूज पेपर के फ्रंट पेज पर नहीं देखता हूँ। कंप्लेन ये है

कि अखबार वाले, चैनल वाले, ग्रामीण भारत को कवर नहीं करते हैं। मैं कहता हूँ कि मैं भी अर्बन इंडिया को कवर नहीं करूँगा। 46 शहर 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहर हैं। इन शहरों को कितना स्पेश मिलता है। ग्रामीण कंटेंट केवल 0.26 फीसदी है। ये 2015 का डाटा है। पाँच साल का औसत 0.67 फीसदी है। कभी कभी ग्रामीण कवरेज बढ़ जाता है, जब देश में आम चुनाव का समय होता है। लेकिन फिर भी एक फीसदी से ज्यादा नहीं होता है। लेकिन 67 फीसदी जनसंख्या ग्रामीण भारत में रहती है। ये बढ़िया अन्याय है।

दूसरा कारण, इट इज बैड फार डेमोक्रेसी। तीसरा गैप आ गया। नई पीढ़ी कुछ नहीं जानती है। क्योंकि मैंने उसे कुछ नहीं समझाया। कितना इस्पेशलाइजेशन है हमारे अखबार में। इसी टाइम के अंदर अखबार, न्यूज चैनल, कारपोरेट आनरशिप के अंदर आ गया। हर दिन हमें फोन आता रहता है, दिल्ली-मुंबई-कोलकाता से। पत्रकार आम पत्रकार फोन करके बताते हैं। तीन चार कारणों से फोन करते हैं। कहते हैं कि हमें एसाइनमेंट दिया है कि कावेरी डेल्टा में जो दंगा चल रहा है कि इसे कृषि संकट के रूप में देखना है। मैं कभी गाँव में नहीं गया हूँ, सर कुछ बताइएगा। जो रिपोर्टर बहुत जानता है वो कहता है सर ये बड़ी रिपोर्ट है। मैं करना चाहता हूँ। लेकिन अखबार मालिक और संपादक उसे लेना नहीं चाहता है। सर आप कुछ कर सकते हैं। कहीं और पब्लिस कर सकते हैं। इस तरह का काल मुझे प्रत्येक दिन आता है। जिनके पास जानकारी है उसका पब्लिस नहीं होता है। क्योंकि मालिक को रेवेन्यू नहीं मिलेगा। वो तो बालीवुड को कवर करेगा। क्योंकि बालीवुड में रेवेन्यू है। किसान से क्या रेवेन्यू मिलेगा। आज एक भी बड़े चैनल या बड़े अखबार में फुल टाइम कृषि संवाददाता नहीं है। लेबर संवाददाता नहीं है। इतना बड़ा देश है। इतने लोग रहते हैं इस देश में। जब मैं 1980 में पत्रकारिता में आया था, सितंबर में मैं पत्रकार बन गया। उस समय हर अखबार में लेबर करेस्पांडेंट और कृषि करेस्पांडेंट रहा करता था। कृषि करेस्पांडेंट के बारे में मैं बता रहा हूँ कि पिछले बीस वर्षों से वो कृषि को कवर नहीं करता है। वो तो मंत्री को कवर करता है। वह बड़े बड़े कारपोरेट से प्रेस रिलीज ले लेता है। कभी गाँव नहीं जाता है। मंडी में नहीं जाता है। फील्ड में नहीं जाता है। मंत्रालय से प्रेस रिलीज ले लेता है। वह न्यूज में एग्रीकल्चर न्यूज बन जाता है। लेबर करेस्पांडेंट और इंपलाइमेंट करेस्पांडेंट 1980 में हर न्यूज पेपर में था।

आज लेबर करेस्पांडेंट है ही नहीं। बिजिनेश कवर करने के लिए तो आज हर अखबार में 8-10 करेस्पांडेंट होगा। एक तो मर्चेंट बैंकिंग ही कवर करेगा। एक इन्वेस्टमेंट बैंकिंग को कवर करेगा। मुंबई में हर एक अखबार में 10-12 करेस्पांडेंट केवल बिजिनेश कवर करने के लिए होगा। देयर इज नो बडी टू कवर लेबर। अखबार वाले कहते हैं कि फुल टाइम कृषि करेस्पांडेंट नहीं रखूँगा। लेबर करेस्पांडेंट नहीं रखूँगा। आई.एम. मेकिंग द स्टेटमेंट दैट 75 परसेंट आफ पापुलेशन डू नाट बी एक्यूज। अगर मैं लेबर और कृषि करेस्पांडेंट नहीं रखूँगा तो 75 प्रतिशत पापुलेशन में मेरा इंटरेस्ट नहीं है। जब दो तीन हजार लोग मर जाएँगे तो कोई एक रिपोर्ट लगा देंगे।

जब ये बीट खत्म हो गई तो उसमें एक्सपर्टाइज नालेज खत्म हो गई। हमें लोग पूछते हैं कि हमें एसाइनमेंट दिया है कोल्हापुर में चप्पल इंडस्ट्री में कुछ हो गया है। आप कुछ कह सकते हैं। पाँच मिनट फोन पर बात करते हैं और वह पाँच मिनट की बातचीत न्यूजपेपर में खबर बन जाती है। यह कहीं से सही नहीं है। 75 प्रतिशत जनसंख्या इससे प्रभावित होती है। लेकिन पाँच साल का मैं आपको औसत बता रहा हूँ कि 0.67 प्रतिशत अखबार के फ्रंट पेज पर और 0.82 चैनल के प्राइम टाइम में 70 प्रतिशत जनसंख्या की खबर है। यही तस्वीर है। हम डेटा को कवर नहीं करते

हैं। कारण डेटा एनलाइज करने का कंपीटेंसी हमारे पास नहीं है। मैं पत्रकार पर आरोप नहीं लगा रहा। अगर अखबार मालिक या प्रबंधन को इसमें इंटरेस्ट नहीं है, कि ये कोई बड़ा मुद्दा नहीं है, कि इसको सही से कवर करना है। तो वह एक्सपर्टाइज कैसे बनेगा। जब आप स्पोर्ट कवर करेंगे तो मैच तक पत्रकार भेजोगे न। लेकिन जब आप अकाल कवर करेंगे तो उसको भेजेंगे जो अकाल के बारे में कुछ नहीं जानता है। वो जाएगा। कलेक्टर से पूछेगा। एक बोगस किसान का इंटरव्यू लेगा। उसका फोटो लगाएगा। अखबार में आकाश की तरफ देखते हुए हाथ उठाकर दीन हीन की तरह ऊपर देखते हुए। आप तो उसकी दरिद्रता को दिखा रहे हैं। ऐसी स्थिति गलत है। अभी कोई एडिटर कृषि संकट के बारे में बात नहीं करना चाहता है। उसको यह पता ही नहीं है कि किसान कौन है। आपके नीति आयोग में एक साहब बैठे हैं। उनका नाम है अरविंद पनगढ़िया। उनको ये नहीं पता कि किसान कौन है। उनका दोस्त जगदीश भगवती और अरविंद पनगढ़िया ने मिलकर एक किताब लिखी है। जिसमें कहा है कि भारत में 53 प्रतिशत किसान हैं। किसान की आत्महत्या कम हो गई है। वह नहीं जानता कि किसान कौन है। क्योंकि उसके पास नालेज नहीं है। सेंशस नहीं पढ़ता है। उसकी किताब में ये लिखा है कि अदर सोशायटी की अपेक्षा किसान की आत्महत्या का अनुपात कम है। मैंने उनकी किताब को पढ़कर जवाब भी दिया है कि किसान कौन है। 53 प्रतिशत किसान, ये गलत है। मैंने कहा 53 प्रतिशत इंगेज इन एग्रीकल्चर सेक्टर। उसमें फिशरी, फारेस्ट्री, एनिमल हस्बेंड्री फार्मिंग भी आती है।

किसान कौन है। किसान का प्रतिशत क्या है। आज हम इस पर चर्चा करते हैं। क्या फर्क पड़ता है, 53 प्रतिशत है या 5 प्रतिशत। बहुत फर्क पड़ता है, ये राष्ट्रीय त्रासदी है। किसानों की संख्या बहुत तेजी से गिर रही है।

अब मैं बताता हूँ कि किसान कौन है और पनगढ़िया क्यों नहीं जानते हैं। सेंशस में परिभाषा है किसान कौन है, सेंशस विभाजित करता है वर्कर्स और नानवर्कर्स। और वर्कर्स को विभाजित करते हैं मेन वर्कर्स और मार्जिनल वर्कर्स। मेन वर्कर्स ऐसा आदमी और औरत होते हैं जो एक साल में उस पेशा में 180 दिन रहता है। मतलब वो 180 दिन कृषि कार्य से जुड़ा हुआ है। सेंशस में इसीलिए यह व्यवस्था है नहीं तो इस देश में बड़े बड़े कारपोरेट घराना हैं, जिसके पास अंगूर का बाग है। साल में एक बार घूमने जाता है और देखकर आ जाता है और कहेगा कि मैं भी किसान हूँ। अमिताभ बच्चन भी कहते हैं कि मैं भी किसान हूँ। उत्तरप्रदेश के बाराबंकी में तहसीलदार को दस्तावेज दिखाया कि मैं भी खेती करता हूँ। मेरे पास भी एग्रीकल्चर लैंड है। इसी बेस पर महाराष्ट्र में भी एग्रीकल्चर लैंड की माँग करता है। जिस देश में अमिताभ बच्चन को किसान स्टेट्स दे सकते हैं, कोई एक सही परिभाषा तो होना चाहिए कि किसान कौन है। कोई ये सिर्फ किसानी के लिए ही नहीं अदर पेशा में भी मेन वर्कर के लिए 180 दिन ही होगा। अगर 180 दिन से कम काम करेगा तो उसको मार्जिनल कल्टीवेटर कहेंगे। 3 से 6 महीना तक काम करेगा तो वो मार्जिनल कल्टीवेटर ही होगा। 180 दिन की परिभाषा लेंगे तो कितने लोग भारत में हैं जो किसान कहलाएँगे। आठ प्रतिशत से कम, 98 मिलियन, 2011 के सेंशस में है। अगर हम मार्जिनल किसान को भी जोड़ देंगे तो 10 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होंगे। अगर सभी को मार्जिनल, वर्कर, लेबर, कल्टीवेटर, तब भी 24 प्रतिशत ही होगा। मैं आपको इसलिए कम्युनीकेट कर रहा हूँ कि सभी को इसके बारे में अवेयरनेश होना चाहिए। ये मीडिया आपको कम्युनीकेट नहीं करता है। पनगढ़िया कहते हैं कि 53 प्रतिशत किसान हैं। लेकिन मैं उनको कहता हूँ कि 53 प्रतिशत किसान नहीं हैं। 53 प्रतिशत निर्भर हैं कृषि क्षेत्र पर न कि किसान हैं। तो मैं कैसे

समझाऊँ एवरीबडी इन बालीवुड नाट ए एक्टर। एक्टर तो सबसे छोटी संख्या है बालीवुड में। उसमें कैमरामैन है, लाइट मैन, चायवाला है और लोग होते होंगे। जैसे एजुकेशन सेक्टर बहुत बड़ा है। उसमें स्टूडेंट एक चैप्टर, टीचर दूसरा चैप्टर है और कर्मचारी भी हैं। इसका मतलब हम नहीं कह सकते हैं कि उसमें 53 प्रतिशत या 100 प्रतिशत स्टूडेंट हैं। उसमें हम ये कहेंगे कि स्टूडेंट एजूकेशन सेक्टर का एक पार्ट है, न कि पूरा सेक्टर स्टूडेंट को रिप्रजेंट करता है। वैसे भी 53 डिपेंडेंट आन एग्रीकल्चर सेक्टर उसमें सभी किसान नहीं होगा। लेकिन उन पर 53 प्रतिशत का जीवन चलता है।

“ देश में खेतीबाड़ी का 60 प्रतिशत से ज्यादा काम महिलाएँ करती हैं। अभी उनका काम और बढ़ गया है। क्योंकि गाँव से युवाओं का पलायन हो रहा है। ऐसे में महिलाएँ खेती से लेकर पशुपालन तक का काम खुद करती हैं। इन सबके बाद भी उनकी जिन्दगी अनिश्चितता की स्थिति से गुजर रही है। लेकिन मीडिया में आम लोगों से मिलने की, बात करने की संस्कृति अब नहीं है।

ये उनको कौन समझाएगा। मैं आपको ये भी बता रहा हूँ कि किसानों की जनसंख्या लगातार गिर रही है। आप 1991, 2001 और 2011 का सेंशस देख लीजिए। 1991 से 2001 के बीच में फूड कल्टीवेटर की जनसंख्या 72 लाख कम हो गई। सन 2001 से 2011 की जनगणना में 77 लाख कम हो गई।

इसका मतलब 20 साल के अंदर आपके किसान की जनसंख्या 150 लाख कम हो गई। इसका मतलब आप हर दिन 2000 किसान खो रहे हैं। कहाँ जा रहे हैं लोग? आपको दिखाता हूँ। एक तो माइग्रेशन पर जा रहे हैं। उसी सेंशस में आप देख सकते हैं। सेंशस में एक कालम है जिसमें एग्रीकल्चर सेक्टर का डिटेल है। अलग-अलग सबका डिटेल है। लेकिन एग्रीकल्चर सेक्टर में दिखता है किसानों की संख्या घट रही है। जबकि खेत मजदूर की संख्या बढ़ रही है। इसका मतलब है लाखों किसान की खेती गई, जमीन गई। खेत मजदूर तक गिर गया। हमारा अपना राज्य आंध्र प्रदेश है। उस समय जो सेंशस किया आंध्र प्रदेश और तेलंगाना एक ही था। सन 2001 से 2011 सेंसस में आंध्र प्रदेश में किसानों की संख्या 13 लाख गिर गई। खेत मजदूर की जनसंख्या 34 लाख बढ़ गई। इसका मतलब है किसान ही परेशान नहीं है, और लोग भी परेशान हैं। आप लोग ने किसानों की आत्महत्या के बारे में पढ़ा है। लेकिन मिस्त्री ग्रामीण इलाकों में रहते हैं, भूखों मर रहे हैं। क्योंकि औसत मिस्त्री की इनकम 70 प्रतिशत काइंड में मिलती है। समझ लो आप लोग किसान हो। मैं मिस्त्री हूँ। 20 परसेंट पेमेंट कैस में मिलता है। बाकी चावल, गेहूँ, टमाटर ऐसा मैं अपना घर चलाता हूँ। अगर आप कृषि संकट में दिवालिया हो गए तो मैं तो भूखे मरने वाला हूँ। अगर किसान दिवालिया होता है तो जुलाहा प्रभावित होता है। वह भूखा मरता है। इस देश में कोई गिनती की है कितना जुलाहा आत्महत्या किया है। आप पोच्चमपल्ली साड़ी के बारे में जानते हैं। वहाँ पिछले दस साल में 200 से अधिक जुलाहा ने आत्महत्या किया है। लोग समझते हैं कि किसानों का एक ही इश्यू है। वह है लोन वेवर। जिसका एक ही इश्यू नहीं है, दो इश्यू हैं, दूसरा मानसून का। पेपर के अनुसार पहले समझ लीजिए जो देश में उधार से चलता है वह अकाल नहीं है। मैंने कहा वह जल संकट है। अगर आपको दस अच्छा मानसून मिलेगा तब भी आपका जल संकट घटेगा

नहीं। अभी देखो दक्षिण भारत में कावेरी का दंगा चल रहा है। लेकिन मैं कहना चाहूँगा कि कावेरी से आपको कोई सल्यूशन नहीं आने वाला है। इसलिए कि वहाँ आप 60 प्रतिशत से अधिक सिंचाई का पानी भूमिगत जल से लेते हैं, नदी से नहीं। दूसरा जब हम ड्राउट शब्द का इस्तेमाल करते हैं, यह मिसलीडिंग शब्द है। अखबार में चैनल में जब ड्राउट; सुखाड़ कहते हैं तो उसका मतलब है बारिश फेल हो गई है। ये ड्राउट की एक शक्ल है। आपका पीने का 4/5 पानी आ रहा है भूमिगत जलस्रोत से, नदी से नहीं। अभी 20 साल से ज्यादा देश में चल रहा है हाइड्रोलोजिकल ड्राउट के बारे में। आपका भूमिगत जलस्रोत भी काफी नीचे गिर गया है। ये सब कंबाइन होकर एग्रीकल्चरल ड्राउट हो गया। उसमें हमको देखना है कि कैसे पानी का उपयोग किया जाए।

अभी महाराष्ट्र में आरटीआई किया शहर और ग्रामीण में क्या फर्क है। टाइम्स आफ इंडिया ने यह आरटीआई किया था। उसमें जवाब भी मिला। महाराष्ट्र के तीन बड़े शहर को 400 फीसदी से ज्यादा पानी मिलता है गाँव की अपेक्षा, जहाँ से पानी आता है। देखिए मैं मुंबई के बांद्रा में रहता हूँ, प्रिविलेज एरिया है। 24 घंटे पानी मिलता है। मुंबई का पानी पूरी तरह से पाँच लेक से आता है, वो सब आदिवासी इलाका है। मुझे 24 घंटे पानी मिलता है। लेकिन उनके एक भी घर में पानी का पाइप नहीं है, लेकिन पानी वहीं से आता है। पानी उनका है, लाभ मुझे है। मुंबई में अभी, बोरीवली, गोरेगाँव में नए निर्माण हुए हैं। 30 मंजिल, 40 मंजिल के मकान बने हैं। जिसमें हरेक फ्लोर पर स्वीमिंग पूल है। एप्रूव्ड भी हो गया। मैं बोरीवली में गया। बिल्डर का इंटरव्यू करने नहीं। मैंने मजदूरों का इंटरव्यू किया। पूछा कहाँ से आए हैं। बोला, गाँव से। गाँव से क्यों आया है। बोला, गाँव में पानी नहीं होने के कारण खेती नहीं हो पाती है। वे गाँव से आए हैं, पानी नहीं होने के कारण, क्योंकि उनकी खेती नहीं होती है। लेकिन शहर आए हैं हमारा स्वीमिंग पूल बनाने।

साहब, हम सब सेतकड़ी हैं। मराठी में किसान को सेतकड़ी कहते हैं? किसान और खेत मजदूर होकर आप स्वीमिंग पूल निर्माण में क्या कर रहे? सर, गाँव में पानी नहीं है। क्या खेती करूँ! यह पिछले 25 साल में बनाई गई पालिसी का नतीजा है।

एक और नई बात बताता हूँ। हमारे पास नाबार्ड नाम की एक महान संस्था है। इसका निर्माण 1982 में हुआ था। इसकी स्थापना नियम आप पढ़िए। इसमें खेती, किसानी, छोटे किसान को बढ़ावा देने संबंधी सारी बातें लिखी गई हैं। सन 2016 का महाराष्ट्र का नाबार्ड कृषि पोटेंशियल क्रेडिट प्लान देखिए। उसमें 53 प्रतिशत बजट मुंबई शहर के लिए है। आप सोच सकते हैं कि मुंबई में कितनी खेती चल रही है। मुंबई में कान्ट्रैक्ट फार्मिंग नहीं, कांट्रैक्ट आफ फार्मिंग चल रहा। मैंने पढ़कर चेक किया। शेड्यूल सरकारी बैंक का पैसा 49 प्रतिशत के करीब दो शहरों में; मुंबई और पुणे को दिया गया। कहाँ बाँटा गया यह पैसा, यह छुपा नहीं है। अर्बन और मैट्रो ब्रांच। अर्थात कनाट प्लेस की तरह की ब्रांचों में या फिर ग्रेटर कैलाश के माल में जो ब्रांच होगी। अब आप खुद सोच सकते हैं कि इस तरह की जगह पर कितने किसान पहुँचते हैं? और यह भी है कि लोन का साइज देख लीजिए। आप इसके लिए पिछले 10 साल का आरबीआई का डेटा देख सकते हैं। यदि लोन 50 हजार रुपये से कम है तो इसका मतलब यह है कि जिसने लिया वह छोटा किसान है। यदि 2 लाख से कम है तो वह मझोला किसान है। और यह केटेगरी बढ़ती जाती है। लेकिन 2 लाख से नीचे जो किसान लोन लेते हैं, वह पिछले 15 साल से कोलैप्स हो गया है। इसका मतलब छोटे किसान को वह लोन नहीं मिल रहा है। सवाल यह है कि वह किसको मिल रहा है? आप जानते हैं कि आज वहाँ लोन 1 करोड़ से ऊपर और 10 करोड़ से ऊपर का रहा है। अब

आप खुद सोचिए कि 10 करोड़ का लोन खेती में कितने किसानों को मिलता है? मुझे दो नाम पता हैं। एक का नाम मुकेश है और दूसरा अनिल है। आरबीआई के डेटा में यह प्रमाण है कि मैट्रो ब्रांच में इस तरह के लोन दिए गए हैं।

जब नाबार्ड अपना 53 प्रतिशत मैट्रो ब्रांच में दे रहा है तब इसका निष्कर्ष एक है - वी हैव सिफ्टेड एग्रीकल्चर क्रेडिट फ्राम द फारमर टू एग्रीविजेनेस। साथ ही हम खेती करने वाले को भी व्यापार में शिफ्ट कर रहे हैं। इस कारण से लोन का सबसे बड़ा लाभार्थी रिलायंस फ्रेस, गोदरेज नेचुरल मोनसेंटो आदि। यहाँ पूरी तरह से रिसोर्स का डायवर्जन हो रहा है। यह 1997 के आखिरी में शुरू हुआ है। 2001-02 से आगे ही बढ़ रहा है।

दूसरा, पानी के कारण पलायन, गाँव से नगर, कृषि से उद्योग। लाइवलीहुड से लाइफस्टाइल अर्थात खेती से स्वीमिंग पूल। पिछले 20 सालों में पानी की समस्या के कारण यह सब बढ़ा है। इसको सूखे का नतीजा बताना, ईश्वर पर आरोप लगाना उचित नहीं। इसमें कोई दो राय नहीं कि सूखा बढ़ा है। लेकिन वह जानवरों को ज्यादा प्रभावित करता है। किसान तो अन्य कारणों से अधिक परेशान हैं। हर नदी का पानी का स्तर गिर रहा है। इस पर मीडिया में कभी बहस नहीं होती। उसका कारण यह है कि इस समस्या के बारे में मीडिया में कोई समझ नहीं है। अभी आप किसानों की आत्महत्या का मुद्दा देखिए। हर राज्य में अलग-अलग आँकड़े हैं। विभिन्न माध्यम, एक ही राज्य के अलग-अलग आँकड़े देते हैं। मान लीजिए 3 स्रोत से यह आँकड़ा आया तो उसमें नेशनल क्राइम रिपोर्ट ब्यूरो का डेटा जरूर विश्वसनीय मान सकते हैं। देश में जितनी भी घटनाएँ होती हैं उसका आँकड़ा यहाँ मिलता है। छोटे से छोटे थाने का भी आँकड़ा जिले और राज्य से होते हुए नेशनल क्राइम रिपोर्ट ब्यूरो तक पहुँचता है। लेकिन 5 या 6 साल के अंदर राजनीतिक दबाव बहुत बढ़ गया है। इस कारण से आने वाले आँकड़े बहुत असंतुलित हो गए हैं।

इसका मैं एक उदाहरण देता हूँ। 2011 से 6 राज्यों ने यह कह दिया है कि हमारे राज्यों में किसानों की आत्महत्या बिल्कुल नहीं हो रही है। जिस राज्य में वार्षिक औसत 1560 (छत्तीसगढ़) था, वह 4 साल में 0 हो गया। इसे सिर्फ ममता दीदी ने देखा। पश्चिम बंगाल में 0 हो गया। फिर 2014 में बारह राज्य ओर 6 केन्द्र शासित राज्यों में भी इसे 0 दिखाया। इसका मतलब यह है कि पूरे देश में किसानों के लिए कोई समस्या नहीं है। औसत आत्महत्याएँ भी रुक गई हैं, जो अन्य कारणों से भी रुक गई हैं। इससे 2014 में पूरी मैथोडालाजी यानी सिद्धांत ही बदल गया।

मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ कि सन 2012 का एनसीआरबी का डेटा तो फिर भी विश्वसनीय है। फिर भी उसमें बहुत सारी गलतियाँ हैं। सामाजिक गलतियाँ उदाहरण के लिए महिला किसान को हम किसान ही नहीं मानते हैं। इसलिए पंजाब और हरियाणा का आँकड़ा देखिए, स्त्री किसान के आत्महत्या का मामला ही नहीं मिलेगा। क्योंकि हम मानते ही नहीं कि स्त्रियाँ भी किसान होती हैं। जबकि स्त्रियों की आत्महत्या का आँकड़ा इन राज्यों में काफी ज्यादा है। व्यावहारिक तौर पर आत्महत्या करने वाली महिलाओं में भी काफी महिलाएँ किसान हैं।

देश में खेतीबाड़ी का 60 प्रतिशत से ज्यादा काम महिलाएँ करती हैं। अभी उनका काम और बढ़ गया है। क्योंकि गाँव से युवाओं का पलायन हो रहा है। उसमें ज्यादातर पुरुष हैं। ऐसे में महिलाएँ खेती से लेकर पशुपालन तक का काम खुद करती हैं। वही बच्चे को लेकर स्कूल जा रही हैं, फीस भर रही हैं। वही साहूकार से बात कर रही हैं। वही पड़ोसी की समस्याओं से जूझ रही हैं। इन सबके बाद भी उनकी जिन्दगी अनिश्चितता की स्थिति से गुजर रही है। लेकिन मीडिया में आम लोगों से मिलने की, बात करने की संस्कृति अब नहीं है। इसलिए उसकी समस्याओं को कोई

प्रस्तुत नहीं कर पा रहा है।

कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में 15-20 स्कूल की लड़कियों ने आत्महत्या की। उस आत्महत्या को सरकार ने विद्यार्थी आत्महत्या के तौर पर लिख लिया। जब हम लोगों ने समस्या की जानकारी निकाली तो पता चला कि उसमें 6-7 लड़कियाँ पढ़ने में बहुत अच्छी थीं। उनका आत्महत्या करना इस कारण से नहीं हुआ कि वह परीक्षा में फेल हुई थीं। प्रश्न यह उठता है कि फिर उन्होंने आत्महत्या क्यों की? जब वहाँ कृषि संकट शुरू हुआ, शिक्षा का निजीकरण तेजी से बढ़ गया, ऐसे में लड़कियों को पढ़ाने के लिए उनके अभिभावक के पास पैसा नहीं है। एक लड़का और एक लड़की पढ़ रहे हैं तो अभिभावक अभाव में लड़की को पढ़ाई छुड़ाकर घर बैठा देते हैं। यह भी एक प्रकार की कृषि आत्महत्या है। जबकि सरकार इसे नहीं मानती है। सन 2011-12 के बाद इस प्रकार के मामले बढ़े हैं। इसका एक उदाहरण और है। सन 2014 का आँकड़ा जो सन 2015 में प्रकाशित है, आधे से ज्यादा गिर गया। हमें यह देख कर बहुत अच्छा लगा। लेकिन जब वार्षिक आँकड़ा प्रस्तुत हुआ तो उसमें देखा गया कि स्त्री, पुरुष, किसान के साथ एक और कालम बना हुआ था - 'अन्य'। एक उदाहरण कर्नाटक का है। आत्महत्या तो 36 प्रतिशत घट गई है लेकिन अतिरिक्त कालम में 245 प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। जिन पाँच राज्यों में अधिकतम आत्महत्या के मामले थे, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना भी उसमें था, का सुसाइड 2/3 होता है। उसका रेशियो 50 प्रतिशत घट गया है और अतिरिक्त कालम 132 प्रतिशत बढ़ गया है। आपके डाटा की विश्वसनीयता क्या हुई? मैं जो कह रहा हूँ उसमें आनरेबल पीपुल है, वो आपको ठग नहीं रहे। ये इन राज्यों के थानों से मिला था। सबसे ज्यादा शुरू हुआ विलासराव देशमुख के समय में महाराष्ट्र में। मैं रोज इसके बारे में लिखता था, तो विलासराव जी बहुत गुस्सा हो गए, उसकी मीटिंग हुई और उसमें एक नई कैटेगरी बना दी गई। फारमर्स सुसाइड का एक नया कालम आ गया। फारमर्स रिलेटिव सुसाइड। यह कार्य मूल आत्महत्या की संख्या कम करने के लिए किया गया। मैंने विलासराव जी से पूछा कि आप इसमें किसानों के दोस्तों की आत्महत्या नाम से एक और कालम क्यों नहीं जोड़ देते?

उस साल संसद सत्र में महाराष्ट्र में किसानों की आत्महत्या, जब शरद पवार कृषि मंत्री थे, यहीं से किसानों की आत्महत्या की संख्या में छेड़छाड़ की शुरुआत हुई। इसके बाद इस प्रक्रिया को हर राज्य ने अपना लिया। सही ये है कि टोटल आत्महत्या बढ़ रही है, और इनके आँकड़ों में संख्या घट रही है। सन 2014-15 एक नया आँकड़ा सामने आया, बटाईदार किसान। इसमें एक बड़ी समस्या है, 99 प्रतिशत बटाईदार किसान का कोई लिखित समझौता नहीं होता। यह तो पूरी तरह विश्वास पर आधरित होता है। सरकार ने इस क्षेत्र में अभी तक कोई पहल नहीं की है। उनको लोन मिलना बहुत मुश्किल है। इसी प्रकार खेती में नुकसान होने पर, पैसा जमीन मालिक के नाम से आता है। बटाईदार किसान को कुछ नहीं मिलता है।

आंध्रप्रदेश में जब तूफान आया था, तब ऐसा देखा जा चुका है। इसी प्रकार के किसान सबसे ज्यादा बुरी स्थिति में हैं और आत्महत्या कर रहे हैं। साहूकारों से कर्जा लेने के लिए बाध्य हैं। वहाँ इनको बहुत ज्यादा ब्याज देना पड़ता है। कोई भी सरकारी मशीनरी आत्महत्या के मामले में जब जाँच पड़ताल होती है तो पुलिस सबसे पहले कागज माँगती है। किसान जब कहता है कि हम तो बटाई करते हैं, हमारे पास खेत का कोई कागज नहीं है, तो उसका नाम कृषि मजदूर के कालम में डाल दिया जाता है। एनसीआरबी के डाटा में खेत मजदूर किसानों का आँकड़ा खेती करने वाले किसानों से ज्यादा है। यह डाटा डराने वाले हैं। मैं आप सबसे गुजारिश कर रहा हूँ, खासकर राजनीतिक लोगों से कि कम से कम 10 दिन का

संसद का विशेष सत्र कृषि समस्या पर बुलाया जाए। उनके पास अन्य मामलों पर बहस करने के लिए काफी समय है। क्या वे देश के किसानों के लिए दस दिन दे सकते हैं? ये वे किसान हैं जो पूरे देश को जीवन देने का काम करते हैं, आप उनको दस दिन दीजिए। उसमें आप दो दिन बात करिए, स्वामीनाथन कमेटी की रिपोर्ट पर। मैं यह मानता हूँ कि उसकी पहली माँग सही है। मैं उसका समर्थन करता हूँ। मैं ये मानता हूँ कि दो दिन उन किसानों को बुलाया जाए जो पीड़ित हैं। वो खुद आएँ और अपनी समस्या बताएँ। दो दिन क्रेडिट सिस्टम और बाजार पर बात होनी चाहिए। बाजार

> **“ यह मीडिया के लिए चिंता का विषय है। कोई कृषि को कवर नहीं करता है। कोई मजदूर को कवर नहीं करता है। सभी बालीवुड को ज्यादा कवर करता है। तो फिर इस समस्या का समाधान कैसे होगा। कृषि के बारे में या कोई दूसरे के बारे में कवर अच्छी तरह से करना चाहते हैं, तो पहले मीडिया में लोकतंत्र के लिए लड़ें।**

को जानने, वहाँ तक पहुँचने, मीडिया को संचालित करने, और एमएसपी पर बात होनी चाहिए।

अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं किसानों से संबंधित। दस दिन आप दीजिए। शायद समाधान निकल जाए। यह इतिहास में किसानों का सबसे बुरा दौर है। हमें अपनी संसद पर विश्वास है। उन्हें दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस समस्या पर बात करनी चाहिए। यह मेरी माँग है। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो किसान लोग हैं, उनमें काफी महिलाएँ हैं। उनको पट्टे में बराबरी का अधिकार दिया जाए। उनकी समस्या को भी सामने लाना चाहिए। उन्हीं के प्रयास से आपके टेबल पर खाना आता है। ये कौन लोग हैं जो अच्छी फसलें पैदा करते है, हमें खाना उपलब्ध करवाते हैं। उसमें ज्यादातर महिलाएँ हैं, इस मुद्दे पर भी हमें बात करनी चाहिए।

आँकड़े इकट्ठे करने के तरीके पर भी बात होनी चाहिए। दस साल पहले मनमोहन सरकार ने अनेक जगहों से सबसे बढ़िया डाक्टर की टीम यवतमाल भेजी थी। उन्होंने बहुत अच्छा सर्वे किया। किसानों से बहुत सवाल पूछे। एक दिन उनके साथ मैं भी था। उसी समय छठा वेतन आयोग आया था। जो डाक्टर गए थे, उनमें योग्यता बहुत है। लेकिन सामाजिक समझ बिल्कुल नहीं है। खेती किसानी के बारे में वे कुछ नहीं जानते हैं। उदाहरण के लिए वे सवाल पूछ रहे थे और उसे लिख रहे थे। यवतमाल के गाँव में एक बूढ़ा किसान खरा हो गया और उनसे पूछा कि साहेब आप लोग इतना बड़ा काम किया हमारे लिए, दो दिन से हमारे गाँव में हैं, हमारे लिए इतना सर्वे किया, सवाल पूछा और सुझाव भी दिया, पारिवारिक और शराब पीने संबंधी समस्याओं पर भी आपने बात की। ”

हमें जागरूक करने का प्रयास किया। इसके लिए हम आपके आभारी हैं। अभी हमसे एक सवाल और पूछ लीजिए कि जो किसान आपके मेज पर खाना रखते हैं, उनके बच्चे क्यों भूखे रहते हैं। उसका सवाल सुनकर चारों तरफ खामोशी छा गई। एक भी डाक्टर कुछ भी नहीं बोल पाया। उसके टीम लीडर ने कहा कि हम लोग क्यों चुप हैं, इसका सवाल सही है, मेरे पास सभी सवालों का जवाब है। इसी क्रम में हम लोग एक गाँव में पहुँचे, जहाँ एक किसान शराब पीकर आ गया। वहाँ सरकार ने एक कार्यक्रम किया था। बताया गया था कि हम लोग इतनी गाय, इतनी भैंस बाँटेंगे।

मैंने सरकार से यह अपील की थी कि आप यह काम मत करना। आप नहीं जानते कि कौन-सा किसान पशु पाल सकता है, और कौन नहीं, आपने एक जर्सी गाय एक किसान को दे दी जो उसके पूरे परिवार के सदस्यों से भी ज्यादा खाना खाती है! कमलाबाई गुडे को एक भैंस मिली थी। उसे लेकर वह दिनभर अपने गाँव में घूमती रही कि इसे किसी तरह बेच देना है। कोई खरीदार नहीं मिला। मैंने पूछा, कमला जी ये भैंस आप क्यों बेच रही हो? प्रधानमंत्री ने दी है आपको! उन्होंने कहा कि साहेब ये भैंस नहीं, भूत है। ये जितना खाती है, उतना मेरा पूरा परिवार नहीं खाता है। इसको मैं कैसे पालूँ! उन्होंने मुफ्त में अपने पड़ोसी को दे दी। दो-तीन दिन बाद उसने वापस कर दी। शराब पिए हुए किसान गाते-गाते मेरे पास आया। उसके हाथ में एक भैंस थी। वह मेरे पास आया और बोला - साहब यह मेरी भैंस आप ले लो। मैंने कहा, भैया मैं तो पत्रकार हूँ। मैं भैंस लेकर क्या करूँगा? तो वह बोला - साहब यह कोई साधारण भैंस नहीं है। यह प्रधानमंत्री की भैंस है। तो मैं बोला, प्रधानमंत्री की भैंस है तो क्या हुआ, मैं तो पत्रकार हूँ, वह बोला, अच्छा आप साहब पत्रकार हैं, तो नोट बुक निकालो। छठा वेतन आयोग आ गया है न साहब? मैं बोला, हाँ आ गया। तो लिखो मेरी माँग यह है कि जब अगला वेतन आयोग आएगा तो बाबू लोग को वेतन वृद्धि मत देना, ऐसी एक भैंस दे देना। मुझको वेतन वृद्धि देना। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि क्यों नहीं कृषि क्षेत्र को लोकसेवा घोषित करना चाहिए, न्यूनतम वेतन के साथ। उस पर भी आप विचार करें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि ग्रामीण भारत में सबसे बड़ा खर्च स्वास्थ्य क्षेत्र पर होता है। छोटे-छोटे आपरेशन जो जरूरी भी नहीं हैं, लोग उस पर लाखों खर्च करते हैं, निजी अस्पतालों में। लोगों में जागरूकता नहीं है। सरकारी अस्पताल बुरी स्थिति में हैं। क्यों न हम उन लोगों के लिए सुविधा उपलब्ध कराएँ, जो देश को अन्न उपलब्ध कराते हैं। मजदूरों को क्यों न सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जाएँ। लेकिन मीडिया में इस तरह की चर्चा कोई नहीं करता है। इसके दो कारण हैं। एक तो उनमें समझदारी नहीं है, दूसरा मीडिया का प्रतिनिधित्व कौन करता है? इस देश के इतिहास में मीडिया मालिक केन्द्रित कभी नहीं हुआ, जो पिछले पंद्रह सालों में हुआ है। आज देश में सबसे बड़ा मीडिया मालिक है मुकेश अंबानी। नेटवर्क 18, आप जो ईटीवी हिन्दी, ईटीवी मलयालम आदि देखते हैं, वह इनाडू टीवी नहीं है। वह सब मुकेश भाई ने खरीद लिया। चार ईटीवी चैनल जो तेलुगु में आता है, वह रामोजी राव का है। बाकी सब मुकेश अंबानी का है। वह बड़ा टाटा स्काई किसका है। टाटा का और स्काई है दुनिया का सबसे बड़ा मीडिया मुगल रूपर्ट मर्डोक का। आप न्यूज पेपर देख लीजिए! हिन्दुस्तान टाइम्स ने कई एडिशन बंद कर दिए। सैकड़ों पत्रकार को काम से निकाल दिया। टेलीग्राफ में 700 पत्रकार को काम से निकाल दिया। पेड न्यूज की घटना के बाद 3000 पत्रकार को काम से निकाल दिया 2010 तक। आजकल कोई पत्रकार संघ नहीं है उन पत्रकारों की रक्षा के लिए क्योंकि पत्रकारों के संघ को खत्म कर दिया। पेड न्यूज को फ्रंट न्यूज पर एक-दो बार मैंने ब्रेक किया। अभी तक एक भी आदमी को सजा नहीं हुई है। सर्वोच्च अदालत में मामला चल रहा है। मीडिया के मालिक को अगर राजस्व नहीं मिलता है खबर से, तो वह खबर नहीं है। तो खेत मजदूर से आपको क्या राजस्व मिलेगा? छोटे किसान को कवर करके आपको क्या राजस्व मिलेगा?

एक फेक न्यूज को कवर किया। उसको खबर बनाया जिससे उसको बढ़िया राजस्व मिलता हैं। मैं संसदीय कमेटी को वहाँ लेकर गया। विभिन्न राजनीतिक दल के सदस्य थे उसमें। 14 राजनीतिक दलों के सदस्य थे। संसदीय समिति ने 400 पेज की रिपोर्ट दी। उसमें एक भी गलत रिपोर्ट नहीं थी। लेकिन किसी समाचार पत्र ने उसको नहीं छापा। केवल हिन्दू ने छापा। मैं उस

समय वहाँ था। संसदीय समिति ने कहा, यह बहुत चिंता की बात है कि इस बीटी स्कैम में कारपोरेट का इस्तेमाल है। इसीलिए किसी समाचार पत्र ने इसको नहीं छापा। मैं इस कृषि संकट को पाँच शब्दों में बताता हूँ। पहला, कारपोरेट ने कृषि को हाइजैक कर लिया है। किसान का जब इन्टरव्यू लेता हूँ तो किसान लोग पूछते हैं कि मुझे किसान क्यों कहते हैं? मेरे पास क्या है? जमीन है बस, मैं तो यहाँ गुलाम हूँ। लोग कहते हैं कि एग्रीकल्चर पर टैक्स लगाओ। अरे, एग्रीकल्चर पर टैक्स है उसे लोग टैक्स नहीं कहते हैं। लेकिन किसान पर टैक्स है। जब आप उत्पाद पर कीमत तय करते हैं तो वह टैक्स है। लेकिन मत कहो कि कृषि पर टैक्स नहीं है। लेकिन जब आप कीमत कंट्रोल करते हैं तो वही टैक्स हुआ। आप कीमत कंट्रोल करो, लेकिन उसके नुकसान की भरपाई किसानों को करो। यह भारत सरकार की जिम्मेवारी है। कारपोरेट घराने ने मीडिया को हाइजैक कर लिया है। यह मीडिया के लिए चिंता का विषय है। कोई कृषि को कवर नहीं करता है। कोई मजदूर को कवर नहीं करता है। सभी बालीवुड को ज्यादा कवर करता है। तो फिर इस समस्या का समाधान कैसे होगा। देखो तो विश्लेषण कैसे करते हैं? किसान आत्महत्या इसलिए करते हैं कि शराब की खपत बहुत बढ़ गई है। किसान लोग बहुत शराब पीते हैं, इसलिए आत्महत्या ज्यादा बढ़ गई है। पत्रकार लोग कम पीते हैं क्या? मैंने कहा देखो यार अगर किसानों की आत्महत्या शराब ज्यादा पीने से हो रही है तो दुनिया में कोई भी पत्रकार नहीं बचेगा। तो मीडिया एक तरह से कृषि संकट में फेल हो गया है। पहला कारण अपने निजी हित और दूसरा उनको कोई इंटरेस्ट नहीं है। ये कर्जदार किसान की बात करते हैं, ब्रिटिश काल में तो पंजाब और मद्रास प्रेसीडेंसी में अँगरेजों ने किसान का साहूकारों से लिया गया कर्ज भी माफ कर दिया था। उस समय राष्ट्रीयकृत बैंकिंग व्यवस्था भी नहीं थी। आज हम जो कर रहे हैं वह बैंकों का पैसा है। ज्यादा से ज्यादा किसान तो साहूकारों से कर्ज लेते हैं, उसको न तो हम देखते हैं, न तो मीडिया देखती है। मैं आपको कह रहा हूँ कृषि के बारे में या कोई दूसरे के बारे में कवर अच्छी तरह से करना चाहते हैं, तो पहले मीडिया में लोकतंत्र के लिए लड़ें। आखिर में इस बारे में कहना चाहता हूँ कि इस देश के लोग इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

(प्रभाष परंपरा न्यास में मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात पत्रकार पी. साईनाथ का स्मारक व्याख्यान, 16 जुलाई 2017)

सप्रे संग्रहालय की वेबसाइट

Website :
www.sapresangrahalaya.com
Email :
sapresangrahalaya@yahoo.com

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल की वेबसाइट में सप्रे संग्रहालय में संग्रहीत प्रचुर संदर्भ सामग्री की सूची, संग्रहालय के प्रकाशनों का संक्षिप्त परिचय, संग्रहालय आने वाले विद्वानों की सम्मतियाँ आदि विवरण सम्मिलित किए गए हैं। इस विपुल संदर्भ सामग्री का लाभ उठाने के इच्छुक शोधकर्त्ता, पत्रकार, लेखक एवं विद्यार्थी वांछित सामग्री की जानकारी सप्रे संग्रहालय की वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं।

बहुआयामी सृजन के अथक यात्री

■ रमेश नैयर

डा. सुशील त्रिवेदी को मित्र के रूप में पाना किसी के भी जीवन की एक बड़ी उपलब्धि होती है। इस मामले में मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ। मेरा अतिरिक्त सौभाग्य यह रहा है कि इनके पिताश्री स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी का भी मुझे कई दशकों तक मार्गदर्शन एवं आत्मीय स्नेह प्राप्त रहा। श्री स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी दिग्गज पत्रकार तथा श्रेष्ठ कवि के रूप में निरंतर याद किए जाते हैं। जब भी छत्तीसगढ़ की पत्रकारिता के इतिहास का उल्लेख होता है, स्वराज्य प्रसाद जी का स्मरण किया जाना आवश्यक हो जाता है।

डा. सुशील त्रिवेदी

डा. सुशील त्रिवेदी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनके एक व्यक्तित्व में न जाने कितनी शख्सियत रची-बसी हैं। जनसंपर्क विशेषज्ञ, सुलझे हुए परिपक्व प्रशासक, संविधानविद, विद्वान लेखक तथा अनुवादक के रूप में उनकी विशिष्ट पहचान है। डा. त्रिवेदी प्रतिभा के धनी तो हैं ही, अनुशासित अध्यवसाय से उन्होंने अपनी मेधा को भरपूर निखारा है। परिणामतः सृजन की विविध विधाओं में डा. त्रिवेदी की दो दर्जन से अधिक मौलिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। लगभग उतनी ही कृतियों का उन्होंने अनुवाद एवं संपादन भी किया है। उनके सृजन क्षेत्र की इस विविधता और विस्तार से सहसा पंडित माधवराव सप्रे का स्मरण हो आता है। सुखद संयोग यह है कि सप्रेजी ने जिस बहुआयामी ऐतिहासिक पत्रिका 'छत्तीसगढ़ मित्र' का संपादन सन 1900 से 1902 के अंत तक छत्तीसगढ़ के दूरस्थ अंचल पेंडरा रोड से किया था, उसे एक शताब्दी से अधिक समय के अंतराल के बाद पुनः सप्रेजी की कर्मभूमि रायपुर से संपादित करने में डा. त्रिवेदी ने निर्णायक भूमिका निभाई। युवा साहित्यकार और प्रकाशक डा. सुधीर शर्मा ने 'छत्तीसगढ़ मित्र' के प्रकाशन को मूर्त रूप दिया।

साहित्य और ज्ञान के संवर्द्धन को समर्पित गैर व्यावसायिक पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन अक्सर घाटे का सौदा होता है। हिंदी पत्रिकाओं की जो विषम स्थिति सप्रे जी के समय में थी, कमोवेश वही अब भी बनी हुई है। इस कटु यथार्थ को समझते-बूझते हुए भी डा. सुशील त्रिवेदी और डा. सुधीर शर्मा 'छत्तीसगढ़ मित्र' के पुनः प्रकाशन का जोखिम उठाने को तत्पर हुए।

उनके इस उपक्रम ने सात वर्ष पूर्ण कर लिए। डा. त्रिवेदी ने वर्तमान में प्रकाशित हो रहे 'छत्तीसगढ़ मित्र' को वही स्वरूप, स्तर और प्रतिष्ठा प्रदान करने का सफल प्रयास किया है जो युग निर्माता संपादक सप्रे जी ने निर्धारित किया था। हिंदी की स्तरीय मौलिक रचनाओं के साथ ही श्रेष्ठ अनूदित कृतियों को भी समाहित किया जाता

है। अन्य भारतीय भाषाओं, विशेषकर मराठी की रचनाओं को सप्रे जी सम्मानपूर्वक प्रकाशित करते थे। उसका मुख्य कारण ये था कि मराठी पर मातृभाषा होने के कारण उनका पूर्ण अधिकार था। हिंदी को जतनपूर्वक उन्होंने सीखा और आत्मसात किया था। स्वाभाविक था कि मराठी की रचनाओं का सप्रेजी प्रायः स्वयं अनुवाद किया करते थे। डा. त्रिवेदी ने 'छत्तीसगढ़ मित्र' के संपादन में सप्रे जी का निष्ठापूर्वक अनुसरण किया। हिंदी पर अच्छा अधिकार होने के साथ ही अध्ययनशील डा. त्रिवेदी ने अँगरेजी पर भी अपनी पकड़ मजबूत की थी। विश्व साहित्य को जानने के लिए उन्होंने अन्य भारतीय लेखकों-संपादकों की भाँति अँगरेजी में प्रकाशित विश्व की प्रमुख भाषाओं की कालजयी रचनाओं के हिंदी अनुवाद को पत्रिका में अपेक्षित स्थान दिया। उत्तम कृतियों की समीक्षाएँ देने की सप्रेजी द्वारा स्थापित परंपरा को नए 'छत्तीसगढ़ मित्र' में स्थान देना जारी रखा।

डा. सुशील त्रिवेदी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के छह वर्षों तक चुनाव आयुक्त का दायित्व भी उन्होंने सँभाला। उनके रचना संसार को देखें और परखें तो स्मरण हो आता है उन पुराने प्रशासनिक अधिकारियों का जिन्होंने साहित्य-संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में समर्पण भाव से महत्वपूर्ण अवदान दिया। इधर कुछ दशकों से वह परंपरा दुर्भाग्यवश विरल होती चली गई है।

डा. त्रिवेदी उन थोड़े से अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा के हस्ताक्षरों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपने सेवा काल में और सेवानिवृत्ति के बाद भी ज्ञान की विविध विधाओं में प्रामाणिक लेखन किया है। अब भी निरंतर करते आ रहे हैं। जीवन के 75वें वर्ष में भी जिस ऊर्जा से परिपूर्ण वह दिखाई देते हैं और जो गतिशीलता उनके पोर-पोर से झलकती है, उससे सहसा यही विश्वास हो जाता है कि अभी उनकी लंबी सृजन यात्रा शेष है। उनके पिताश्री की जीवन यात्रा 90 वर्ष की रही थी। सुशील भाई ने उस दीर्घायु को विरासत में पाया है। इस आधार पर और उनकी वर्तमान सक्रियता के दृष्टिगत सहसा विश्वास किया जा सकता है कि वह शतायु होंगे।

❑❑

लेखकों से अनुरोध

- लेख ईमेल पर ही भेजिए। हाथ की लिखी या स्केन की हुई कापी न भेजें।
- लेख अधिकतम 1000 शब्दों तक का हो। बड़े लेख न भेजें।
- छोटे-छोटे वाक्य लिखें।
- माइक्रो साफ्ट वर्ड में कृतिदेव 010 फोंट का प्रयोग करें।
- पत्रकारिता, जनसंचार और विज्ञान संचार के अलावा अन्य कोई सामग्री इस पत्रिका में नहीं छपती।
- तथ्य और आँकड़े जाँचने के बाद ही लेख भेजिए।
- लेखन-मानदेय का प्रावधान है।

प्रकाशित लेखों पर प्रबुद्ध पाठकों की प्रतिक्रियाओं का स्वागत है। इसी से विमर्श आगे बढ़ेगा।

E-mail - editor.anchalikpatrakar@gmail.com

नई किताब

सरोकारी पत्रकारिता के पहरुए प्रभाष जोशी

■ संत समीर

मुख्य धारा की भारतीय पत्रकारिता में प्रभाष जोशी सर्वाधिक लोकप्रिय संपादक रहे हैं। 'जनसत्ता' को उन्होंने जिस तरह से जमाया और हिंदी पत्रकारिता को जैसी धार दी, उसके चलते वे पत्रकारों के लिए ही नहीं, आम जनता के बीच भी पहचाने हुए नाम बन गए थे। सार्थक समाज परिवर्तन के कामों में लगे लोगों को उनकी मौजूदगी से बल मिलता था। राजनीतिक और सामाजिक दोनों ही मोर्चों पर कई संघर्षों में वे रणनीतिकार की भूमिका में रहे। उनका व्यवहार और उनके सरोकार पत्रकारिता की इस रूढ़ सीमा का अतिक्रमण करते थे कि पत्रकार का धर्म सिर्फ सही सूचना को अवाम तक पहुँचाना है। प्रभाष जी के लिए पत्रकारिता हमेशा एक सामाजिक कर्म, यानी बेहतर समाज निर्माण का साधन रही। हाल ही में आई पुस्तक 'लोक का प्रभाष' प्रभाष जोशी के व्यक्तित्व के उन तमाम पहलुओं को सामने लाती है, जो आज की पत्रकारिता के लिए भी आईना दिखाने का काम करते हैं। यों, इस पुस्तक में प्रभाष जी के जीवन की कुछ बातें और जोड़ी जा सकती थीं, फिर भी इसे उनकी संपूर्ण जीवनी के रूप में देखा जा सकता है। इससे पहले माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय ने प्रभाष जी के देहावसान के बाद उनकी एक छोटी-सी जीवनी (मोनोग्राफ) छापी थी, जो इस समीक्षक ने ही लिखी थी। वह प्रामाणिक जरूर थी, पर बेहद जल्दी में महज पंद्रह दिनों में लिखी गई थी, तो उसे प्रभाष जी का परिचय भर कहा जा सकता है।

'लोक का प्रभाष' लिखने के लिए सामग्री संचयन में रामाशंकर कुशवाहा ने चार साल की मेहनत की है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष और प्रभाष जोशी के बेहद नजदीक रहे रामबहादुर राय और सुरेश शर्मा ने इसका संपादन जिस करीने से किया है, उसने इसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध बना दी है। 328 पृष्ठ की यह पुस्तक प्रभाष जोशी की जीवनी भर नहीं है। यह समय का दिलचस्प बयान भी है। पत्रकारिता और सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के लेखे-जोखे के साथ। पत्रकारिता के अध्येताओं के साथ-साथ यह सामान्य पाठकों के भी पढ़ने लायक एक दिलचस्प किताब बन पड़ी है। जीवनी के अलावा हर किसी के काम में आने लायक जीवन-दर्शन भी देखा जा सकता है इस किताब में। मसलन, रामबहादुर राय की लिखी भूमिका की ये चंद लाइनें पढ़िए ''गैलीलियो के जीवन पर एक नाटक की पुस्तक उनके हाथ लगी, जिसमें थी एक लाइन - 'वह सबसे दूर जाएगा जिसे मालूम नहीं कि कहाँ जा रहा है।' इसे पढ़ते ही प्रभाष जोशी ने एक मंत्र का साक्षात्कार किया जिसे वे बचपन से ही अनजाने में अपने आचरण में बरतते रहे। उसे उन्होंने नया तर्क दिया। नए अर्थ दिए। जो था तो निजी परंतु किसी पर भी उतारा जा सकता था।

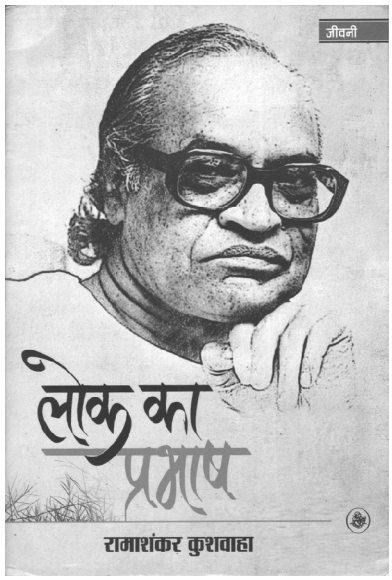

उनका तर्क यह था कि जिसने लक्ष्य निश्चित कर रखा है, वह तो वहीं पहुँचेगा, लेकिन जो अनंत खँगाल रहा है, वह ऐसी जगह पहुँच सकता है जिसका विचार उसने न किया हो। अनंत में गुम हो जाना और अनगिनत संभावनाओं में जीना ही प्रभाष जोशी का दूसरा नाम था। वही उनका जीवन था।''

किताब प्रभाष जी के जन्म स्थान मध्यप्रदेश के एक कस्बे आष्टा से होते हुए दिल्ली तक का सफर कराती है, जिसमें भूगोल के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी परिचय होता चलता है। प्रभाष जी का बचपन ही उनके भविष्य का पता दे रहा था। अंटी, पतंगबाजी, क्रिकेट और सिनेमाप्रेमी बचपन कैसे गाँधीवादी समाजसेवी बनता गया, यह जानना रोचक है। गाँधी और विनोबा का असर था कि प्रभाष जी ने प्रमाणपत्र वाली विद्यालयी पढ़ाई छोड़ दी और ग्रामसेवा के काम में लग गए। सुनवानी महाकाल में शिक्षक की नौकरी की तो विद्यालय को जैसे गाँधीवादी प्रयोगशाला का ही रूप दे दिया। स्थिति यह हो गई कि जहाँ विद्यालय में बच्चों का टोटा हुआ करता था, वहाँ अब उनको बैठाने के लिए जगह ही कम पड़ने लगी। सुनवानी महाकाल ही था, जहाँ रहते हुए प्रभाष जी का परिचय महान संगीत साधक कुमार गंधर्व से हुआ और जो ताउम्र उनके प्रिय बने रहे। सुनवानी छूटा तो प्रभाष जी पत्रकारिता की डगर पर चल पड़े। कविता-कहानी से शुरुआत करने वाले नवयुवक प्रभाष 'नई दुनिया' में छपते-छपते कैसे एक पत्रकार के रूप में ढलते गए, यह पढ़ना रोचक और प्रेरक है। बहुत कम लोग जानते होंगे कि क्रिकेट के महान आलराउंडर कपिल देव को आगे बढ़ाने में प्रभाष जी का बहुत बड़ा योगदान रहा था। इस किताब में कपिल देव से जुड़ी वे सारी बातें और उनके क्रिकेट-प्रेम के बारे में पढ़ना एक अलग किस्म के अनुभव से गुजरना है। प्रभाष जी के दिल्ली पहुँचने और 'जनसत्ता' जैसे अखबार की नींव रखने की पूरी कहानी सिर्फ एक अखबार चलाने भर की कहानी नहीं, बल्कि मालिक और संपादक के बीच के भरोसे का एक अध्याय भी है। प्रभाष जी का रामनाथ गोयनका को लिखा गया वह पत्र भी पाठक पढ़ सकते हैं, जिसमें प्रभाष जी ने एक हिंदी अखबार निकालने की अपनी मंशा जाहिर की थी। सन 1983 में 'जनसत्ता' निकलने के बाद वह अध्याय शुरू होता है, जिसमें प्रभाष जोशी हिंदी पत्रकारिता के शीर्ष पुरुष के रूप में दिखाई देते हैं। यह उनका अलग तेवर है जो उन्हें हमेशा दबे-कुचले और पीड़ित के पक्ष में खड़ा किए रहता है। पुस्तक प्रभाष जी की उन गतिविधियों को सिलसिलेवार ढंग से सामने रखती है, जो हिंदी पत्रकारिता के लिए मील का पत्थर बनती दिखाई देती हैं। 'जनसत्ता' की टीम बनाने का प्रभाष जी का तौर-तरीका आज की पत्रकारिता के लिए भी इस बात का सबक है कि कैसे विभिन्न विचारधाराओं-मान्यताओं के लोगों को साथ लेकर पत्रकारिता एक भरा-पूरा चेहरा गढ़ा जा सकता है। प्रभाष जी ने 'जनसत्ता' के जरिए हिंदी भाषा का जो परिष्कार किया वह सब यह किताब तरतीब से बताती है। यह समझना भी दिलचस्प है कि प्रभाष जी हिंदी को लोकमानस के स्तर पर ले

पुस्तक	:	*लोक का प्रभाष*
लेखक	:	*रामाशंकर कुशवाहा*
संपादक	:	*रामबहादुर राय एवं सुरेश शर्मा*
प्रकाशक	:	*राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली - 110032*
पृष्ठ	:	*328*
मूल्य	:	*₹ 250*

जाने के लिए देशज शब्दों का बेहद खूबसूरत प्रयोग कर रहे थे, पर वे हिंदी व्याकरण में जरा भी ढील देने के हामी नहीं थे। भाषा के सरलीकरण के नाम पर व्याकरण को खत्म करने की मौजूदा कोशिशों को देखते हुए हिंदी वालों को इससे सबक लेने की जरूरत है। अच्छा होता कि भाषा-परिष्कार पर प्रभाष जी के कामों पर यह किताब कुछ और बात करती।

वे सभी महत्वपूर्ण घटनाएँ इस पुस्तक में पढ़ी जा सकती हैं, जो जनसत्ता और प्रभाष जोशी को पत्रकारिता की एक अलग जमात में खड़ा करती हैं। बात अकाली आंदोलन की हो, विपक्ष के लिए भरोसेमंद उम्मीदों की हो, रिलायंस के खिलाफ मोर्चा खोलने और भ्रष्टाचार के खिलाफ झंडा उठाने की हो, प्रभाष जी एक अडिग योद्धा के रूप में नजर आते हैं। अयोध्या आंदोलन पर उनका तेवर आज भी लोग नहीं भूले हैं। अच्छी बात है कि इस पुस्तक में इस पूरे प्रकरण पर एक विस्तृत अध्याय है। तेरहवाँ अध्याय प्रभाष जी के सामाजिक सरोकारों पर महत्वपूर्ण जानकारी देता है। सूचना के अधिकार से लेकर पेड न्यूज के मसले तक प्रभाष जी के अभियानों में, पत्रकार के रूप में समाज के प्रति किसी व्यक्ति की जिम्मेदारियों की परिभाषाएँ और दिशा-संकेत देखे जा सकते हैं। यों, एक महत्वपूर्ण पुस्तक होते हुए भी यह कहने की गुंजाइश रह ही गई है कि प्रभाष जी का लोकमुखी दायरा जितना व्यापक रहा है, लेखक उस पूरे के कई महत्वपूर्ण हिस्से समेट पाने से चूक गए हैं। मसलन, सन 1989 में अंतरराष्ट्रीय गणित परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो. बनवारीलाल शर्मा की अगुआई में बहुराष्ट्रीय कंपनियों और वैश्वीकरण के खिलाफ इलाहाबाद से जो गाँधीवादी आंदोलन शुरू हुआ, उसमें प्रभाष जी की सक्रियता निरंतर रही। वे वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन के एक प्रमुख रणनीतिकार थे। इस तरह के कई छोटे-बड़े जनांदोलनों से प्रभाष जी का गहरा लगाव रहा। उनके इस पक्ष पर और खोजबीन किए जाने की जरूरत थी।

बहरहाल, प्रभाष जोशी को जो भी जानना-समझना चाहेगा, उसे इस किताब से होकर गुजरना ही पड़ेगा। किसी उपन्यास की तरह लिखावट की रोचक शैली इसे और पठनीय एवं विशिष्ट बनाती है।

(Email - santsameer@gmail.com)

विक्रम सिसोदिया कामन वेल्थ गेम्स में चीफ डी मिशन होंगे

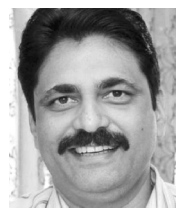

भारतीय ओलंपिक संघ ने विक्रम सिंह सिसोदिया को 21वें कामन वेल्थ गेम्स के लिए चीफ डी मिशन बनाया है।

भारतीय ओलंपिक संघ के कार्यकारिणी सदस्य और छत्तीसगढ़ ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष एवं टेनिस संघ के अध्यक्ष विक्रम सिंह सिसोदिया इससे पहले जूनियर इंडियन भारतीय डेविस कप टीम के मैनेजर भी रह चुके हैं।

कामन वेल्थ गेम्स का आयोजन आस्ट्रेलिया में 4 से 15 अप्रैल तक होना है। कामन वेल्थ गेम्स में सत्तर से अधिक देशों के खिलाड़ी शामिल होंगे। इस दौरान 18 खेलों के 275 इवेंट होंगे।

भारतीय ओलंपिक संघ के अध्यक्ष एन. रामचंद्रन और महासचिव राजीव मेहता ने सिसोदिया को नयी जवाबदारी मिलने पर बधाई दी है। ❑❑

'आंचलिक पत्रकार' : 36 वर्ष की विवरणी

(सितंबर 1981 से अगस्त 2017 तक)

विषय-विशेष पर केन्द्रित किसी गैर-वाणिज्यिक पत्रिका का लगातार छत्तीस बरस तक प्रकाशित होते रहना अपने आप में एक उपलब्धि है। सितम्बर 1981 में शुरू हुई 'आंचलिक पत्रकार' ने कुछ ही समय बाद आकार और पृष्ठ संख्या दोनों में इजाफा किया। पत्रिका का लेखक परिवार भी व्यापक हुआ। पत्रकारिता और जनसंचार के साथ-साथ पिछले ग्यारह वर्ष से पत्रिका ने विज्ञान-संचार को भी विमर्श का विषय बनाया है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्युनिकेशन एंड इन्फारमेशन रिसोर्सेज, नईदिल्ली की नेशनल साइंस लायब्रेरी ने 'आंचलिक पत्रकार' को शोध पत्रिका की मान्यता प्रदान की है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की मान्यता प्राप्त शोध पत्रिकाओं की सूची में 'आंचलिक पत्रकार' को सम्मिलित किया गया है। नवोदित पत्रकारों, पत्रकारिता के विद्यार्थियों तथा विज्ञान संचारकों में 'आंचलिक पत्रकार' की माँग है। हमारे अधिकांश पाठक खरीदकर इस पत्रिका को पढ़ रहे हैं। शोधकर्ताओं में यह पत्रिका उपादेय मानी जा रही है। शोध पत्रों का भी प्रकाशन किया जा रहा है। सुधी पाठकों की सन्दर्भ-सुविधा के लिए छत्तीस बरस के सफर में 'आंचलिक पत्रकार' में प्रकाशित चुनिन्दा आलेखों की विवरणी प्रकाशित की जा रही है।

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
सितंबर 1981	1. आंचलिक पत्रकारिता निखर रही है 2. प्राचीन भारत में संवाद तंत्र 3. समाचारों की दुनिया में गरीब देश भारत	जगत पाठक अम्बादत्त भारतीय खुशाल सिंह पुरोहित
अक्टूबर 1981	1. समाचार पत्रोद्योग प्रबंधन और आंचलिक पत्रकारिता 2. पत्रकार और गाँव 3. कस्बे का पत्रकार	रम्मू श्रीवास्तव राजनारायण मिश्र अजात शत्रु
नवम्बर 1981	1. सामाजिक यथार्थ गायब है 2. काँटों भरी राह है यह 3. आंचलिक पत्रकार और दायित्व 4. पहचान का संकट 5. किन हालात में काम करते हैं हम	लज्जाशंकर हरदेनिया राजेन्द्र माथुर धन्नालाल शाह रघुराज सिंह रामनाथ शुक्ल
दिसम्बर 1981	1. नगर समाचार : दृष्टि और दायरा 2. अपराध और दुर्घटना की खबरें 3. एक अनार सौ बीमार	ओंकार ठाकुर राजेन्द्र नूतन विजयदत्त श्रीधर
जनवरी 1982	1. जबलपुर की उर्दू पत्रकारिता	फिरोज कमाल
फरवरी 1982	1. बदलते सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में ग्रामीण पत्रकारिता 2. एक दुर्लक्षित क्षेत्र 3. गाँव से पहचान कैसे 4. कदम–कदम पर काँटे	गणेश मंत्री यदुनाथ थत्ते राजनारायण मिश्र महेश श्रीवास्तव
मार्च 1982	1. गणेश शंकर विद्यार्थी और हिन्दी अखबार	राजेन्द्र माथुर

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
अप्रैल 1982	1. सरकार और प्रेस 1. जनसम्पर्क	विदुर (हनुमानप्रसाद तिवारी) डा. सुशील त्रिवेदी
मई 1982	1. इतनी ज्यादा क्यों बिकती हैं तमिल और मलयालम पत्र–पत्रिकाएँ–1	डा. आरिग पूडि
जून 1982	1. इतनी ज्यादा क्यों बिकती हैं तमिल और मलयालम पत्र–पत्रिकाएँ–2	डा. आरिग पूडि
जुलाई 1982	1. हिन्दी लेखन और अखबार	राजेन्द्र माथुर
अगस्त 1982	1. छतरपुर काण्ड में कलेक्टर दोषी 2. उर्दू पत्रकारिता के 160 वर्ष 3. हिन्दी पत्रकारिता : मानस बदलना होगा	मदनमोहन जोशी विजयदत्त श्रीधर
सितम्बर 1982	1. विकास पत्रकारिता	शोभाराम श्रीवास्तव
अक्टूबर 1982	1. पत्रकारिता, समाज और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता 2. प्रेस की आजादी इसलिए जरूरी है	गंगाप्रसाद ठाकुर नरेन्द्र कुमार सिंह
नवम्बर 1982	1. बिहार प्रेस विधेयक असंवैधानिक 2. लघु समाचारपत्रों की समस्याएँ 3. आकाशवाणी और मध्यप्रदेश 4. प्रेस की आजादी और विज्ञापन की राजनीति	 रामकिशोर पशीने रमाशंकर त्रिपाठी सूर्यनारायण शर्मा
दिसम्बर 1982	1. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पत्रकारिता	प्रो. लक्ष्मीनारायण दुबे
जनवरी 1983	1. सम्पादकाचार्य पराडकर	लक्ष्मीशंकर व्यास
फरवरी 1983	1. जयाजी प्रताप से मध्यप्रदेश संदेश : निरंतर प्रकाशन के 77 वर्ष 2. पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाएँ	विजयदत्त श्रीधर सुषमा गांधी
मार्च 1983	1. कलेक्टर–पत्रकार संघर्ष का उपसंहार	शिवअनुराग पटैरया
मई 1983	1. खजुराहो फोटो काण्ड	सुमति प्रकाश जैन
जून 1983	1. पत्रकार प्रवर पं. माधवराव सप्रे 2. अखबार और विशेषाधिकार 3. समाचार सूत्रों की रक्षा का सवाल 4. मध्यप्रदेश में पत्रकारिता का इतिहास (समीक्षा)	विजयदत्त श्रीधर नईदुनिया का सम्पादकीय डा. नंदकिशोर त्रिखा प्रसन्नशंकर ढगट
जुलाई 1983	1. नए सन्दर्भ और पुराने कानून	डा. नन्दकिशोर त्रिखा
अगस्त 1983	1. मौजूदा कानून के रहते क्या प्रेस के लिए नया कानून बनना जरूरी है 2. स्वतंत्रता के बाद हिन्दी पत्रकारिता का विकास	राजेन्द्र नूतन

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
सितंबर 1983	1. रेडियो पत्रकारिता	डा. ब्रजभूषण सिंह आदर्श
अक्टूबर 1983	1. पत्रकारिता की वैज्ञानिक शिक्षा 2. समाचारपत्र और छायाचित्र	गंगाप्रसाद ठाकुर डा. ब्रजभूषण सिंह आदर्श
नवम्बर 1983	1. अदालत की मानहानि : क्या अँगरेजी काल का कानून बदलेगा–सूर्यनारायण शर्मा	
जनवरी 1984	1. हिन्दी पत्रकारिता की विकास बाधा	राजेन्द्र माथुर
फरवरी 1984	1. पत्रकारिता : मिशन और व्यवसाय के द्वंद्व से परे 2. समाचारपत्रों के घोषणापत्र और जिला दंडाधिकारी के अधिकार – गंगाप्रसाद ठाकुर	गणेश मंत्री
मार्च 1984	1. लघु समाचारपत्र : समस्याएँ और समाधान	गंगाप्रसाद ठाकुर
अप्रैल–मई 1984	1. विधायिका के विशेषाधिकार और प्रेस 2. वृत्त लेखन	गंगाप्रसाद ठाकुर डा. ब्रजभूषण सिंह आदर्श
जून 1984	1. पत्रकार प्रवर माधवराव सप्रे	प्रो. हरिकृष्ण त्रिपाठी
जुलाई 1984	1. लोगों से जुड़ने में ही पत्रकारिता की सार्थकता	प्रभाष जोशी
अगस्त 1984	1. प्रेस और लोकतंत्र 2. एक अज्ञात भारतीय की मौत	विजयदत्त श्रीधर डॉम मोराइस
सितम्बर 1984	1. हाकर एक टूटी कड़ी 2. एक कर्मठ महिला हाकर	अरुण पाण्डेय कोमलराव वोराडे
अक्टूबर 1984	1. प्रेस आयोग–प्रेस परिषद	डा. नन्दकिशोर त्रिखा
नवम्बर – दिसम्बर 1984	1. अखबार लिखना 2. प्रेस कानून 3. सूचना प्राप्त करने का अधिकार	'मालवा अखबार' से कृष्ण गोपाल गंगाप्रसाद ठाकुर
जनवरी 1985	1. जनसंचार साधनों का विकास और उनकी भूमिका 2. हिन्दी समाचारपत्र और सामाजिक दायित्व	डा. मुजीब रिजवी कृष्णकुमार मिश्र
फरवरी–मार्च 1985	1. समाचार के स्रोत 2. छपने योग्य समाचार 3. सम्पादन के सिद्धान्त 4. पत्रकार और बैण्ड बाजा 5. हिन्दी पत्रकारिता के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	काशीनाथ जोगलेकर जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी सुरेश गुप्ता गंगाप्रसाद ठाकुर मदन गोपाल
अप्रैल–मई 1985	1. विकास कार्यों की आकाशवाणी के लिए रिपोर्टिंग कैसे करें	शचीन्द्र मोहन सिन्हा
जून 1985	1. हिन्दी दैनिकों की भाषा 2. उन्हें स्वतंत्रता पर अंकुश स्वीकार्य न था (बनारसीदास चतुर्वेदी) – यशपाल जैन	सुरेश गुप्ता

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
जुलाई 1985	1. सपने में मिला समाचार जिसने संसार को हिला दिया	डा. ब्रजभूषण आदर्श
सितंबर 1985	1. जनसंचार नीति की प्राथमिकताएँ क्या हों ? 2. प्रेस के लिए आचार संहिता की आवश्यकता का विवाद 3. पत्रकारिता और राष्ट्रीय हित 4. स्मृति शेष : श्री नर्मदा प्रसाद सराफ	जसवन्त सिंह यादव गंगाप्रसाद ठाकुर रामकिशोर पसीने प्रो. हरिकृष्ण त्रिपाठी
अक्टूबर 1985	1. पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका	संजीव भानावत
नवम्बर 1985	1. खबर का स्रोत पूछा जा सकता है 2. स्वातंत्र्य संघर्ष और हिन्दी पत्रकारिता	न्यायमूर्ति सेन / मधुसूदन आनंद संजीव भानावत
दिसम्बर 1985	1. हिन्दोस्थान : हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचारपत्र 2. भारत में मानहानि कानून	डा. धीरेन्द्रनाथ सिंह गंगाप्रसाद ठाकुर
जनवरी 1986	1. आंचलिक पत्रकारिता 2. अखबारों के वैचारिक प्रभाव में कमी 3. अखबार (कविता)	रंजीत भट्टाचार्य सुरेश जोसेफ इब्ने इंशा
फरवरी 1986	1. मुद्रण के साधन, प्रचार सामग्री तथा उसका उत्पादन 2. जानने के अधिकार की बाधाएँ	एस.पी. निगम गंगाप्रसाद ठाकुर
मार्च 1986	1. सूचना माध्यमों का विकास 2. नामों के बहाने	गंगाप्रसाद ठाकुर डा. बृजभूषण सिंह आदर्श
मई 1986	1. जोखिम पत्रकारिता के 2. छोटे शहर का अखबार	विजयदत्त श्रीधर शरद जोशी
जून 1986	1. हिन्दी पत्रकारिता : दशा और दिशा / व्याख्यान	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'
अगस्त 1986	1. आंचलिक समाचारों के स्रोत	श्याम चतुर्वेदी
सितंबर 1986	1. पत्रकारों को सबक सिखाने की घटनाएँ 2. आईना देखकर बुरा मानते लोग	गंगाप्रसाद ठाकुर कमल दीक्षित
अक्टूबर 1986	1. पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका	राजेन्द्र हरदेनिया
नवम्बर – दिसम्बर 1986	1. हिन्दी के एक आदि पत्रकार अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी 2. पं. बाबूराव विष्णु पराडकर	कृष्णबिहारी मिश्र राममोहन पाठक
जनवरी 1987	1. नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता 2. दक्षिण में हिन्दी पत्रकारिता के प्रकाश स्तंभ 3. शैक्षिक पत्रकारिता की अवधारणा और स्वरूप 4. पत्रकारों का उत्पीड़न क्यों?	डा. आनन्दनारायण शर्मा जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी संजीव भानावत गंगाप्रसाद ठाकुर
मार्च–अप्रैल 1987	1. हिन्दी पत्रकारिता तथा राष्ट्रीय एकता में अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी की भूमिका	डा. लक्ष्मीनारायण दुबे

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	2. माखनलाल चतुर्वेदी : सृजन और संग्राम में अद्वितीय	श्रीकांत जोशी
	3. उग्रः एक समर्थ पत्रकार	कृष्ण कमलेश
मई–जून 1987	1. हिन्दी का पहला अखबार : उदन्त मार्त्तण्ड	निशा दुबे
	2. संचार साधनों और सूचना स्रोतों की इजारेदारी	गंगाप्रसाद ठाकुर
	3. हिन्दी पत्रकारिता के महामनीषी माधवराव सप्रे	राजीव दुबे
जुलाई 1987	1. क्षेत्रीय पत्रकार फिर भी जागरूक हैं	गंगा प्रसाद ठाकुर
अगस्त 1987	1. जनसंचार माध्यम और महिलाओं की छवि	संजीव भानावत
सितंबर 1987	1. समाचार स्रोत की गोपनीयता	अटलबिहारी शर्मा
	2. दूरदर्शन का सामाजिक प्रभाव	संजीव भानावत
अक्टूबर 1987	1. गनी भाई	शिवकुमार विवेक
नवम्बर 1987	1. पत्रकार गांधी	संजीव भानावत
	2. श्री रामेश्वर प्रसाद गुरु	प्रो. हरिकृष्ण त्रिपाठी
	3. हजारों कारवाँ होंगे, हजारों मंजिलें होंगी निगाहें तुमको ढूँढेंगी, मगर तुमको न पाएँगी	मायाराम सुरजन
दिसम्बर 1987	1. फीचर लेखन	शोभाराम श्रीवास्तव
जनवरी 1988	1. साहित्य और पत्रकारिता	संजीव भानावत
फरवरी 1988	1. निराला पत्रकार निराला	संजीव भानावत
मार्च 1988	1. प्रतापी प्रताप	देवव्रत शास्त्री
	2. भोपाल में उर्दू सहाफत	शौकत रमूजी
मई 1988	1. एक अखबार के सौ वर्ष : मलयाल मनोरमा	
	2. पत्रकारिता प्रशिक्षण : स्थिति और संभावनाएँ	संजीव भानावत
जून 1988	1. दादा माखनलाल चतुर्वेदी और उनकी पत्रकारिता	विजयदत्त श्रीधर
	2. जब मैंने कर्मवीर का घोषणा पत्र भरा	माखनलाल चतुर्वेदी
	3. साहित्य की दुर्गा संस्कृति के गहने पहनती हैं	माखनलाल चतुर्वेदी
	4. दादा के कारण हम सब धन्य हुए हैं	सन्तोषकुमार शुक्ल
	5. दादा माखनलाल, मैं और भोपाल	रतन कुमार
	6. सप्रे जी	माखनलाल चतुर्वेदी
	7. मनस्वी पत्रकार आगरकर जी	विनय मोहन शर्मा
अगस्त 1988	1. पत्रकारिता और समाज	
	2. पत्रकारिता और मूल्यबोध	
	3. पत्रकारिता और साहित्य	मदनमोहन जोशी
सितंबर 1988	1. आज की जरूरत स्वतंत्र एवं जिम्मेवार प्रेस	न्यायमूर्ति ए.एन. सेन
	2. पंजाब के पत्रकारों पर मुसीबतों के पहाड़	कुलदीप नैयर
	3. यह आकाशवाणी है	

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. विवादग्रस्त मानहानि विधेयक	
नवम्बर 1988	1. पत्रकारिता की चुनौतियाँ	गंगाप्रसाद ठाकुर
दिसम्बर 1988	1. प्रताप – लोग नहीं जानते कि उस इमारत में छपता था क्रांतिकारी अखबार	
	2. नेहरूजी और पत्रकारिता	मनोजकुमार श्रीवास्तव
	3. प्रखर पत्रकार मौलाना आजाद	नवीनचन्द्र पन्त
	4. अखबार में लोकपाल	
जनवरी 1989	1. भारती तथा उसके यशस्वी सम्पादक	डा. मदनगोपाल गुप्त
फरवरी 1989	1. बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता	संजीव भानावत
	2. पत्रकार कला की शिक्षा की व्यवस्था	विष्णुदत्त शुक्ल
	3. पत्रकारिता : चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ	राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल
मार्च 1989	1. प्रेस की स्वतंत्रता	अक्षयकुमार जैन
अप्रैल 1989	1. कर्मवीर	श्रीकांत जोशी
	2. दादा के तीन अग्रलेख	
	3. मुस्लिम रक्षा की महान बलि गणेशजी	माखनलाल चतुर्वेदी
मई 1989	1. पुस्तक समीक्षा का एक रूप विधान	डा. जमनालाल वायती
	2. संचार शिक्षा, प्रशिक्षण एवं शोध	डा. संजीव भानावत
जून 1989	1. अभिव्यक्ति की आजादी और आतंकवाद के बढ़ते खतरे	राधेश्याम शर्मा
	2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आतंकवाद	यदुनाथ थत्ते
	3. संसदीय विशेषाधिकार	डा. संजीव भानावत
जुलाई 1989	1. पं. नेहरु और पत्रकारिता	डा. संजीव भानावत
	2. लघु पत्र–पत्रिकाओं का औचित्य	शिव बरुआ
अगस्त 1989	1. पत्रकारिता के क्षेत्र में बढ़ती संचार सुविधाएँ	शोभाराम श्रीवास्तव
सितंबर 1989	1. कागज बनाने का इतिहास	
	2. शब्दर्षि आचार्य रामचन्द्र वर्मा	विश्वनाथ मुखर्जी
अक्टूबर 1989	1. प्रखर, प्रगतिशील, प्रबुद्ध पत्रकार	हरिशंकर परसाई
	2. वे भी क्या दिन थे जब मैंने पत्रकारिता के पेशे को अपनाया	रामेश्वर प्रसाद गुरु
	3. रामेश्वर प्रसाद गुरु एक स्मृति	डा. प्रेम शंकर
नवम्बर 1989	1. मध्यप्रदेश में पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास : दुर्लभ इतिहास पर दुर्लभ शोध ग्रंथ	शंभुदयाल गुरु
	2. पत्रकारिता में शोध का नया आयाम	डा. सुशील त्रिवेदी
	3. मध्यप्रदेश की पत्रकारिता का समन्वित चित्र	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
दिसम्बर 1989	1. पत्रकारिता में गणेशशंकर विद्यार्थी की परम्परा	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	2. पत्रकारिता का बदलता स्वरूप	अक्षयकुमार जैन

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	3. कभी अंगारे उगलती थी इलाहाबाद की पत्रकारिता	बंशीधर
जनवरी 1990	1. सूचना पाने का अधिकार : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 2. पत्रकारिता तब : संदर्भ विशाल भारत 3. इंगित : साहित्यिक पत्रिका के बाईस साल	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी गंगाप्रसाद ठाकुर शिव बरुआ
फरवरी 1990	1. हिन्दू ने निकाला उर्दू का पहला अखबार	मुहम्मद नोमान खाँ
मार्च 1990	1. जनचेतना के ध्वजारोही गणेशशंकर विद्यार्थी 2. समाचारपत्रों का काम आलोचना करना ही है	रामकृष्ण कुलदीप नैयर
अप्रैल 1990	1. उर्दू पत्रकारिता से जुड़े सवाल 2. विद्यावाचस्पति डॉ. गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'	राजा दुबे डा. देवीसिंह राठौर
मई 1990	1. जब देवदास गांधी ने खबर छापने के लिए माफी नहीं माँगी 2. पत्रकार पितामह महावीरप्रसाद द्विवेदी	अनिल बंसल
जून–जुलाई 1990	1. दोहरे मानदंड से उबरना होगा	नारायण दत्त
अगस्त 1990	1. हिन्दी पाठकों के गले में अँगरेजी का तौक 2. संपादक बनाम संवाददाता : अधिकार का प्रश्न	नारायण दत्त जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
सितंबर 1990	1. कलम का वार, झेल न सकी अँगरेज सरकार 2. पत्रकार डॉ. आम्बेडकर 3. पत्रकार गांधी	कृष्णदत्त पालीवाल अनन्त पोतदार यदुनाथ थत्ते
अक्टूबर 1990	1. ऐसे थे सम्पादक और शहीद विद्यार्थी जी 2. योद्धा पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी	मन्मथनाथ गुप्त विजयदत्त श्रीधर
नवम्बर 1990	1. तब तक गणेशशंकर की गाथा कही जाएगी 2. गणेशशंकर विद्यार्थी की देन के प्रति हम कितने जागरूक हैं?– नारायण दत्त	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
दिसम्बर 1990	1. आरक्षण आन्दोलन में समाचारपत्रों की भूमिका–1 2. आरक्षण आन्दोलन में समाचारपत्रों की भूमिका–2 3. आरक्षण आन्दोलन में समाचारपत्रों की भूमिका–3	रघुनाथ तिवारी उमेश त्रिवेदी बालमुकुन्द
जनवरी 1991	1. साहित्य और पत्रकारिता 2. आर्य समाज के पत्र–पत्रिकाएँ	रघुवीर सहाय छ.वा. आंबुलकर
मार्च 1991	1. आज के संदर्भ में पत्रकार की भूमिका 2. मध्यप्रदेश में मराठी पत्रकारिता का इतिहास	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी द.वा. आंबुलकर
अप्रैल 1991	1. जो घर फूँके आपना	डा. प्रभाकर माचवे
मई 1991	1. रज्जू बाबू : वे सत्ताईस वर्ष 2. बुझना एक प्रकाश स्तंभ का 3. पता नहीं वे कैसे मौन हो गए	राहुल वारपुते विष्णु खरे डा. प्रभाकर माचवे

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. हिन्दी पत्रकारिता में मौलिकता का अभाव है	राजेन्द्र माथुर
	5. अखबार वालों की आचार संहिता का सवाल	राजेन्द्र माथुर
जून 1991	1. आज के संस्थापक शिवप्रसाद गुप्त	राममोहन पाठक
	2. पत्रकार डॉ. आम्बेडकर	यदुनाथ थत्ते
जुलाई 1991	1. नवीनजी ने अपने समय की चुनौतियों को पहचाना, संघर्ष किया	गणेश मंत्री
	2. मेरी पत्रकारिता के 37 वर्ष	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'
अगस्त 1991 (दशक विशेषांक)	1. मध्यप्रदेश में पत्रकारिता	विजयदत्त श्रीधर
	2. मध्यप्रदेश की उर्दू सहाफत	शौकत रमूजी
	3. मध्यप्रदेश की खेल पत्रकारिता	सुरेश शर्मा
	4. मध्यप्रदेश की साहित्यिक पत्रकारिता	डा. मंगला अनुजा
	5. मध्यप्रदेश की मराठी पत्रकारिता	रामचन्द्र विनायक हर्डीकर
सितंबर 1991	1. चार सौ साल पूर्व भारत में आया छापाखाना	नवीन पंत
	2. विश्व की पहली समाचार एजेंसी रायटर	अनिल शर्मा
	3. दुनिया का पहला अखबार	लोकेन्द्र चतुर्वेदी
	4. पहले अखबार नवीस के आखिरी दिन	प्रेम उपाध्याय
अक्टूबर 1991	1. मध्यप्रदेश में उर्दू सहाफत : इब्तेदा और इरतका	डा. नुसरत बानो रूही
	2. निष्ठापूर्ण शोध	डा. मुहम्मद नोमान खाँ
	3. रहनुमा दस्तावेज	रामप्रकाश राही
	4. अनुकरणीय कार्य	ताबा नकवी अमरोहवी
नवम्बर 1991	1. बाम्बे समाचार के 170 साल	
	2. पत्रकार जीवन के संस्मरण	डा. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द
	3. प्रेस से प्रेस कानून तक	डा. ब्रजभूषण सिंह आदर्श
दिसम्बर 1991	1. मानव मूल्यों की स्थापना में पत्रकारिता की भूमिका	सेवाराम त्रिपाठी
जनवरी 1992	1. पत्रकार प्रवर पं. बनारसीदास चतुर्वेदी	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	2. वे घासलेटी साहित्य के प्रबल विरोधी थे	सतीशचन्द्र चतुर्वेदी
फरवरी 1992	1. पं. बनारसी दास चतुर्वेदी : जैसा मैंने जाना	डा. शंकरदयाल शर्मा
	2. पत्रकारिता पर पाँच किताबें	
मार्च 1992	1. स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता की उल्लेखनीय भूमिका	डा. शंकरदयाल शर्मा
	2. ऐसे थे गणेश शंकर विद्यार्थी	मधु वर्मा
अप्रैल 1992	1. शौर्य और पराक्रम की पत्रकारिता के प्रतीक माखनलाल चतुर्वेदी	संजीव भानावत
मई 1992	1. हिन्दी पत्रकारिता के जन्मदाता पं. युगल किशोर शुक्ल	महाराज सिंह परिहार
	2. पत्राचारी रामेश्वर गुरू	डा. रामशंकर द्विवेदी

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
जून 1992	1. पत्रकारिता और माधवराव सप्रे 2. पं. माधवराव सप्रे 3. आत्म निवेदन 4. हिन्दी के अनन्य सेवक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार	संजीव भानावत पं. माखनलाल चतुर्वेदी आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
जुलाई 1992	1. पड़ाव दर पड़ाव	स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी
अगस्त 1992	1. यशस्वी पत्रकार श्री पराडकर 2. आकाशवाणी : जनसंचार का सशक्त माध्यम 3. जिन्दादिल श्रीबाल पाण्डे 4. पत्रकार पं. द्वारका प्रसाद मिश्र	कृष्णदत्त पालीवाल नीरज श्रीवास्तव हरिशंकर परसाई संतोषकुमार शुक्ल
सितंबर 1992	1. संदर्भ विशेषांक–1 / सप्रे संग्रहालय की विवरणिका	
अक्टूबर 1992	1. सन्दर्भ विशेषांक– 2 / सप्रे संग्रहालय की विवरणिका	
नवम्बर 1992	1. जंगे आजादी की तहरीक में उर्दू सहाफत का किरदार	विजयदत्त श्रीधर
दिसम्बर 1992	1. सदानन्द– भारत में अँग्रेजी पत्रकारिता के सिरमौर 2. भारत में प्रेस की शुरुआत	एम.वी. कामथ
जनवरी 1993	1. संदर्भ विशेषांक पूरक सूची– 1	
फरवरी 1993	1. राष्ट्रीय मूल्यों के लिए समर्पित पं. बनारसीदास चतुर्वेदी 2. सम्प्रेषण	डा. विश्वमित्र उपाध्याय डा. विद्यानिवास मिश्र
मार्च 1993	1. मानवीय आस्थाओं के प्रकाश पुंज श्री अक्षय कुमार जैन	माधवकांत मिश्र
अप्रैल 1993	1. जौहर कुरैशी : उर्दू पत्रकारिता के निडर सेनापति 2. गणेश शंकर विद्यार्थी (सरस्वती, मई 1931)	शौकत रमूजी, घनश्याम सिह तोमर देवीदत्त शुक्ल
मई 1993	1. वर्तमान युग में साहित्यकार का दायित्व (व्याख्यान) 2. समाचार के अस्तित्व का सवाल 3. पुलित्जर जोसेफ	गौरापंत शिवानी सन्तोषकुमार शुक्ल
जून 1993	1. सप्रेजी की पुण्य स्मृतियाँ	मावलीप्रसाद श्रीवास्तव
जुलाई 1993	1. सप्रेजी का पुण्य स्मरण– 2 2. पंजाब केसरी का जन्म	मावलीप्रसाद श्रीवास्तव
अगस्त 1993	1. सप्रेजी की पुण्य स्मृति– 3	मावलीप्रसाद श्रीवास्तव
सितंबर 1993	1. स्मृतियाँ सी.वाई. चिन्तामणि के बारे में	तेजबहादुर सप्रू
अक्टूबर 1993	1. पं. माधवराव सप्रे (सरस्वती, 1926) 2. सप्रेजी की स्मृति 3. 'छत्तीसगढ़ मित्र' का जन्म	 किशोरीदास वाजपेयी गोविन्दराव हर्डीकर

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. 'कर्मवीर' साप्ताहिक पत्र का आयोजन	गोविन्दराव हर्डीकर
	5. मालवा अखबार के सम्बन्ध में	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
नवम्बर 1993	1. विनयमोहन शर्मा	सीताराम शर्मा
	2. समाचारपत्र उद्योग का सामाजिक दायित्व	डा. संजय जैन
	3. अभ्युदय प्रेस से जमानत की माँग	
	4. मराठी समाचारपत्र	डा. मंगला अनुजा
दिसम्बर 1993	1. विज्ञापन जगत में रचनात्मकता	चन्द्रकान्त सरदाना
	2. स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता	बालमुकुन्द
	3. एक कहानी अक्षरों की	
	4. गोपालकृष्ण गोखले	
	5. हमने छापना किससे सीखा?	
	6. लीडर के सम्पादक	
जनवरी 1994	1. संदर्भ विशेषांक पूरक सूची– 2	
फरवरी 1994	1. बनारसी दास चतुर्वेदी	प्रो. अक्षयकुमार जैन
	2. धर्मतंत्र और जनतंत्र की लड़ाई में पत्रकारिता की भूमिका	डा. खगेन्द्र ठाकुर
	3. बम्बई का इरीडियन स्पेक्टेटर	
मार्च 1994	1. तेलुगु भाषा की बाल पत्रकारिता	सुंकि वेंकटेश्वर्लु
	2. घटना के बाद तह तक जाना	विवेक शुक्ल
अप्रैल 1994	1. विदेशी अखबारों के आगमन का भय	सच्चिदानंद सहाय
मई 1994	1. निखिल चक्रवर्ती	
	2. भारत में पत्रकारिता के जनक हिकी	संजीवकुमार शर्मा
	3. भोपाल के गौरव मुल्ला रमूजी	घनश्याम सिंह तोमर
	4. विदेशी मीडिया का बाजार में प्रवेश : मतैक्य नहीं	इफ्तिखार जिलानी
जून 1994	1. हिन्दी पत्रकारिता – भूत और भविष्य	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	2. पत्र विधा पाठ्यक्रम और पत्रकारिता	यदुनाथ थत्ते
	3. सप्रे जी : निष्काम कर्मयोगी	शंभुदयाल गुरू
	4. खोजी पत्रकारिता	मधुकर खेर
	5. सरस्वती के सम्पादक	डा. मंगला अनुजा
जुलाई 1994	1. हिन्दी पत्रकरिता – आज और कल	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
अगस्त 1994	1. विज्ञापन : उपभोक्तावादी समाज का आकर्षण	योगीराज 'योगेश'
	2. नारायण राव जी नाखरे	
सितंबर 1994	1. तेलुगु दैनिक पत्रों के प्रतिनिधि संपादक नार्ला	सुंकि वेंकटेश्वर्लु
	2. हिन्दी प्रेमी अमृतलाल चक्रवर्ती	
अक्टूबर 1994	1. समाचार सुधावर्षण	प्रेमनाथ चतुर्वेदी

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
नवम्बर 1994	1. तेलुगु साप्ताहिक पत्रिकाओं के इतिहास में 'स्वाति' का नया कीर्तिमान 2. देशी समाचारपत्रों पर आकलेंड कालविन का दंश	सुंकि वेंकटेश्वर्लु
दिसम्बर 1994	1. कुलदीप सहाय और दैनिक लोकमत 2. पं. प्राणकिशन साहब 3. पं. रामप्रसाद मिश्र और जीवन	शारदा प्रसाद वर्मा
जनवरी 1995	1. संदर्भ विशेषांक पूरक सूची– 3 2. श्री मायाराम सुरजन 3. प्रेमशंकर दुबे	प्रमोद पगारे
अप्रैल 1995	1. बिहार में हिन्दी पत्रकारिता के शिखर पुरुष पं. प्रमोद शरण पाठक	रामजी मिश्र मनोहर
मई 1995	1. हरीन्द्र दवे 2. कन्नड भाषा की पत्रकारिता और उसकी पृष्ठभूमि	वामनराव पाठक संतोषकुमार शुक्ल
जून 1995	1. तेलुगु भाषा की पत्रकारिता का विकास 2. सिद्धनाथ माधव आगरकर 3. गणेशशंकर विद्यार्थी 4. जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द 5. प्रवासीलाल वर्मा	संतोषकुमार शुक्ल
जुलाई 1995	1. योद्धाओं के योद्धा बाल गंगाधर तिलक 2. लोकमान्य तिलक तथा असहयोग आन्दोलन	संतोषकुमार शुक्ल कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर
अगस्त 1995	1. क्रांतिकारी पत्रकार : मुंशी प्रेमचन्द 2. मलयालम की पत्रकारिता	डा. मंगला अनुजा संतोषकुमार शुक्ल
सितंबर 1995	1. महात्मा गांधी और पत्रकारिता 2. बंगला प्रेस का बाल्यकाल 3. सम्पादक के.एम. एर्रय्या 4. वसुधा के सम्पादक हरिशंकर परसाई	डा. मंगला अनुजा संतोष कुमार शुक्ल सुंकि वेंकटेश्वर्लु
अक्टूबर 1995	1. गांधी और गणेश	डा. मंगला अनुजा
नवम्बर 1995	1. नीव के पत्थर – उदन्त मार्त्तण्ड 2. आलीजाह दरबार प्रेस और जयाजी प्रताप	डा. मंगला अनुजा
दिसम्बर 1995	1. राष्ट्रपति ने सप्रे संग्रहालय को याद किया 2. नीव के पत्थर – हिन्दी प्रदीप 3. आलीजाह दरबार प्रेस– 2	डा. मंगला अनुजा
जनवरी 1996	1. नीव के पत्थर – मालवा अखबार 2. तेलुगु दैनिक पत्र ईनाडु की दूरदर्शन प्रसारण सेवा	डा. मंगला अनुजा सुंकि वेंकटेश्वर्लु

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
फरवरी 1996	1. नीव के पत्थर– समाचार सुधा वर्षण 2. एक कर्मठ व्यक्तित्व एम.जी. वैद्य 2. गुजराती अखबारों का अनोखा संग्रह	डा. मंगला अनुजा सुहास वीराने
मार्च 1996	1. नींव के पत्थर – सरस्वती 2. कोलकाता की 'तत्वबोधिनी' पत्रिका	डा. मंगला अनुजा
अप्रैल 1996	1. नींव के पत्थर– हिन्दोस्थान 2. मराठी पत्रकारिता के जनक बालशास्त्री जांभेकर 3. असम की पत्रकारिता आदि से अब तक 4. स्वदेशी साहित्य का महत्व	डा. मंगला अनुजा वामनराव पाठक संतोषकुमार शुक्ल
मई 1996	1. नीव के पत्थर– भारत मित्र 2. सूचना क्रांति और पत्रकारिता 3. समाज में पत्रकारिता का स्थान 4. गुजराती पत्रकारिता को संस्कार दिए बीसवीं सदी ने	डा. मंगला अनुजा गणेश मंत्री रामानन्द चट्टोपाध्याय वामनराव पाठक
जून 1996	1. नींव के पत्थर – छत्तीसगढ़ मित्र 2. समाज और प्रेस 3. राहुल बारपुते	डा. मंगला अनुजा आचार्य नरेन्द्र देव
अगस्त 1996	1. भाषायी समाचारपत्रों पर बंदिश की तथा–कथा 2. अमृत बाजार पत्रिका 3. बाबू शिवनारायण सिंह 4. गणेश शंकर विद्यार्थी	लार्ड लिटन का भाषण
सितंबर 1996	1. नीव के पत्थर – ब्राह्मण 2. पत्रकारिता की आचार संहिता के लिए गाइड	डा. मंगला अनुजा राधेश्याम शर्मा
अक्टूबर 1996	1. नीव के पत्थर – बनारस अखबार 2. विद्यार्थी जी की पत्रकारिता 3. लोक शक्ति की ताकत सूचना के अधिकार में निहित है	डा. मंगला अनुजा विजयदत्त श्रीधर न्यायमूर्ति सावंत
नवम्बर 1996	1. नीव के पत्थर– कर्मवीर 2. समाचारपत्रों की हिन्दी	डा. मंगला अनुजा डा. सुमन कुमार
दिसम्बर 1996	1. नीव के पत्थर– दैनिक प्रकाश 2. पत्रकार दीर्घा और संसदीय रिपोर्टिंग 3. तेलुगु बाल पत्रकारिता के पितामह चक्रपाणि	डा. मंगला अनुजा जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी सुंकि वेंकटेश्वर्लु
जनवरी 1997	1. मनस्वी पत्रकार जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी 2. हावी है गोपनीयता की शक्ति 3. भ्रष्टाचार से भी निपट सकता है सूचना का अधिकार	डा. राजेन्द्र रंजन विष्णुदत्त नागर राकेश दीवान
फरवरी 1997	1. नीव के पत्थर– हंस 2. विदेशी समाचारपत्रों के भारत में प्रकाशन से कौन डरता है? 3. कर्मठ पत्रकार कोटमराजू रामाराव	डा. मंगला अनुजा रघुनाथ प्रसाद तिवारी डा. सुंकि वेंकटेश्वर्लु

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
मार्च 1997	1. नीव के पत्थर– बंगदर्शन	डा. मंगला अनुजा
	2. तेलुगु दैनिक 'वार्ता'	सुंकि वेंकटेश्वर्लु हितैषी
	3. स्वास्थ्य पत्रकारिता	प्रो. यशवंत कोठारी
	4. त्रिमूर्ति– रामानंद, चिन्तामणि, गणेश	बनारसीदास चतुर्वेदी
अप्रैल 1997	1. नीव के पत्थर– मतवाला	डा. मंगला अनुजा
	2. पत्रकारिता की पवित्रता बनाए रखें	श्यामलाल चतुर्वेदी
	3. एक प्रेरक व्यक्तित्व मेरे दादाजी	डा. आर.के. चतुर्वेदी
	4. सारा पुण्य चुक नहीं गया है	प्रभाष जोशी
मई 1997	1. नीव के पत्थर– चांद	डा. मंगला अनुजा
	2. पत्रकारिता के क्षेत्र में गुरुकुल कांगड़ी का योगदान	
जून 1997	1. तिलक को 6 साल की सजा.....	
	2. गुलामी के खिलाफ कलम और कागज का जेहाद	विजयदत्त श्रीधर
	3. प्रेस कानूनों का पुनरीक्षण और उनका संहिताकरण	संतोषकुमार शुक्ल
	4. प्रथम और द्वितीय प्रेस आयोग	गंगाप्रसाद ठाकुर
	5. जनचेतना आन्दोलन जिसने आजादी की अलख जगाई	विजयदत्त श्रीधर
जुलाई 1997	1. जीयो संसार! ईमानदारी के बल पर	ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी
	2. दस्तावेज : जब स्वराज्य सम्पादक ने लिखा पत्र	
	3. सूचनाओं की चकाचौंध और जानकारियों का अंधेरा	कमल दीक्षित
अगस्त 1997	1. सूचना के अधिकार का इतिहास	
	2. कलम के योद्धा – संत निहाल सिंह	संतोषकुमार शुक्ल
	3. मध्यप्रदेश की पत्रकारिता और आजादी की लड़ाई	विजयदत्त श्रीधर
सितंबर 1997	1. कलम के योद्धा – पराक्रमी पत्रकार श्री लक्ष्मीधर वाजपेई	सन्तोषकुमार शुक्ल
	2. पत्रकारों के खून से सिंची है आजादी की लड़ाई	जमनादास अख्तर
	3. अमेरिका में पत्रिकाओं पर संकट	सी.के. अरोड़ा
	4. प्रसार भारती अधिनियम की विशेषताएँ	
अक्टूबर 1997	1. पत्रकार की खामोशी ने बहुतों की जान बचाई	
	2. कलम के योद्धा – श्रीमती हेमन्त कुमारी देवी	संतोष कुमार शुक्ल
	3. भारती जी की यादें	गोपालदास
	4. चुनौतियों की परम्परा	ठाकुर प्रसाद सिंह
नवम्बर 1997	1. जब संदिग्ध माना जाता था अखबार माँग कर पढ़ना	
	2. कलम के योद्धा – पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र	संतोषकुमार शुक्ल
	4. हिन्दी की बाल पत्रिकाएँ	एम. माथुर
दिसम्बर 1997	1. नवीन जी का अग्रलेख– माँ तेरे बच्चे	
	2. प्रताप के प्राण थे 'नवीन'	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	3. प्रखर पत्रकार बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	संतोषकुमार शुक्ल
जनवरी 1998	1. कलम के योद्धा – श्री के.रामाराव	संतोषकुमार शुक्ल
	2. प्रेस परिषद की भूमिका और जिम्मेदारी	ए. जी. नूरानी

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
फरवरी 1998	1. कलम के योद्धा – पत्रकार प्रवर श्री अमृतलाल चक्रवर्ती	संतोषकुमार शुक्ल
	2. समाचारपत्रों का सामाजिक दायित्व	ओमप्रकाश मेहरा
	3. प्रसार भारती का बदलता स्वरूप	
	4. बच्चों के अधिकार और मीडिया की भूमिका	डा. मंगला अनुजा
मार्च 1998	1. कलम के योद्धा – पंडित बालकृष्ण भट्ट	संतोषकुमार शुक्ल
	2. बिहार में हिन्दी पत्रकारिता का विकास	रामजी मिश्र 'मनोहर'
	3. जब बढ़िया खबर देने पर माफी माँगनी पड़ती थी	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
अप्रैल 1998	1. गणेशजी के बारे में	मैथिलीशरण गुप्त
	2. कलम के योद्धा – प्रखर संपादक स्वामीनाथ सदानंद	संतोष कुमार शुक्ल
	3. माखनलाल चतुर्वेदी	नृपेन्द्र शर्मा
	4. कल्याण एक सर्वमान्य पत्रिका	सूर्यनारायण शर्मा
	5. भारत के उर्दू पत्र–पत्रिकाएँ	
मई 1998	1. बाबूराव विष्णु पराड़कर	
	2. कलम के योद्धा – श्रीमती एनी बेसेन्ट	सन्तोषकुमार शुक्ल
	3. कुशल संपादक गणेश मंत्री	डा. राममनोहर त्रिपाठी
	4. चुनौतियों को संभावनाओं में बदलना ही पत्रकारिता है	गणेश मंत्री
जून 1998	1. जादूगर थे श्रमजीवी पत्रकार	शिवकुमार विद्यालंकार
	2. कलम के योद्धा – पत्रकार मौलाना अबुल कलाम आजाद	संतोषकुमार शुक्ल
	3. पत्रकारिता : परिक्रमा या प्रदक्षिणा	राजेन्द्र शंकर
	4. मध्यप्रदेश सूचना का अधिकार विधेयक पारित	
	5. भारत में दैनिक समाचारपत्रों की स्थिति	डा. मंगला अनुजा
जुलाई 1998	1. निखिलदा का जाना	विजयदत्त श्रीधर
	2. पं. रामाश्रय उपाध्याय	
	3. कलम के योद्धा – लाल बलदेव सिंह	संतोषकुमार शुक्ल
	4. गीता प्रेस और कल्याण	श्यामसुन्दर दुजारी
अगस्त 1998	1. एक अद्‌भुत अखबार	बालकवि बैरागी
	2. कलम के योद्धा – पं. झाबरमल्ल शर्मा	संतोषकुमार शुक्ल
	3. स्वतंत्रता आन्दोलन और पत्रकारिता	राधेश्याम शर्मा
	4. पत्रकारों को मिलने वाली राजकीय सुविधाएँ	ए.जी. नूरानी
सितंबर 1998	1. 'अ से अखबार' (कविता)	शरद रंजन
	2. कलम के योद्धा – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	संतोषकुमार शुक्ल
	3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता – आत्मघात की पराकाष्ठा	डा. प्रभाकर श्रोत्रिय
	4. भारत में फोटो पत्रकारिता की स्थिति	वंदना हिंगोरानी
अक्टूबर 1998	1. संसार का सबसे पहला विज्ञापन	राजशेखर व्यास
	2. कलम के योद्धा – क्रांतिकारी पत्रकार लाला हरदयाल	संतोष कुमार शुक्ल
	3. युगधर्मी पत्रकार बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	डा. श्रद्धा सक्सेना
	4. साहित्य और समाज से दूर पत्रकारिता	लक्ष्मीकान्त वर्मा
नवम्बर 1998	1. लाला लाजपत राय का लेख– पंजाब के युवकों से	
	2. कलम के योद्धा – पंजाब केसरी लाला लाजपतराय	संतोषकुमार शुक्ल

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	3. प्रेस की आजादी का मतलब क्या है?	पी.वी. सावंत
	4. प्रखर पत्रकार की आदर्श जीवन कथा	एन.के. तिवारी
दिसम्बर 1998	1. कलम के योद्धा – श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे	संतोषकुमार शुक्ल
	2. दुधारी तलवार है ज्ञान और सूचना	कुन्दा दीक्षित
	3. विज्ञान पत्रकारिता के कुछ मूल गुण	आर.डी. तिवारी
	4. जन सशक्तीकरण में मीडिया की भूमिका	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
जनवरी 1999	1. कलम के योद्धा – पं. कामता प्रसाद गुरु	संतोषकुमार शुक्ल
	2. स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता	डा. सन्तोष भदौरिया
	3. सूचना के अधिकार से डर क्यों	भारत डोगरा
	4. पत्रकारिता के तन्निष्ठ साधक रामजी मिश्र	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
फरवरी 1999	1. न्यायालयों में देवनागरी अक्षर (भारतभ्राता, 1895)	
	2. कलम के योद्धा – राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द	सन्तोषकुमार शुक्ल
	3. आज तक : एक हजार के पार	
	4. मानवाधिकार संरक्षण में प्रचार माध्यमों की भूमिका	प्रमोद पाठक
मार्च 1999	1. मध्यप्रदेश में पत्रकारिता के 150 साल	विजयदत्त श्रीधर
अप्रैल 1999	1. इक्कीसवीं सदी और खबरपालिका	विजयदत्त श्रीधर
	2. कलम के योद्धा – दादा माखनलाल चतुर्वेदी	संतोषकुमार शुक्ल
	3. पत्रकारों की हत्याएँ	डा. अजीज बर्नी
	4. हिन्दी प्रकाशन का इतिहास	
	5. विरोधाभासों से जूझ रहा है मीडिया	उमेश त्रिवेदी
	6. मीडिया के समक्ष चुनौतियां	सुनील कुमार
	7. पत्रकारिता का प्रोफेशनल होना गलत नहीं	राजेश सिरोठिया
	8. स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता की भूमिका	प्रेमनारायण नागर
मई 1999	1. कलम के योद्धा – विपिनचन्द्र पाल	सन्तोषकुमार शुक्ल
	2. प्रतिबद्धता के साठ वर्ष	पी.के. राय
	3. पहले पत्रकार या नागरिक	सुनील कुमार
जून 1999	1. पत्रकार और रचनाकार	कैलाशचन्द्र पंत
	3. राष्ट्रीय जागृति की मीमांसा	माधवराव सप्रे
जुलाई 1999	1. शब्द सत्ता : 150 साल की विकास गाथा	कैलाशचन्द्र पंत
	2. कलम के योद्धा – पं. प्रताप नारायण मिश्र	संतोषकुमार शुक्ल
अगस्त 1999	1. कलम के योद्धा – बाल गंगाधर तिलक	संतोषकुमार शुक्ल
	2. महँगे बाजार, सस्ते अखबार	दीनानाथ मिश्र
	3. 21 वीं सदी में जनसम्पर्क	जवाहर कर्नावट
सितंबर 1999 (विशेषांक)	1. श्री रामगोपाल माहेश्वरी	
	2. पत्रकारिता की शिक्षा	विजयदत्त श्रीधर
	3. समय की माँग के अनुरूप व्यवस्था जरूरी	राधेश्याम शर्मा
	4. शिक्षण–प्रशिक्षण की अनिवार्य आवश्यकता	प्रो. रघुनाथप्रसाद तिवारी
	5. पत्रकारिता शिक्षण के समक्ष आसन्न चुनौतियाँ	प्रो. कमल दीक्षित

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	6. सूचना समाज और अ–राज	सुधीश पचौरी
	7. जनसंचार माध्यम	गिरीश पंकज
	8. पत्रकारिता प्रशिक्षण परिदृश्य	क्षिप्रा माथुर
अक्टूबर–नवम्बर 1999 (विशेषांक)	1. यशस्वी हस्ताक्षर देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	डा. मंगला अनुजा
	2. हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की दशा और दिशा	रामनारायण उपाध्याय
	3. एकदम बदल गया है परिदृश्य	धन्नालाल शाह
	4. पत्रकारिता, लोकमत और लोकतंत्र	रामाश्रय उपाध्याय
	5. तब पत्रकारिता एक मिशन थी	श्रीराम आगार
	6. कलम के कारण कैद और जुर्माना	सूर्यनारायण शर्मा
	7. पत्रकारिता के वर्ष : कुछ यादें	डा. रनवीर प्रकाश सक्सेना
	8. ग्वालियर की पत्रकारिता की रामकहानी	काशीनाथ चतुर्वेदी
	9. व्यापक फलक है आंचलिक पत्रकारिता का	प्रेमनारायण नागर
	10. विश्वास कायम रखना जरूरी	अयोध्याप्रसाद गुप्ता
	11. वह क्रास कनेक्शन	श्यामसुन्दर व्यौहार
	12. जब मैं पहली बार सम्पादक बना	श्यामसुन्दर शर्मा
	13. छत्तीसगढ़ की पत्रकारिक यात्रा के बिम्ब–प्रतिबिम्ब	कुमार साहू
	14. दो छोरों की पत्रकारिता की गौरव गाथा	सन्तोषकुमार शुक्ल
	15. पत्रकारिता जीवन के कुछ खट्टे–मीठे अनुभव	निर्मल नारद
	16. संघर्षपूर्ण पत्रकारिता के बावन वर्ष	जवाहरलाल राठौड़
	17. पत्रकारिता : सत्य से साक्षात्कार	बसंत कुमार तिवारी
	18. पत्रकारिता का है अंदाजे बयां और	राधेश्याम शर्मा
	19. न्यूज इज सेक्रेड, कमेंट इज फ्री	लज्जाशंकर हरदेनिया
	20. मेरे अनुभव	दाऊलाल साखी
	21. साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन : आत्मानुभव	डा. प्रभाकर श्रोत्रिय
	22. वक्त के कठघरे में खड़े गवाह का बयान	रमेश नैयर
दिसम्बर 1999 (विशेषांक)	1. वे दिन वे लोग : पं. झाबरमल्ल शर्मा	श्यामसुन्दर शर्मा
	2. मध्यप्रदेश की श्रमजीवी पत्रकारिता के पितामह श्री हुक्मचन्द नारद	निर्मल नारद
	3. हमने रतलाम में पहला दैनिक पत्र निकाला	रामनाथ शुक्ल
	4. रामानुजलाल श्रीवास्तव और मासिक 'प्रेमा'	हरिकृष्ण त्रिपाठी
	5. पत्रकारिता के संस्मरण	ललित किशोर टण्डन
	6. 'कर्मवीर' से शुरू हुई मेरी पत्रकारिता	श्यामलाल चतुर्वेदी
	7. पत्रकारिता तब और अब	तुषारकांति बोस
	8. मध्यप्रदेश विधानसभा की पत्रकार दीर्घा	शिवप्रसाद 'मुफलिस'
जनवरी 2000 (विशेषांक)	1. जनवरी 1900 हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा में मील का पत्थर	विजयदत्त श्रीधर
	2. आदर्श पत्रकार पं. झाबरमल्ल शर्मा	श्यामसुन्दर शर्मा
	3. कालजयी पत्रिका 'सरस्वती'	डा. मंगला अनुजा
	4. युग प्रवर्तक मासिक 'छत्तीसगढ़ मित्र'	संतोषकुमार शुक्ल
	5. 'सुदर्शन' जो युगीन पत्रकारिता का प्रतिमान बना	सुनीलकुमार तिवारी
	6. हिन्दी की आरंभिक पत्रकारिता का अप्रतिम अध्याय 'जासूस'	श्यामसुन्दर शर्मा
फरवरी 2000	1. हिन्दी पत्रकारिता	विजयदत्त श्रीधर
	2. बिहार और हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
	3. साहित्यिक पत्रकारिता और संपादन	राम अधीर

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. पत्रकारिता में चौर्य कर्म के नमूने	गिरीश पंकज
	5. खट्टे–मीठे अनुभवों की अर्द्धशती	गोविन्दलाल वोरा
	6. बाजारवाद का नया अवतार और भारतीय पत्रकारिता	विनय उपाध्याय
मार्च 2000	1. बाजारवाद की चुनौतियाँ और हिन्दी पत्रकारिता	जवाहरलाल कौल
	2. बाजारवाद और भारतीय पत्रकारिता	हरिवंश
	3. आत्मबोध से आत्मबोझ तक	निर्मल वर्मा
	4. हिन्दी पत्रकारिता पर कड़कड़ाती बाजारवाद की बिजली	उमेश त्रिवेदी
अप्रैल 2000	1. ऐसे मिला कागज लिखने को	विश्वनाथ गुप्त
	2. प्रिंट मीडिया बनाम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	सुधीर सक्सेना
	3. फर्रुखाबाद की पत्रकारिता	डा. राजेन्द्रनाथ गौड़
जुलाई–2000	1. योहान गुटेनबर्ग के 600 साल	विजयदत्त श्रीधर
	2. भूले बिसरे दिनों की कुछ यादें	कालीदत्त झा
	3. राष्ट्रभाषा हिन्दी और पत्रकारिता	शाहिद अली
	4. बहुमुखी प्रतिभा के धनी लाला देशबन्धु गुप्ता	
	5. निजी चैनलों का भविष्य	सुरेन्द्रप्रताप सिंह
अगस्त 2000	1. एक रपट विनाशकारी वर्षा की	सूर्यनारायण शर्मा
	2. हाकर – कोई खबर नहीं लेता खबर परोसने वाले की	शोभाराम श्रीवास्तव
	3. फर्क खबर और साबुन में	
	4. अखबारों का विकल्प बनता इंटरनेट	आलोक पुराणिक
	5. पूँजी की पत्रकारिता	प्रियदर्शन
	6. उपेक्षित होता खत्ताती और किताबत का हुनर	फिरोज बख्त अहमद
	7. मध्यप्रदेश की पत्रकारिता में निमाड़ का योगदान	जगदीश विद्यार्थी
सितंबर 2000	1. पीत पत्रकारिता – जिम्मेदार कौन	राकेश अचल
	2. शब्दसत्ता : मध्यप्रदेश की पत्रकारिता का प्रामाणिक इतिहास–डा. श्रीरंजन सूरिदेव	
	3. सामाजिक आन्दोलन में दलित समाचारपत्र, पत्रकारों का योगदान–सी.एस. बंजारी	
अक्टूबर 2000	1. पं. द्वारका प्रसाद मिश्र का पत्रकारी चिन्तन	संतोषकुमार शुक्ल
	2. पं. द्वारका प्रसाद मिश्र : स्मृति के झरोखे	निर्मल नारद
	3. अनुवादक की समस्याएँ और उससे अपेक्षाएँ	रमेशचन्द्र
नवम्बर 2000	1. दूरसंचार के वर्तमान परिदृश्य में जनसम्पर्क की भूमिका	डा. सुमन कुमार
	2. कौन बनेगा करोड़पति – जनसंचार के प्रभाव का अध्ययन	सोनाली डोंगरे
	3. मेरा पत्रकार जीवन : कुछ भूले बिसरे पृष्ठ	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'
	4. पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पत्रकार कला	रामवरण सिंह
दिसम्बर 2000	1. मीडिया में विदेशी पूँजी निवेश	प्रफुल्ल बिदवई
	2. अभी समय नहीं आया है अखबारों में विदेशी पूँजी बुलाने का	डा. वेदप्रताप वैदिक
	3. विदेशी मीडिया का भारत में क्या काम है	राजकिशोर
	4. मीडिया और समाजः चुनौतियाँ एवं अवसर	राधेश्याम शर्मा
	5. कार्टूनिस्टों के कार्टूनिस्ट जेफ मैकेनली	गोविन्द
	6. अखबार नवीसी	लाला लाजपत राय
	7. विज्ञापन की आचार संहिता	

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
जनवरी 2001	1. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी समाचारपत्रों की भाषा	कु. नीता व्यास
	2. क्राइम रिपोर्टिंग : सावधानी ही सुरक्षा	
	3. समय से साक्षात्कार करवाती लेखनी	भानू चौबे
फरवरी 2001	1. भारतीय पत्रकारिता के समक्ष नई चुनौतियाँ	संतोषकुमार शुक्ल
	2. सांस्कृतिक हमला भी साम्राज्यवाद का एक रूप	राधेश्याम शर्मा
	3. पत्रकारिता और प्रतिष्ठान	गिरिराज किशोर
	4. रूटर समाचार एजेन्सी	प्रेमनाथ चतुर्वेदी
	5. साइबर अपराधों से निपटने के लिए कानून	टी.के. विश्वनाथन
मार्च 2001	1. स्वाधीनता की अलख जगाई पत्रकारिता से	अपूर्वा जोशी
	2. इंटरनेट समाचार एजेंसियों का बदलता स्वरूप	हार्डी प्रौथमान
	3. कैमरे की आँख का दर्द और उसका प्रसारण	सुधीश पचौरी
	4. मीडिया का भूचाल और बाजारवाद	अजय तिवारी
	5. विकास संचार की अवधारणा एवं समस्याएँ	डा. गोपा बागची एवं शाहिद अली
अप्रैल 2001 (विशेषांक)	1. पत्रकारिता के प्रांगण में	द्वारका प्रसाद मिश्र
	2. पं. द्वारका प्रसाद मिश्र का पत्रकारी कौशल	संतोषकुमार शुक्ल
	3. संघर्षकालीन पत्रकारिता के सारथी पं. द्वारका प्रसाद मिश्र	राधेश्याम शर्मा
	4. पं. द्वारका प्रसाद मिश्र और पत्रकारिता	प्रो. शरद नारायण खरे
मई 2001 (विशेषांक)	1. उदन्त मार्त्तण्ड– हिन्दी का पहला अखबार	डा. मंगला अनुजा
	2. हिन्दी पत्रकारिता के आदि पुरुष पं. युगल किशोर शुक्ल	संतोषकुमार शुक्ल
	3. हिन्दी पत्रकारिता के 175 वर्ष	डा. मंगला अनुजा
	4. हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाएँ	राजेन्द्र कात्यायन
जून 2001	1. श्रमजीवी पत्रकारों में वह 'मसि–सम्राट'	सुरेश सरल
	2. पत्रकारिता का नया दौर	प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद
जुलाई – अगस्त 2001	1. क्या अखबार साबुन या टूथपेस्ट जैसे ब्रांड बन जाएँगे	राधेश्याम शर्मा
	2. हिन्दी समाचारपत्र और मेरे अनुभव	सम्पादकाचार्य पं. रुद्रदत्त शर्मा
	3. अलमोड़ा अखबार	डा. मंगला अनुजा
	4. खबर बनाने की हवस	
	5. हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की दशा और दिशा	रामनारायण उपाध्याय
सितंबर 2001 (विशेषांक)	1. मीडिया की विश्वसनीयता का सवाल	विजयदत्त श्रीधर
	2. पं. द्वारका प्रसाद मिश्र के अग्रलेख (कुल 62 टिप्पणियाँ)	
अक्टूबर 2001	1. भाषाई पत्रकारिता : साख का संकट	सुमन चट्टोपाध्याय
	2. आधुनिक पत्रकारिता में विलुप्त होता गंभीर चिंतन	मृणाल पाण्डे
	3. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता : समकालीन परिदृश्य	माताचरण मिश्र
नवम्बर 2001	1. संचार सूचना के क्रांतिकारी कदम	शंभुरतन अवस्थी
	2. भारत में जनसंचार की सबसे बड़ी लायब्रेरी	नदीम एस. अख्तर
	3. मीडिया की विश्वसनीयता का सवाल	प्रताप सोमवंशी
दिसम्बर 2001 (विशेषांक)	1. समग्र भारतीय पत्रकारिता (प्रस्तावना)	विजयदत्त श्रीधर
	2. भारत के समाचारपत्र और पत्रिकाएँ (1780–1900)	

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
जनवरी 2002	1. अखबारों का भविष्य आशाजनक किन्तु कई खतरे व चुनौतियाँ	राधेश्याम शर्मा
	2. पत्रकारिता के लिए वांछनीय आदर और आनन्द	राजेन्द्र शंकर भट्ट
	3. अभी अनेक मंजिलें तय करनी हैं हिन्दी पत्रकारिता को	अशोक मनवानी
	4. छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता शिक्षा की नई संभावनाएँ	शाहिद अली
	5. दक्षिण समाचार के पाठक वृंद	मुनीन्द्र
	6. पत्रकारिता नई चुनौतियाँ	डा. सुषमा चतुर्वेदी
फरवरी 2002	1. अभिव्यक्ति– स्वतंत्रता की आड़ में अश्लीलता, नग्नता के प्रदर्शन की अनुमति नहीं होनी चाहिए	चन्द्र मोहन
	2. सभी तरह के विज्ञापनों में नजर आ रही हैं अर्द्धनग्न युवतियाँ, ऐसा क्यों है?	विवेक त्यागी
	3. विज्ञापन में खोता बचपन	नीलमणि शमा
	4. मीडिया में मिशन और व्यवसाय का समन्वय कब होगा	अखण्ड प्रताप सिंह
	5. परिस्थितियों ने दिया है आर्थिक पत्रकारिता को नया स्वरूप	सचिन जैन
	6. एक निष्ठावान और समर्पित पत्रकार नितिन मेहता	राधेश्याम शर्मा
मार्च 2002	1. बापू पर पेटेण्ट का फन्दा	विजयदत्त श्रीधर
	2. आचार्य शिवपूजन सहाय और उनकी सम्पादन कला	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
	3. आधुनिक तकनीक तथा पत्रकारिता का बदलता स्वरूप	डा. सुषमा चतुर्वेदी
	4. विज्ञान पत्रकारिता में छात्रों का रुझान कैसे हो	दिलीप एम साल्वी
	5. अच्छे विज्ञापन ढूँढते रह जाओगे	कपिल शर्मा
	6. निजी चैनलों की धूम में खो गया दूरदर्शन	अनिल शर्मा
	7. सूचना जगत के 50 सिरमौर	
अप्रैल 2002	1. दंगे और मीडिया की हदें	विजयदत्त श्रीधर
	2. चौथा खम्भा	विजय भंडारी
	3. युवा और मीडिया	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	4. महिला पत्रकार : संभावनाओं के द्वार बंद न हों	मणिमाला
	5. पुस्तकों का महासागर	भावना सक्सेना
	6. राष्ट्रीय चेतना के शलाका पुरुष आचार्य द्विवेदी	संतोषकुमार शुक्ल
	7. संवाद कायम करने की कला है जनसम्पर्क	राजेश वत्स
मई 2002	1. विश्वसनीयता के लिए खबर की जाँच परख जरूरी : मार्क टुली	जय नागड़ा
	2. रिपोर्टिंग गुजरात	सुधीश पचौरी
	3. गुजरात के संदर्भ में पत्रकारिता से कुछ सवाल	दीनानाथ मिश्र
	4. तटस्थता की अपेक्षा में मीडिया से अ–तटस्थ सवाल	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	5. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और सम्पादन कला	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
	6. पत्रकारिता व जनसंचार के अधकचरे पाठ्यक्रम अब नहीं चलेंगे–राधेश्याम शर्मा	
जून 2002	1. पं. माधवराव सप्रे – मुझे मोक्ष प्यारा नहीं, मैं फिर जन्म लूँगा	विनोद शंकर शुक्ल
	2. देशी अखबारों में विदेशी पूँजी	राधेश्याम शर्मा
	3. पत्रकारिता माल बाजार मूल्य	राजकिशोर
जुलाई 2002	1. अक्षर ब्रह्म को जिन्स का जामा	विजयदत्त श्रीधर
	2. सूचना महामार्ग का करिश्मा	डा. अमर सिंह वधान
	3. अफगानिस्तान : प्रेस की आजादी की कारगर पहल	राधेश्याम शर्मा
	4. स्थानीय मीडिया अपनी भूमिका पर पुनर्विचार करे	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	5. अखबारों के बढ़ते पाठक	

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
अगस्त 2002 (विशेषांक)	1. कलम के सिपाहियों को सलाम 2. अखबारों में विदेशी पूँजी खतरे की घंटी	विजयदत्त श्रीधर उपेन्द्र वाजपेयी
सितंबर 2002	1. भारतीय पत्रकारिता का विश्व कोश / समीक्षा 2. प्रखर चिंतन और सटीक भविष्य दृष्टि / समीक्षा 3. भारतीय पत्रकारिता के माध्यम से स्वाधीनता संग्राम का स्मरण	शंभुदयाल गुरू डा. बी.एस. भंडारी राधेश्याम शर्मा
अक्टूबर 2002	1. बहुत खुशी कुछ संतोष 2. कलम के योद्धा – श्री के.ईश्वर दत्त का पत्रकारीय अवदान 3. झारखंड की हिन्दी तथा जनजातीय भाषाओं की पत्रकारिता 4. अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में जनसम्पर्क 5. जरूरी है शीर्षक पर गौर करना 6. राष्ट्रीय हितों पर बाजारी ताकतों व उपभोक्तावाद की दस्तक 7. संचार माध्यमों पर मंडराता शनि	राधेश्याम शर्मा संतोषकुमार शुक्ल अगम प्रकाश पुष्पेन्द्रपाल सिंह अशोक मनवानी राधेश्याम शर्मा कृ.शि. मेहता
नवम्बर 2002	1. पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य 2. सेटेलाइट से सम्प्रेषण की ओर समाचार समितियाँ	डा. मंगला अनुजा पुष्पेन्द्रपाल सिंह
दिसम्बर 2002 (विशेषांक)	1. छत्तीसगढ़ की पत्रकारिता 2. छत्तीसगढ़ : पत्रकारिता की संस्कार भूमि (इतिहास) 3. पत्रों में परिवर्तन की प्रतियोगिता 4. आतंकवाद की चुनौती और मीडिया	विजयदत्त श्रीधर डा. मंगला अनुजा पुष्पेन्द्रपाल सिंह राधेश्याम शर्मा
जनवरी 2003	1. प्रेस फिर निशाने पर 2. सप्रे संग्रहालय और समग्र भारतीय पत्रकारिता 3. एडीटर्स गिल्ड आफ इंडिया की पत्रकार आचार संहिता 4. समस्याओं और चुनौतियों से लगातार मजबूत होती हिन्दी पत्रकारिता	विजयदत्त श्रीधर कमलेश्वर पुष्पेन्द्रपाल सिंह
फरवरी 2003	1. आँकड़ों के तमाशों में उलझे अखबार 2. नीव के पत्थर– स्वराज 3. चैनल–केबल का गोरखधंधा 4. मध्यप्रदेश में जानकारी की स्वतंत्रता का कानून लागू 5. मस्तमौला पत्रकार सत्यनारायण	रवीन्द्र कुमार डा. मंगला अनुजा मुंजाल मेहता प्रो. कमल दीक्षित
मार्च 2003	1. समाचार बनाम विज्ञापन 2. पत्र लेखक बनारसी दास चतुर्वेदी 3. अग्रज–कल्प गुरुजी 4. राष्ट्र की अरक्षा, अस्मिता और राष्ट्र के समाचार पत्र	विजयदत्त श्रीधर जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी क्षेमचन्द सुमन राजेन्द्र शंकर भट्ट
अप्रैल 2003 (विशेषांक)	1. हिन्दी पत्रकारिता को चतुर्वेदी जी का योगदान 2. पं. बनारसीदास चतुर्वेदी से एक मुलाकात 3. तीन महारथियों के पत्र 4. विद्यार्थी जी का पत्र– माखनलाल जी के नाम 5. एक ऐतिहासिक पत्र	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी रामनारायण उपाध्याय रामविलास शर्मा
मई 2003	1. प्रजातंत्र की पक्षधर पत्रकारिता (नेपाल) 2. युद्ध के समाचार और समाचारों का युद्ध	पुष्पेन्द्रपाल सिंह रघुनाथप्रसाद तिवारी

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	3. समाचारपत्र संचालन के लक्ष्य और उपक्रम	राजेन्द्र शंकर भट्ट
	4. विश्वसनीयता का प्रश्न सबसे बड़ा	अरुण जेटली
	5. श्री कालिन आर सिंक्लेयर	निर्मल नारद
जून 2003 (विशेषांक)	1. जनसंचार क्रांति के युग में पत्रकारिता और समाचार माध्यमों की साख	राधेश्याम शर्मा
	2. हिन्दी पत्रकारिता : महिला सम्पादक और पत्रिकाएँ	डा. मंगला अनुजा
जुलाई 2003	1. सूचना क्रांति और समाचार माध्यमों की साख	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
	2. समाचार माध्यम : सत्य और साख का संकट	यशवन्त अरगरे
अगस्त 2003	1. दस्तावेज – पालागन	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
	2. पत्रकार बनने की योग्यता का निर्धारण क्या आवश्यक नहीं है?	अभय छजलानी
	3. व्यावसायिकता की होड़ हमें कहाँ तक ले जाएगी	रविशंकर प्रसाद
	4. इतना दंतहीन भी न हो कॉपीराइट एक्ट	रमेश नैयर
	5. टेलीगाँव : विकास संचार का नया मॉडल	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	6. दक्षिण भारत में हिन्दी अखबार का प्रकाशन भारतीय दिग्गज एकजुट	अशोक मनवानी
सितंबर 2003	1. अतिथि सम्पादन या सम्पादक अतिथि	महेश श्रीवास्तव
	2. समाज चिंतन से रहित अखबार कैसा?	माधव गडकरी
	3. पं. बनारसी दास चतुर्वेदी	निर्मल नारद
	4. स्क्रूटिनी : मुद्रण और पुनर्मुद्रण	महेन्द्र राजा जैन
	5. दैनिक 'ट्रिब्यून' : हिन्दी पत्रकारिता का एक गौरवपूर्ण अध्याय	विजय सहगल
अक्टूबर 2003	1. चुनाव कवरेज और भारत निर्वाचन आयोग	
	2. समाचार एवं न्यूज की अवधारणा में अंतर	डा. उमा त्रिपाठी
	3. पत्रकारिता की दशा और दिशा पर चिंता, चिंतन और सरोकार	विजयदत्त श्रीधर
नवम्बर 2003	1. विशेषाधिकारों का संहिताकरण जरूरी	विजयदत्त श्रीधर
	2. लोकतंत्र को मजबूत बना सकता है मीडिया	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	3. संसार का सबसे बड़ा प्रसारण तंत्र आकाशवाणी बेहाल	रघुनाथप्रसाद तिवारी
	4. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और आचार्य शिवपूजन सहाय–	डा. संतोष भदौरिया
	5. व्यापार नहीं हो सकता अखबार	राजकुमार सिंह
	6. डॉ. केसकर जिनका पत्रकारों पर विशेष ऋण है	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	7. पत्रकार– योद्धा जी.सुब्रह्मण्यम अय्यर	प्रो. हरिदत्त वेदालंकार
दिसम्बर 2003	1. अभिव्यक्ति का प्रजातंत्र	डा. प्रभाकर श्रोत्रिय
	2. कलायात्री की काल–यात्रा के 75 साल	शारदा पाठक
	3. विकासशील पत्रकारिता अर्थ, परिभाषा	डा. उमा त्रिपाठी
	4. 'प्रभात खबर' के चौदह बरस	डा. मंगला अनुजा
जनवरी 2004	1. हिन्दी और मास मीडिया	वर्तिका नन्दा
	2. पत्रकारिता की औपचारिक शिक्षा और कुछ प्रश्न	विजय सहगल
	3. साहित्य और पत्रकारिता के संगम	डा. धनंजय वर्मा

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
फरवरी 2004	1. बाजार के तराजू पर तुलती पत्रकारिता 2. चमत्कारिक प्रगति से लाभान्वित अखबारी जगत पर चौतरफा मार	वी.एन. नारायणन राधेश्याम शर्मा
मार्च 2004	1. पत्रकारिता जगत और कार्टून 2. अँगरेजी राज और बुन्देलखण्ड केसरी	डा. सु. नागलक्ष्मी डा. संतोष भदौरिया
अप्रैल 2004	1. पत्रकार समाचार व विचार को आपस में न मिलाएँ 2. पत्रकारिता की ऐतिहासिक क्रोशशिला	उमा भारती डा. श्रीरंजन सूरिदेव
मई–जून 2004 (विशेषांक)	1. हिन्दी दैनिक पत्रों के 150 साल 2. हिन्दी का पहला दैनिक समाचारपत्र 'समाचार सुधा वर्षण' 3. समाचारों के सफर के बीच दो दिन 4. एक पुरानी चिट्ठी और कुछ इतिहास चर्चा	विजयदत्त श्रीधर डा. मंगला अनुजा नारायण दत्त
जुलाई 2004	1. प्रेमचन्द की पत्रकारिता 2. नीव के पत्थर– गुजराती का मुम्बई समाचार 3. ब्रिटिश संसद में हुक्मचन्द नारद की निर्भीक लेखनी की अनुगूँज – निर्मल नारद	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी डा. मंगला अनुजा
अगस्त – सितंबर 2004	1. पत्रकारिता की शिक्षा और रोजगार 2. अखबारों के चटखारेदार नाम 3. नागरिक और सामुदायिक विषयों की रिपोर्टिंग 4. पत्रकारिता के कुछ कड़वे–मीठे प्रसंग	विजयदत्त श्रीधर डा. जगवीर सिंह बालकृष्ण राव जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
सितंबर – अक्टूबर 2004	1. प्रिंट मीडिया बनाम इलेक्ट्रानिक मीडिया 2. सुनो भई मीडिया 3. बाजारवादी मीडिया का यातना गृह 4. ऐसा तमाशा कभी न देखा	पुष्पेन्द्रपाल सिंह डा. प्रभाकर श्रोत्रिय कमलेश्वर वर्तिका नंदा
अक्टूबर – नवम्बर 2004	1. मीडिया के सामाजिक सरोकार 2. गंभीरता तिरोहित हो रही है 3. बुद्धिजीवियों का जनता से सम्पर्क खत्म हो गया है 4. बाजारवाद का कसता शिकंजा	विजयदत्त श्रीधर पुष्पेन्द्रपाल सिंह राम अल्हाद चौधरी डा. प्रभारानी गुप्ता
नवम्बर – दिसम्बर 2004	1. विज्ञापन से बदला विश्व 2. प्रिंट मीडिया का वैश्वीकरण तथा उसकी जवाबदेही 3. यशपाल के बहाने 'विप्लव' की बात	एच. शंकर और अंजुम विजय सहगल डा. संतोष भदौरिया
जनवरी 2005	1. माखनलाल चतुर्वेदी के बहाने पत्रकारिता के गुणधर्म की तलाश–विजयदत्त श्रीधर 2. चंद चर्चित नाम और उनके शुद्ध रूप 3. मीडिया समाज से ऊपर नहीं 4. बाबूजी का 'भारत मित्र'	नारायण दत्त कुन्दन आर. व्यास डा. मंगला अनुजा
फरवरी मार्च 2005	1. गणेश शंकर विद्यार्थी और प्रताप 2. प्रिंट पर बढ़ती इलेक्ट्रानिक मीडिया की निर्भरता 3. आस्थाओं के समंदर में मंथन 4. डा. विद्यानिवास मिश्र	सुरेश सलिल पुष्पेन्द्रपाल सिंह संजय द्विवेदी डा. मंगला अनुजा

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
अप्रैल 2005	1. सम्पादन कला के मर्मज्ञ : आचार्य शिवपूजन सहाय	श्रीरंजन सूरिदेव
	2. मुद्दा निजता की रक्षा बनाम जानने के अधिकार का	विश्वनाथ सचदेव
मई जून 2005	1. पहले मुद्रित अखबार की चतुश्शताब्दी	विजयदत्त श्रीधर
	2. हिन्दी बचेगी तो संस्कृति और देश बचेगा	भैरोसिंह शेखावत
	3. महाभारत का संजय बने रिपोर्टर	नामवर सिंह
	4. मीडिया किसके स्वर को मुखर करे	राधेश्याम शर्मा
	5. समय के साथ समर्पण करते हिन्दी समाचारपत्र	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	6. हिन्दी पत्रकारिता के दधीचि मामाजी	यशवंत इंदापुरकर
जुलाई 2005	1. राष्ट्रवाद और राष्ट्रभाषा के प्रखर प्रवक्ता माधवराव सप्रे	सच्चिदानंद जोशी
अगस्त 2005	1. पत्रकारिता : कुछ सवाल, कुछ जवाब	विजयदत्त श्रीधर
	2. कैसी हो फिल्म पत्रकारिता	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
सितंबर 2005 (विशेषांक)	1. क्षेत्रीय असंतुलन दूर करने में समाचारपत्रों की भूमिका	संतोष कुमार शुक्ल
	2. एक विलुप्त अखबार के सही नाम की पहचान	नारायण दत्त
	3. हिन्दी खेल पत्रकारिता तब और अब	पदमपति शर्मा
	4. पत्रकारिता की साख : कितने सुराख	कुलदीप नैयर
	5. व्यावसायिकता की दौड़ में विवेक को न खोने दें	विश्वनाथ सचदेव
	6. पाँच सौ पचपन वर्ष की जबान	कृ.शि. मेहता
	7. मीडिया में साहित्य की जगह ढूँढते रह जाओगे	गिरीश पंकज
	8. प्रेस का आभूषण है निष्पक्षता	ओंकार सिंह भदौरिया
	10. पूर्ण स्वराज्य के प्रेरक बाल गंगाधर तिलक	डा. धीरेन्द्र पाठक
	11. अपराधों का मनोरंजनीकरण करते टीवी चैनल	हरवंश दुआ
	12. गाँव, रोजगार और मीडिया	सुधीश पचौरी
अक्टूबर 2005	1. मीडिया की दिशाएँ और हमारी चिंताएँ	संतोषकुमार शुक्ल
	2. अमेरिकी मीडिया का असली चेहरा	राधेश्याम शर्मा
	3. भारत में कार्टून पत्रिकाओं का संक्षिप्त इतिहास	विनोद शंकर शुक्ल
	4. और ज्यादा प्रासंगिक हो गए हैं आबिद सुरती	गिरीश पंकज
	5. जो अच्छा है, उसे भी दिखाएँ	निर्मला देशपांडे
	6. जिस सम्पादक को बर्खास्त किया, उसी को सौंप दिया अखबार – डा. बालामुरली कृष्ण	
	7. विद्यार्थी जी अंतिम पत्र / दस्तावेज	
नवम्बर 2005	1. अब तो हद हो गई, कुछ करना ही होगा	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	2. बढ़ रहे हैं पढ़ने वाले	डा. नरेश पुरोहित
	3. सेवा और स्वार्थ साथ–साथ नहीं चलते	राजेन्द्र शंकर भट्ट
	4. कहाँ ले जाएगी हमें ये अंधी दौड़	अवधेश कुमार
	5. टेलीविजन से दूर होती आम आदमी की जिन्दगी	देवव्रत
	6. पत्रकारिता का नैतिक पतन : दोषी कौन?	डा. धीरेन्द्र पाठक
	7. अखबारों का गला घोंटने की कोशिश	डा. वेदप्रताप वैदिक
दिसम्बर 2005	1. उन्नीसवीं सदी से प्रकाशित हो रहे हैं 48 पत्र	
	2. भाषा के खामोश हत्यारे की भूमिका में उतरती पत्रकारिता	प्रभु जोशी
	3. अपने विश्वकोश के तापस	प्रेमकृष्ण टंडन
	4. मिशन से कमीशन तक की कहानी	विश्वनाथ सचदेव
	5. दस्तावेज / जय दुर्गे	भारत मित्र (1929)

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
जनवरी 2006 (विशेषांक)	1. हिन्दी में मानक अखबार की जरूरत	उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत
	2. पत्रकार अपनी आचार संहिता तय करें	डा. बलराम जाखड़
	3. मध्यप्रदेश की पत्रकारिता के 156 वर्षों का सफरनामा	डा. मंगला अनुजा
	4. छत्तीसगढ़ मित्र से अब तक का सफर	गिरीश पंकज
	5. पत्रकारिता का विस्तार हुआ, विश्वसनीयता घटी	डा. सुरेन्द्र पाठक
	6. उत्तरप्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता : समृद्ध परम्परा	डा. अर्जुन तिवारी
	7. श्री चन्द्र शर्मा और मतवाला	डा. मंगला अनुजा
फरवरी 2006	1. नौकरशाहों पर निर्भर सूचना के अधिकार की सफलता	संतोषकुमार शुक्ल
	2. पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा	आलोक मेहता
	3. स्टिंग आपरेशन : उचित या अनुचित	पुष्पेन्द्रपाल सिंह
	4. छवि तो दरकती ही, टूट जाता है विश्वास भी	कमलेश्वर
	5. न विशेषाधिकार हनन, न निजता में दखल	प्रशांत भूषण
	6. जनता द्रौपदी और नेता हैं दुर्योधन	वेदप्रताप वैदिक
	7. बीमार व्यवस्था को चाहिए बड़ा आपरेशन	विश्वनाथ सचदेव
	8. संसद की गरिमा पर आघात	ए. सूर्यप्रकाश
	9. खबरों की दुनिया में स्टिंग आपरेशन	राजीव सचान
	10. पहली अनैतिकता और दूसरी अनैतिकता	राजेन्द्र चतुर्वेदी
	11. राजनीतिक शुचिता का ढोंग	बलबीर पुंज
	12. ग्यारह दुर्योधन और एक युधिष्ठिर	आरती जैरथ
	13. हिन्दी पत्रकारिता के कीर्ति कलश : कर्पूरचन्द कुलिश	
मार्च 2006	1. विश्वसनीयता का सवाल और आचार संहिता	विजयदत्त श्रीधर
	2. मीडिया और सामाजिक सरोकार	कैलाशचन्द्र पंत
	3. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी एक सम्पूर्ण संपादक	अच्युतानंद मिश्र
अप्रैल 2006	1. एक भारतीय आत्मा : दादा माखनलाल चतुर्वेदी	विजयदत्त श्रीधर
	2. राज्य, समाज और मीडिया	विश्वनाथ सचदेव
	3. उसने लिखी कयामत की खबर	स्वदेश मंडावरी
	4. राजस्थान का अनसंग हिकी	डा. मनोहर प्रभाकर
	5. एक कला है फीचर लेख	अशोक मनवानी
	6. कैसे जिएँगे अखबार	संजय द्विवेदी
मई 2006 (विशेषांक)	1. समाचारपत्र और लोकमत	इन्द्र विद्यावाचस्पति
	2. सम्पादक	इन्द्र विद्यावाचस्पति
	3. सम्पादन कला	पं. शिवदत्त त्रिपाठी
जून 2006 (विशेषांक)	1. संचार माध्यम और नैतिकता	अच्युतानंद मिश्र
	2. मीडिया कम्युनिकेशन और एथिक्स	जस्टिस जी.एन.रे
	3. स्टिंग आपरेशन में नैतिकता का प्रश्न	विजय सहगल
	4. आपातकाल की आचार संहिता	
	5. पत्रकारों के लिए आचार संहिता एडीटर्स गिल्ड आफ इंडिया	
	6. प्रेस स्वतंत्रता की बदहाली	ज्ञान पाठक
	7. नेशनल एसोसिएशन आफ साइंस राइटर्स : कोड आफ एथिक्स	
	8. दुनिया के पहले खेल दैनिक पत्र के एक सौ दस वर्ष	
जुलाई 2006	1. खबरपालिका के आत्म नियमन की आवश्यकता	डा. बलराम जाखड़

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	2. खबरपालिका की आचार संहिता	रमेश नैयर
	3. खबरपालिका की आचार संहिता संविधान में निहित है	कृष्णचन्द्र मौली
अगस्त 2006	1. मीडिया स्वयं सीमा रेखा तय करे	अजीत भट्टाचार्य
	2. मीडिया की सामाजिक तस्वीर	अनिल चमड़िया
	3. आधुनिकता की बयार में परम्परागत माध्यमों की भूमिका	कृ.शि. मेहता
सितंबर 2006	1. समाज और प्रेस	आचार्य नरेन्द्र देव
	2. हिन्दी पत्रकारिता : कुछ प्रवृत्तियाँ, स्थितियाँ और चिंताएँ	नारायण दत्त
	3. समाचारपत्र का धर्म	बाबूराव विष्णु पराडकर
	4. भूमंडलीकरण, मुक्त व्यापार तथा भारतीय मीडिया की चुनौतियाँ	अच्युतानंद मिश्र
	5. भारतीय संदर्भ में भाषायी मीडिया की स्वतंत्रता	मृणाल पाण्डे
	6. हिन्दी पत्रकारिता में भारतीय संस्कृति	कैलाशचन्द्र पंत
	7. विदेशी मल्टीमीडिया का साम्राज्यवाद	प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
	8. सामाजिक परिदृश्य और मीडिया	डा. मनोहर प्रभाकर
	9. भाषायी अस्मिता के लिए कब खड़ी होगी हिन्दी पत्रकारिता	डा. शिवकुमार अवस्थी
	10. हिन्दी नई चाल में ऐसे ढली	विजयदत्त श्रीधर
	11. मीडिया पर छाया विश्वसनीयता का संकट	बलबीर दत्त
	12. इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा उसका नियमन	डा. हरबंश दीक्षित
	13. टेलीविजन समाचार चैनलों का मायाजाल	डा. देवव्रत
	14. मीडिया, समाज और बाजार	नृपेन्द्र शर्मा
	15. बाजार में मीडिया शिक्षा	संजय द्विवेदी
	16. हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता	डा. भगवानस्वरूप चैतन्य
	17. भारत में मीडिया शिक्षण की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ	डा. श्रीकान्त सिंह
	18. आंचलिक पत्रकारिता की बाजार बाधाएँ	शिवअनुराग पटैरया
	19. झंझावातों से जूझती हमारी सांस्कृतिक धरोहर	सन्तोष कुमार शुक्ल
अक्टूबर 2006	1. मीडिया की विश्वसनीयता घटना खतरनाक	राधेश्याम शर्मा
	2. नई शक्ल अख्तियार करते अखबार	मन्निका चोपड़ा
	3. पत्रकारिता और भाषायी संकट	भगवानसहाय त्रिवेदी
	4. स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत पत्रकारिता	रंजना चितले
नवम्बर 2006	1. शब्दावली का इतिहास	डा. ब्रजमोहन
	2. नई पीढ़ी के पत्रकारों से ईर्ष्या होती है	नारायण दत्त
	3. हिन्दी पत्रकारिता एवं साहित्य को समर्पित–बाबू बालमुकुंद गुप्त	विजय सहगल
	4. गाँव क्यों नहीं बनते टीवी चैनलों की खबर	देवव्रत
	5. तुलसीकृत नवीन पाण्डुलिपियों की प्रामाणिकता एवं महत्व	डा. भगवान स्वरूप चैतन्य
दिसम्बर 2006	1. साहित्यिक पत्रकारिता का संकट	प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
	2. सौ साल की पत्रिका : रहनुमा–ए–तालीम	फजल इमाम मलिक
	3. 1857 की क्रांति की सजग पड़ताल	डा. शिवकुमार अवस्थी
	4. 'ट्रिब्यून' पर डाक टिकट	डा. मनोहर प्रभाकर
	5. मीडिया पर सवार होती पीढ़ी	कृ.शि. मेहता
	6. विज्ञान पत्रकारिता : जरूरी है खोजी नजरिया	सुधांशु मिश्र
जनवरी 2007	1. भगवतीधर वाजपेयी, जिनके लिए पत्रकारिता सदैव रही है मिशन	राधेश्याम शर्मा
	2. वस्तु में बदलते समाचारपत्र	सूर्यनारायण शर्मा
	3. भारतीय मीडिया की टूटती सीमाएँ	शेवंती नैनन

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. 'कल्याण' के आठ दशक	डा. मंगला अनुजा
	5. भौतिकी के अध्ययन से सीखें जीवन जीने की कला	डा. कपूरमल जैन
	6. आम आदमी के दोहन में मीडिया भी पीछे नहीं	विष्णु त्रिपाठी
फरवरी–मार्च 2007	1. विज्ञान, समाज और पत्रकारिता	डा. जयन्त विष्णु नार्लीकर
	2. धरती को प्रभावित करता है अंतरिक्ष का मिजाज	डा. कपूरमल जैन
	3. पीड़कनाशी रसायन : पर्यावरण एवं भोज्य पदार्थों पर दुष्प्रभाव	डा. शीलेन्द्र कुलश्रेष्ठ
	4. धरा एवं पर्यावरण	नरेश नारद
	5. वैज्ञानिक मानसिकता और विज्ञान लेखन	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
	6. भूजल–कुछ अनछुए मुद्दे	के.जी. व्यास
	7. त्रिसंवाद : स्वास्थ्य संचार का प्रभावी मॉडल	पुष्पेन्द्र पाल सिंह
	8. अंधविश्वास की मारी दुनिया बेचारी	निशा दवे
	9. मौसम के तल्ख संकेत	सुधांशु मिश्र
	10. पर्यावरण चेतना	डा. पुरुषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती
	11. कार्बनिक रसायनों से फैलता प्रदूषण	सुरेश गर्ग
	12. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी – कमलेश्वर	डा. मंगला अनुजा
अप्रैल 2007	1. वैज्ञानिक चेतना और संचार माध्यम	डा. राधारमण दास
	2. विज्ञान संचार : चुनौतियाँ, तकनीक और कौशल	पुष्पेन्द्र पाल सिंह
	3. हिन्दी विज्ञान लेखन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका	डा. एन.के. तिवारी
	4. विज्ञान पत्रकारिता में बाधक है बाजार	शिवअनुराग पटैरया
मई 2007	1. आज भी गूँजती है केसरी की गर्जना	सच्चिदानंद जोशी
	2. आदि पत्रकार : श्री नारद	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
	3. रघुवीर सहाय के लिए पत्रकारिता के मायने	विष्णु राजगढ़िया
	4. सवाल शील–अश्लील का	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	5. बदनामी से कमाने की कोशिश	सूर्यनारायण शर्मा
	6. पुण्यस्मरणम्	सूर्यनारायण शर्मा
	7. सूचनाएँ बनती हैं सामाजिक बदलाव में मददगार	अशोक मनवानी
	8. भारतीय फोटोग्राफी : कल से आज तक	वामन ठाकरे
जून 2007	1. शुद्ध हिन्दी और हिन्दी पत्रकार	नारायण दत्त
	2. कोलकाता में हुआ था 'समाचार–सूर्य' का उदय	विजयदत्त श्रीधर
	3. ऐसा था हिन्दी का पहला दैनिक अखबार	विजयदत्त श्रीधर
	4. हमारा संजीव	रघुराज सिंह
जुलाई 2007	1. मीडिया में स्त्री विमर्श	
	2. एक बड़, शाखा और जड़	प्रभाष जोशी
अगस्त 2007	1. खबरों को हाशिए पर पहुँचाती पत्रकारिता	संतोषकुमार शुक्ल
	2. वैश्वीकरण, मीडिया और हिन्दी	अच्युतानंद मिश्र
	3. हिन्दी पत्रकारिता के दीपस्तंभ	ललित सुरजन
	4. आँखों देखा गदर	सूर्यनारायण शर्मा
	5. मुद्रित माध्यम का विकास, शंका एवं समाधान	कृ.शि. मेहता
	6. मीडिया : टोपी से कबूतर नहीं निकाल सकता	बसंत कुमार तिवारी
सितंबर 2007	1. भाषा को भ्रष्ट करने का षड्यंत्र	डा. प्रभाकर श्रोत्रिय
	2. सनसनी पर सवार न्यूज चैनल	दीपक व्यास

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	3. हिन्दी दैनिक पत्रों के क्षेत्रीय परिशिष्ट	माधव हाड़ा
	4. जबलपुर की पत्रकारिता : एक मूल्यांकन	प्रो. उमा त्रिपाठी, डा. धीरेन्द्र पाठक
	5. कहीं ये 'डमी' विज्ञापन तो नहीं	सूर्यनारायण शर्मा
अक्टूबर – नवंबर 2007	1. बिल्ली के गले में घंटी कैसे बँधे ?	नारायण दत्त
	2. अपनी अपनी मजबूरी नहीं अपनी अपनी पसंद	प्रभाष जोशी
	3. अभिव्यक्ति के खतरे उठाने होंगे	अजय तिवारी
	4. टीवी चैनलों की मर्यादा का सवाल	आशुतोष अग्निहोत्री
	5. यह भटकाव मीडिया को कहाँ ले जाएगा	राधेश्याम शर्मा
	6. मीडिया खुद अपना वॉचडॉग बनाए	आनंद प्रधान
	7. राज्य, समाज और मीडिया	विश्वनाथ सचदेव
	8. अभिव्यक्ति की आजादी पर पहरे	ए.जी. नूरानी
	9. चुनौतियों में मजबूती से डटे भाषाई अखबार	रॉबिन जैफ्रे
	10. हिन्दी पत्रकारिता : ये कौन–सी भाषा है भाई ?	शिशिर द्विवेदी
	11. कविवर रहीम और उनका पुस्तकालय	श्यामनारायण कपूर
दिसम्बर 2007	1. हिन्दी केसरी	डा. मंगला अनुजा
	2. क्रांतिमुखी पत्रकारिता का प्रतीक : नृसिंह	डा. रामशंकर द्विवेदी
	3. मालवा के पत्रकार डॉ. प्रभाकर माचवे	राजेन्द्र उपाध्याय
	4. हिन्दी में स्थानीय पत्रकारिता	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
	5. जनसत्ता पच्चीसवें साल में	प्रभाष जोशी
	6. मीडिया का आत्म–अनुशासन	जगमोहन
जनवरी 2008	1. सूचना का अधिकार और आम आदमी	संतोषकुमार शुक्ल
	2. गाँव की कलम : डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र के कृतित्व से मुकम्मल पहचान	डा. मंगला अनुजा
	3. जनसंचार के माध्यम एवं तकनीकी लेखन	राधेश्याम शर्मा
	4. हमारी–आपकी पत्रकारिता	डा. सोनाली नरगुन्दे
	5. 'मतवाला' और उसकी भूमिका	हरिशंकर परसाई
फरवरी 2008	1. बाबू शिशिरकुमार घोष	महावीर प्रसाद द्विवेदी
	2. कलम आज उनकी जय बोल	डा. संतोष सिंह भदौरिया
	3. विज्ञान पत्रकारिता : अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ	वी.के. जोशी
	4. मीडिया में मीडिया	सोनाली नरगुन्दे
	5. जनसम्पर्क सिद्धांत एवं व्यवहार	बच्चन सिंह
मार्च 2008	1. हिन्दी पत्रकारिता : भाषा का प्रश्न	डा. कृष्णबिहारी मिश्र
	2. करंजिया का कोना खाली नहीं हुआ है	राजेन्द्र शंकर भट्ट
	3. पत्रकारिता की आचार संहिता एवं प्रेस काउंसिल की भूमिका	डा. धीरेन्द्र पाठक
	4. वैश्वीकरण ने बदला मीडिया का चेहरा	गोपा बागची
अप्रैल 2008	1. हिन्दी पत्रकारिता को कानपुर की देन	विजयदत्त श्रीधर
	2. पत्रकार भगत सिंह	आशीष दशोत्तर
	3. मीडिया में विज्ञान और तकनीकी विषयों का कवरेज अपेक्षा से एक चौथाई ही होता है	
	4. हिन्दी में लोकप्रिय विज्ञान लेखन	डा. कपूरमल जैन
	5. वैज्ञानिक जानकारी के बिना	दिलीप एम. साल्वी
	6. नर्मदा को प्रदूषण मुक्त रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है	अमृतलाल वेगड़

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
मई 2008	1. सप्रे संग्रहालय में हस्तलिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियों का खजाना	
	2. इसलिए शुरू हुआ था 'उदन्त मार्त्तण्ड'	नारायण दत्त
	3. मीडिया की तीन मुख्तलिफ छवियाँ	रमेश नैयर
	4. अमृत बाजार पत्रिका	सूर्यनारायण शर्मा
	5. हिन्दुस्तान : सम्पादक के संस्मरण	मुकुटबिहारी वर्मा
	6. पत्रकारिता के क्षेत्र में गोपाल राम गहमरी का अवदान	शुकदेव प्रसाद
जून 2008	1. एक अनन्य सत्कर्म है यह	डा. विजयबहादुर सिंह
	2. संकल्प के चरितार्थ होने का रजत–प्रसंग	ध्रुव शुक्ल
	3. बेजोड़ संग्रहालय	शंभुदयाल गुरु
	4. Treasure-trove for knowledge seekers	दीपक तिवारी
	5. पत्रकारिता का तीर्थ : सप्रे संग्रहालय	प्रो. उमा त्रिपाठी
	6. मैंने सप्रे शोध संस्थान को क्यों चुना ?	डा. उर्मिला शिरीष
	7. मीडियाकर्मियों और विशेषज्ञों का संवाद मंच	सुधांशु मिश्र
	8. माधवराव सप्रे का महत्व	मैनेजर पाण्डेय
जुलाई 2008	1. मीडिया, भाषा और साहित्य	मनोज श्रीवास्तव
	2. मीडिया का भविष्य और भविष्य का मीडिया	उमेश त्रिवेदी
	3. पत्रकारिता की भाषा : स्वरूप और प्रवृत्तियाँ	प्रो. राममोहन पाठक
अगस्त 2008	1. हिंदी मीडिया कहाँ जा रहा है	उमेश अग्निहोत्री
	2. झारखंड की सबसे पुरानी पत्रिका 'घर बंधु'	प्रवीण
	3. हिंदी पत्रकारिता : तब और अब	राजशेखर व्यास
	4. रूप रंग बदला, पर सरोकार नहीं	शिवअनुराग पटैरया
	5. 'हिन्दोस्थान' का इतिहास	बदरीनारायण तिवारी
	6. विज्ञान गल्प लेखक आर्थर सी. क्लार्क	प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव
	7. माधवराव सप्रे और हिंदी नवजागरण	डा. शाहिद अली
	8. मराठी पत्रकार र.वि. शिरढोणकर की जन्मशताब्दी	
सितंबर 2008	1. होयलेनरसीपुर योगनरसिंहम् शारदा प्रसाद	जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
	2. भारत की खोजी पत्रकारिता में कानूनी छानबीन होती ही कहाँ है – एच.वाइ. शारदा प्रसाद	
	3. गाँव से विमुख मीडिया	कुरबान अली
	4. ग्रामीण पत्रकारिता के रोड़े	अनिल चौधरी
	5. ग्रामीण खबरों की समझ	जेब अख्तर
	6. कस्बाई पत्रकारिता की चुनौतियाँ	आशेंद्र सिंह
	7. पत्रकारिता का विस्मृत अध्याय – 'सचित्र संसार'	डा. रामशंकर द्विवेदी
	8. संपादक के पुरुषार्थ का परिचायक 'विक्रम'	राजशेखर व्यास
अक्टूबर – नवंबर 2008	1. पत्रकार की दीक्षा	काका कालेलकर
	2. भाषायी अराजकता के अपराधी	संत समीर
	3. व्यवसाय का हथियार बन गई सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता–पुण्यप्रसून वाजपेयी	
	4. मीडिया की सक्रियता और निजता का हनन	सुधांशु रंजन
	5. नई उछाल पर मीडिया और मनोरंजन उद्योग	उज्ज्वल के. चौधरी
	6. जनसम्पर्क : एक अध्ययन	कृ.शि. मेहता
	7. वरिष्ठ पत्रकार श्री यशवंत अरगरे	राधेश्याम शर्मा
	8. साहित्यिक पत्रकारिता के गौरव पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	डा. मनोहर प्रभाकर
	9. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
दिसंबर 2008	1. मुंबई पर आतंकी हमला और मीडिया	
	2. संवेदनशील पत्रकारिता	गुलाब कोठारी
	3. सत्य की परख से जुड़ी है मीडिया की मर्यादा	विजय सहगल
	4. वी.टी. जोशी : अजातशत्रु पत्रकार	राधेश्याम शर्मा
	5. हिन्दी विज्ञान साहित्य सृजन में तकनीकी शब्दावली की भूमिका	–बलराम यादव
	6. विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में भारत का एक और सधा कदम : चंद्रयान–I	कपूरमल जैन
जनवरी 2009	1. भाषा, संस्कृति और मीडिया	विजयदत्त श्रीधर
	2. भाषा, संस्कृति और मीडिया	अच्युतानंद मिश्र
	3. हिन्दी बोलने में शर्म कैसी	मार्क टली
	4. शुद्ध हिन्दी लिखें	गगनेन्द्र केडिया
	5. लाइव कवरेज : किस कीमत पर	भारत डोगरा
	6. इंटरनेट बना भस्मासुर	अरुण भगत
	7. आज भी प्रासंगिक हैं पराडकर	कुमार प्रतीक
	8. विज्ञान पत्रकारिता में शिक्षा और सेवा के अवसर	प्रेमचंद्र श्रीवास्तव
फरवरी 2009	1. 'सैनिक समाचार' के सौ वर्ष	डा. मंगला अनुजा
	2. शब्द ब्रह्म के आराधक : आचार्य रामचंद्र वर्मा	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
	3. आत्मसंयम की आवश्यकता	सुधांशु रंजन
	4. सदियों बाद मिला गैलीलियो को सम्मान	अमिताभ पांडेय
मार्च 2009	1. समाचार मीडिया में विदेशी पूँजी के निहितार्थ	आनंद प्रधान
	2. अँगरेजी हमारी राष्ट्रभाषा कभी नहीं हो सकती	कर्मेन्दु शिशिर
	3. आतंकवाद से टक्कर में मीडिया का अहम रोल	राधेश्याम शर्मा
	4. विज्ञान संचार : दृष्टि और दायरा	डा. मनोज पटैरिया
अप्रैल–मई 2009	1. आचार्य शिवपूजन सहाय की वर्त्तनी नीति	डा. श्रीरंजन सूरिदेव
	2. हिंदी विज्ञान पत्रकारिता की संभावित विधाएँ	बलराम यादव
	3. गतिशील लोकतंत्र और अखबार	अल्बर्ट आर. हंट
	4. मीडिया की साख पर सवालिया निशान	हसन सुरूर
	5. अखबारी उद्योग पर गहराता संकट	राधेश्याम शर्मा
जून 2009	1. जल, जीवन और मीडिया	विजयदत्त श्रीधर
	2. चुनाव में बिकी प्रेस खतरे में है – खबरदार!	प्रभाष जोशी
	3. हिन्दी समाचारपत्र : संकट और चुनौतियाँ	प्रमोद जोशी
	4. मीडिया का भविष्य, भविष्य का मीडिया	हरिवंश
	5. पत्रकारिता बड़े बदलाव की भूमिका बनाए	रामबहादुर राय
	6. मीडिया का भविष्य और भविष्य का मीडिया	सच्चिदानंद जोशी
	7. भारत की माटी से लीजिए भाषा	बालकवि बैरागी
	8. मीडिया और साहित्य में 'स्व' और 'देश' बहाल हो	डा. विजयबहादुर सिंह
	9. मीडिया, भाषा और साहित्य	डा. आर. शौरिराजन
	10. मीडिया, भाषा और साहित्य	डा. रामशंकर द्विवेदी
जुलाई 2009	1. जल, जीवन और मीडिया	ललित सुरजन
	2. जल के महत्व को पहचानें	गिरिजाशंकर
	3. आइए, अपनाएँ एक पानीदार समाज	संजय द्विवेदी
	4. विस्मृति से उपजी व्यथा	शिव अनुराग पटैरया

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	5. भोपाल की झीलों का संरक्षण	डा. शीलेन्द्र कुलश्रेष्ठ
	6. जलवायु परिवर्तन	डा. डी.पी. दुबे
	7. लोक संस्कृति और नर्मदा	अमृतलाल वेगड़
	8. वह काला दिन	सूर्यनारायण शर्मा
	9. विज्ञान समाचार और विज्ञान संवाददाता	प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव
अगस्त 2009	1. पत्रकार प्रेमचंद	कृपाशंकर चौबे
	2. साहित्य : सृजन, विमर्श और पत्रकारिता	रमेश दवे
	3. कई दौर से गुजरी है इंदौर में पत्रकारिता	सूर्यकांत नागर
	4. विज्ञान संचार	डा. अर्चना पाण्डेय
सितंबर 2009	1. स्टिंग ऑपरेशन को मान्यता मिले	जोगिंदर सिंह
	2. भारतीय प्रेस परिषद द्वारा जारी पत्रकारिता के आचरण के मानक	
	3. जनसम्पर्क कर्मी की भूमिका – एक चुनौती	कृ.शि. मेहता
	4. भाषा तकनीकी की गुलाम हो जाएगी	
	5. शोधपत्र – ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विज्ञान विषय की शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''	माधुरी श्रीधर
अक्टूबर 2009	1. कई पहचानों वाला व्यक्तित्व	नारायण दत्त
	2. साहित्य, पत्रकारिता और मीडिया	अच्युतानंद मिश्र
	3. पायोनियर की खरीदी का सफर	सूर्यनारायण शर्मा
	4. तमिल पत्रकारिता	डा. र. शौरिराजन
	5. पंडित सुंदरलाल का अग्निधर्मा पत्र 'कर्मयोगी'	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
नवम्बर 2009	1. मीडिया की चिंतनीय स्थिति	संतोषकुमार शुक्ल
	2. प्रभाष जोशी : एक बहाव बिना पड़ाव	राजशेखर व्यास
	3. हिंदी विज्ञान लेखन के पुरोधा श्री गुणाकर मुले	मंजुलिका लक्ष्मी
	4. अखबारी दुनिया में नए चिंतन–मनन का दौर	राधेश्याम शर्मा
	5. दिशा और दशा से बेखबर हिंदी पत्रकारिता	आदिल खान
	6. विज्ञान पत्रकारिता की उपेक्षा क्यों ?	डा. शिवगोपाल मिश्र
	7. Speech on the Press Bill (4-4-1910)	मदनमोहन मालवीय
	8. हिंदी के प्रचार–प्रसार में सिनेमा की भूमिका	डा. तुकाराम दौंड
दिसम्बर 2009 (विशेषांक)	1. स्मृति शेष श्री प्रभाष जोशी	विजयदत्त श्रीधर
	2. पराडकर की परम्परा के पत्रकार	महाश्वेता देवी
	3. एक परंपरा का अवसान	अशोक वाजपेयी
	4. गांधी परंपरा की कलम	कुमार प्रशांत
	5. एक निर्भीक पत्रकार का चले जाना	वेदप्रताप वैदिक
	6. दीन–हीन के हेत	अरुण माहेश्वरी
	7. एक युग का अवसान	आलोक तोमर
	8. सबकी मशाल, सबके लिए मिसाल	प्रियदर्शन
	9. हाथ का लिखा, दिल के बोल	रवीश कुमार
	10. पत्रकारिता की कसौटी थे प्रभाष जोशी	राजेन्द्र धोड़पकर
	11. जहँ–जहँ डोलत, सो ही परिक्रमा	सुरेश शर्मा
	12. पाठकों का परिवार	रवींद्र त्रिपाठी
	13. बीसम–बीस के खबरनवीस	सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी
	14. दिल से जीते थे	विनोद खेतान

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	15. आचरणधर्मी पत्रकार	श्यामलाल चतुर्वेदी
	16. प्रभाष जोशी : जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को नए तेवर, ओज एवं अभिव्यक्ति दी	राधेश्याम शर्मा
	17. सावधान, पुलिया संकीर्ण है	प्रभाष जोशी
	18. क्रिकेट को फुटबाल बना दिया है	प्रभाष जोशी
	19. जीने का सामान	प्रभाष जोशी
जनवरी 2010	1. सवाल मीडिया के सार्थक अस्तित्व का है	विश्वनाथ सचदेव
	2. समाचारपत्रों का भविष्य : चुनौतियाँ और संभावनाएँ	सुधांशु मिश्र
	3. बापू का पहला रेडियो प्रसारण	बृजमोहन गुप्त
	4. गांधीजी पर 150 देशों के 381 डाक टिकट	रूपकिशोर पण्डया
	5. पर्यावरण संचार	डा. मनोज पटैरिया
	6. नदियों में फिर से प्राण प्रतिष्ठा करें	अमृतलाल वेगड़
	7. भारतीय चिंतन परंपरा में जल	कलानाथ शास्त्री
	8. विश्वव्यापी जल संकट	सुखदेव प्रसाद
	9. पर्यावरण के दस प्रहरी	ज्ञानेन्द्र रावत
फरवरी 2010	1. देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव	वीरेन्द्र जैन
	2. खबरों पर सौदेबाजी की प्रवृत्ति निंदनीय	रचना पाटीदार
मार्च 2010	1. पत्रकारिता की चुनौतियाँ	विजयदत्त श्रीधर
	2. पत्रकारिता	रामानंद चट्टोपाध्याय
	3. समाचारपत्रों का आदर्श	बाबूराव विष्णु पराडकर
	4. अप्प दीपो भव	स्वामी श्रद्धानंद
	5. पत्रकार : मानस और दायित्व	माखनलाल चतुर्वेदी
	6. हिंदी का पत्रकार	
	7. पत्रकारिता क्या और कैसे ?	गणेशशंकर विद्यार्थी
	8. शुद्ध संपादकीय वातावरण तैयार करने की आवश्यकता	
अप्रैल 2010	1. मीडिया की आजादी और आत्मानुशासन	जवाहरलाल नेहरू
	2. समाचार बिकाऊ है, बोलो खरीदोगे	दीनानाथ मिश्र
	3. विज्ञापन का खबरों के रूप में छपना	धर्मवीर चंदेल
	4. हम बी.बी.सी. से बोल रहे हैं	राजशेखर व्यास
	5. नईधारा के 60 वर्ष	डा. ध्रुवकुमार
मई 2010	1. हिंदी को देवनागरी लिपि की जगह रोमन लिपि में लिखने का सुझाव बेहूदा	उमेश चतुर्वेदी
जून 2010	1. धर्मवीर भारती की पत्रकारिता	धनंजय चोपड़ा
	2. विकसित देशों में अखबारों का अस्तित्व खतरे में	राधेश्याम शर्मा
जुलाई 2010	1. विज्ञान पत्रकारिता एवं पर्यावरण	डा. शिवगोपाल मिश्र
	2. जल संकट एवं मीडिया	के.जी. व्यास
	3. जैव विविधता और मीडिया	डा. शीलेन्द्र कुलश्रेष्ठ
अगस्त 2010	1. कहाँ नहीं है विज्ञान!	अमृतलाल वेगड़
	2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पत्रकारिता में व्यावहारिक एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण की आवश्यकता	निमिष कपूर

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	3. ग्लोबल वार्मिंग और मीडिया	डा. कपूरमल जैन
	4. विकास और पर्यावरण	डा. पुरुषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती
	5. जल व स्वच्छता की विज्ञान साक्षरता	पम्पोश कुमार
	6. भाषा, विज्ञान और समाज	डा. दिनेश मणि
सितंबर 2010	1. पत्रकारिता के वे दिन, वे लोग	प्रयाग शुक्ल
	2. पत्रकारिता की त्रयी	अशोक वाजपेयी
	3. हिंदी पत्रकारिता की आदर्श त्रिमूर्ति	आलोक मेहता
	4. तीनों को आपस में जोड़ती थी पत्रकारिता	मधुसूदन आनन्द
	5. जमीन और जड़ों से जुड़े संपादक	अजित कुमार
	6. अहंकार पर आचार संहिता का अंकुश	
	7. द्विवेदी परंपरा के साहित्य–संपादक श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'–डा. मंगला अनुजा	
	8. एक दिन और दो तरह की खबरें	विष्णु नागर
	9. लोक परंपराओं में विज्ञान	राजेन्द्र हरदेनिया
	10. विज्ञान पत्रकारिता	डा. मनोज पटैरिया
	11. साँस्कृतिक माध्यमों द्वारा विज्ञान संचार	
अक्टूबर 2010	1. महात्मा और गुरुदेव	अमृतलाल वेगड़
	2. आमि चिर विद्रोही अशान्त!	विष्णु पण्ड्या
	3. पेड न्यूज पर मीडिया की चुप्पी	विश्वनाथ सचदेव
	4. पत्रकारिता की कितनी अहमियत रह गई है ?	विजय सहगल
	5. मीडिया में महिला संबंधी खबरों पर नई बहस	राधेश्याम शर्मा
	6. अब भी ऐसा होता है ..... हो सकता है!	प्रो. राममोहन पाठक
	7. खबर को खोने का दौर ...	अनिल चमड़िया
	8. प्रिंट मीडिया का भविष्य बनाम भविष्य का प्रिंट मीडिया	प्रमोद भार्गव
	9. ग्लोबल वार्मिंग – जलवायु के बदलते तेवर	के.जी. व्यास
नवम्बर 2010	1. बड़े अखबारों में हिन्दी के साथ बाजारू बरताव	विजयदत्त श्रीधर
	2. फ्रांस का 'ल मांद' चढ़ गया आर्थिक संकट की भेंट	राधेश्याम शर्मा
	3. छगन खेराज वर्मा	विष्णु पण्डया
	4. जन सामान्य के लिए जीव विज्ञान लेखन	प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव
	5. भाषा, संवेदना और विज्ञान लेखन	डा. दिनेश मणि
	6. डॉ. एस. कृष्णास्वामी : डॉक्यूमेंट्री आंदोलन के स्तंभ	साक्षात्कार–अनुज सिन्हा
दिसम्बर 2010	1. आईना दिखाने वाले अब आईने के सामने	विजयदत्त श्रीधर
	2. झारखंड की पत्रकारिता और उसकी विकास यात्रा	बलवीर दत्त
	3. शासकीय समाचारों का बेहतर प्रस्तुतीकरण संभव है	आदिल खान
	4. स्टिंग ऑपरेशन पर सच्चाई की मोहर	प्रमोद भार्गव
जनवरी 2011	1. स्मरण कमलेश्वर	राजशेखर व्यास
	2. इंटरनेट पत्रकारिता के नए नायक जूलियन असांजे	अशोक शर्मा
	3. विकिलीक्स ने खोजी पत्रकारिता को नया आयाम दिया है	सुप्रिया अवस्थी
	4. मालव–मयूर की उत्तराधिकारी त्यागभूमि	डा. आदर्श शर्मा
	5. पोस्ट आफिस आजादी के बाद	शरद जोशी
फरवरी 2011	1. मीडिया में भ्रष्टाचार	परंजय गुहा ठाकुरता
	2. वह जो पेड न्यूज नहीं है	विजय प्रताप
	3. क्या ऑनलाइन पत्रकारिता 'सच' की वाहक बन पाएगी ?	प्रमोद भार्गव

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. रेडियो सिलोन के वो सुनहरे दिन	मोहम्मद जाकिर हुसैन
	5. महामना मदनमोहन मालवीय	प्रो. राममोहन पाठक
	6. प्रकृति के साथ समन्वय जरूरी	चंडी प्रसाद भट्ट
	7. भाषा और पर्यावरण	अनुपम मिश्र
मार्च 2011	1. मिस्र की जन क्राँति में नए मीडिया की भूमिका	विजयदत्त श्रीधर
	2. ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी	जयंत विष्णु नार्लीकर
	3. मेरी पत्रकारिता	नारायण दत्त
	4. कार्टूनिस्ट विदूषक नहीं	आर.के. लक्ष्मण
	5. हिन्दी पत्रकारिता में व्यंग्य	डा. मंगला अनुजा
	6. सूचना के अधिकार की धार को कमजोर करने के कुचक्र	अशोक शर्मा
अप्रैल 2011	1. तरुवर फल नहिं खात हैं ...	विजयदत्त श्रीधर
	2. ग्रामीण पत्रकारिता के विविध आयाम	विजय चितौरी
	3. महापंडित राहुल सांकृत्यायन	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
	4. सरकारी कैद में 'आजाद' पत्रकारिता	विजय प्रताप
	5. फुकुशिमा परमाणविक त्रासदी	डा. कपूरमल जैन
मई 2011	1. क्या पेड न्यूज पर नियंत्रण हो पाएगा	गौरीशंकर राजहंस
	2. आंदोलन मीडिया को भी बदल देगा	पुण्य प्रसून वाजपेयी
	3. भविष्य का भारत : मीडिया की भूमिका	प्रभु जोशी
	4. भविष्य का भारत : मीडिया की भूमिका	अच्युतानंद मिश्र
	5. साँसों की जद्दोजहद और मीडिया–कर्म	प्रो. राममोहन पाठक
जून 2011	1. ऐसे थे सप्रे महाराज	मावलीप्रसाद श्रीवास्तव
	2. प्रो. पृथ्वीपाल सिंह	विजय सहगल
	3. सवाल मीडिया की साख का	डा. मनोहर प्रभाकर
	4. पेड़ों की असलियत	डा. राधावल्लभ त्रिपाठी
	5. नदी जल नीति में छुपा है सूखती नदियों का पुनर्जीवन	के.जी. व्यास
	6. जलवायु परिवर्तन	शुकदेव प्रसाद
	7. विज्ञान लेखक डॉ. शिवगोपाल मिश्र	डॉ. दिनेश मणि
जुलाई 2011	1. पत्रकारिता	न्यायमूर्ति देवदत्त माधव धर्माधिकारी
	2. पत्रकारों की कत्लगाह बनता पाकिस्तान	अभिषेक रंजन सिंह
	3. साहित्य, देश और पत्रकारिता	प्रो. राममोहन पाठक
	4. प्रथम हिंदी शब्दकोश के निर्माता : मुंशी राधालाल माथुर	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
	5. आभासी मीडिया और क्रांति की संभावना	प्रमोद भार्गव
	6. यादें प्रभाष जी की	डा. मनोहर प्रभाकर
	7. प्रभाष दीपो भव	रामबहादुर राय
	8. सात काम सौंप गये प्रभाष जी	के.एन. गोविंदाचार्य
	9. प्रभाष जोशी : मेरी पाठशाला	दिनेश शर्मा
	10. सबका पानी, सबके लिए पानी	डा. शिवकुमार अवस्थी
	11. जल स्वराज के लिए जल सत्याग्रह	डा. शिवकुमार अवस्थी
	12. 'पहला संपादकीय' : सहेजने लायक दस्तावेज	डा. आर. रत्नेश
अगस्त 2011	1. 'न्यूज ऑफ द वर्ल्ड' का सबक	विजयदत्त श्रीधर
	2. मर्डोक के 'न्यूज ऑफ द वर्ल्ड' का अंत	राधेश्याम शर्मा
	3. हिन्दी पत्रकारिता की पिछली सदी	डा. मनोहर प्रभाकर

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	4. यह कालिख हमें ले डूबेगी !	संजय द्विवेदी
	5. संस्कारधानी के दो संपादक	निर्मल नारद
	6. पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान की ओर	डा. दिनेश मणि
सितंबर 2011	1. हिन्दी हितैषी हिन्दीतर भाषियों को नमन	विजयदत्त श्रीधर
	2. हिन्दी में वर्तनी की समस्या और समाधान	संत समीर
	3. विज्ञान लेखन और भाषा	डा. दिनेश मणि
अक्टूबर 2011	1. महात्मा गांधी का विज्ञान दर्शन	संदीप जोशी
	2. मीडिया घरानों की एकाधिकार की प्रवृत्ति पर अंकुश की जरूरत	– जवाहरलाल कौल
	3. मुनाफे के दौर में गायब हो रही हैं खबरें	राजदीप सरदेसाई
	4. रद्दी न होने की जद्दोजहद	निधीश त्यागी
	5. मीडिया के लिए घातक है कारपोरेट कल्चर	कुलदीप नैयर
	6. पाठकों से धोखाधड़ी बंद हो	श्रवण गर्ग
	7. मीडिया : ताकत बढ़ी, प्रतिष्ठा घटी	बलवीर दत्त
	8. गिरवी हो गई है पत्रकारिता	पी. साईनाथ
	9. कुछ भी परोसना ठीक नहीं	बी.जी. वर्गीज
	10. मिशन नहीं, कमीशन की पत्रकारिता	परंजय गुहा ठाकुरता
	11. अस्सी पर भी मैदान में	डा. नरेंद्र शर्मा 'कुसुम'
	12. कद से नाटे पर कलम से कद्दावर के वे	डा. मनोहर प्रभाकर
	13. नैतिक मूल्यों के कट्टर पक्षधर नेमीजी	डा. मनोहर प्रभाकर
नवंबर 2011	1. पेड न्यूज की पहली बलि	विजयदत्त श्रीधर
	2. दिमाग साफ तो नदी भी साफ	अनुपम मिश्र
	3. प्रकृति पर भौतिकी के प्रभाव	डा. कपूरमल जैन
	4. हिन्दी में वनस्पति विज्ञान लेखन में तकनीकी शब्दों और शब्दावलियों का महत्व	प्रेमचंद्र श्रीवास्तव
	5. हिन्दी विज्ञान लेखन में महिलाएँ	डा. शिवगोपाल मिश्र
	6. विज्ञान पत्रकारिता में विज्ञान नाटक	डा. दिनेश मणि
	7. जलवायु परिवर्तन : कारण, प्रभाव एवं उपाय	बलराम यादव
दिसंबर 2011	1. साफ माथे पर सम्मान का तिलक	विजयदत्त श्रीधर
	2. आवश्यकता है स्वभाषा प्रेम, स्वाभिमान और संकल्प की	नारायण दत्त
	3. हम सब जनता के प्रति जवाबदेह हैं	मार्कण्डेय काटजू
	4. मीडिया की मर्यादा	अजय सेतियाल
	5. नियंत्रण की अनियंत्रित सलाह	डा. वेदप्रताप वैदिक
	6. पत्रकारिता बनाम लोकपाल	बसंतकुमार तिवारी
	7. साहित्यिक पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य	डा. कुमुद शर्मा
	8. भारतीय मीडिया कर्म को चुनौती	प्रो. राममोहन पाठक
	9. विज्ञान संचार एवं संचारक	डा. शिवगोपाल मिश्र
	10. हरित क्रांति कहाँ से आई	राजेंद्र हरदेनिया
जनवरी 2012	1. सूचना के अधिकार का आतंक	डा. हरवंश दीक्षित
	2. सूचनाधिकार का खौफ	अजय सेतिया
	3. गोपनीयता की जिद से जूझता सूचना का अधिकार	डा. रूपा मंगलानी
	4. मीडिया पर भी लागू हो आर.टी.आई.	अनिल चमड़िया
	5. सूचना का अधिकार कानून का सफरनामा	ऋषि कुमार सिंह
	6. बढ़ती लागत से व्यापार बनता मीडिया	बी.जी. वर्गीज

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	7. भविष्य की ऊर्जा : संलयन शक्ति	शुकदेव प्रसाद
	8. विज्ञान परिषद प्रयाग के सौ वर्ष	देवव्रत द्विवेदी
	9. कृषि और पर्यावरण की चुनौतियाँ	डा. दिनेश मणि
फरवरी 2012	1. समाज के सजग प्रहरी : भवानीप्रसाद तिवारी	डा. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र'
	2. खबरों में लिपटा गाँव	प्रो. कृष्ण कुमार
	3. राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता का क्रांति युग	डा. मनोहर प्रभाकर
	4. हिन्दी में मौलिक विज्ञान लेखन	डा. शिवगोपाल मिश्र
	5. कैसे मालूम हुई धरती की उम्र	डा. कपूरमल जैन
मार्च 2012	1. आज भी खरे हैं तालाब (अत्यंत लोकप्रिय, समाजोपयोगी पुस्तक का पुनः प्रकाशन)	अनुपम मिश्र
अप्रैल 2012	1. मेरी पत्रकारिता	रामेश्वर गुरु
	2. मेरा रचना संसार	रामेश्वर गुरु
	3. प्रखर पत्रकार गुरु जी	हरिशंकर परसाई
	4. सुख–दुख के सहभागी गुरुजी	मायाराम सुरजन
	5. गुरुजी की यादें	डा. जे.पी. व्यास
	6. नौवें दशक में भी वही तेवर	डा. मनोहर प्रभाकर
	7. लेड संकट : पैटर्सन का संघर्ष	डा. कपूरमल जैन
	8. भीमकुण्ड की आत्मकथा	के.जी. व्यास
	9. वैश्विक तापन का कृषि पर प्रभाव	डा. दिनेश मणि
मई 2012	1. विक्रम संपादक सूर्यनारायण व्यास	डा. शैलेंद्र कुमार शर्मा
	2. विज्ञान तथा जल संचेतना	डा. शिवगोपाल मिश्र
	3. एक किताब के 18 साल, 38 संस्करण	अरविंद मोहन
	4. हिन्दी पत्रकारिता और भाषा का महत्वपूर्ण कोश	कैलाशचंद्र पंत
	5. 1857 : भारतीय परिप्रेक्ष्य – इतिहास की गवाही	
	6. विज्ञान संचार के व्यावहारिक सूत्र	विजयदत्त श्रीधर
	7. श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट	डा. मनोहर प्रभाकर
	8. शिक्षाविद डॉ. जगदीशप्रसाद व्यास	
जून 2012	1. खबर का बहुवचन है अखबार	गोपालकृष्ण गांधी
	2. कार्टूनों से कौन डरता है ?	रमेश नैयर
	3. संपादक राजेन्द्र माथुर	रामबहादुर राय
	4. रामेश्वर गुरु	राधेश्याम शर्मा
	5. टी.वी. चैनलों पर एकाधिकार	विजय प्रताप
	6. पर्यावरण प्रदूषण : समस्या एवं समाधान	डा. सुरेश उजाला
	7. कृषि में जल का समुचित प्रबंधन जरूरी	डा. दिनेश मणि
जुलाई 2012	1. यशस्वी संपादक प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	2. पं. सत्यदेव विद्यालंकार	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	3. पं. श्रीकांत ठाकुर विद्यालंकार	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
	4. चुनाव आयोग की शक्ति है मीडिया	एस.वाई. कुरैशी
	5. कौन रोकता है अच्छी और सच्ची खबरें लिखने से ?	प्रकाश दुबे
अगस्त 2012	1. साहित्य–रत्न–गर्भा देवरी	विजयदत्त श्रीधर
सितंबर 2012	1. सोशल मीडिया : मिथ और यथार्थ	रमेश नैयर

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	2. सोशल मीडिया पर सजा अफवाहों का बाजार	बालेंदु दाधीच
	3. वर्तमान मीडिया का भाषा संस्कार	विजयदत्त श्रीधर
	4. पत्रकारिता में स्टिंग ऑपरेशन	मनीषचंद्र शुक्ल
	5. आदर्श पत्रकार श्री रामकृष्ण पांडेय	श्यामलाल चतुर्वेदी
	6. भाषा	डा. शिवकुमार अवस्थी एवं डा. आर. रत्नेश
अक्टूबर 2012	1. लोक संस्कृति में विज्ञान–चेतना	विजयदत्त श्रीधर
	2. गांधी बनने की प्रक्रिया : वैज्ञानिक दृष्टि	डा. कपूरमल जैन
	3. लोक संस्कृति में जल विज्ञान और प्रकृति	के.जी. व्यास
नवंबर 2012	1. खबरपालिका का अर्थ चिंतन	विजयदत्त श्रीधर
	2. संग्रह त्याग न बिनु पहचाने	प्रो. रमेशचंद्र शाह
	3. शाहजहाँ ने ताजमहल...	अमृतलाल वेगड़
	4. दस्तावेजों से मिलती है राह	राधेश्याम शर्मा
	5. अनजाने गाँव से पहली–पहली पहचान	राजनारायण मिश्र
	6. विज्ञान संचार की भाषा	डा. दिनेश मणि
दिसंबर 2012	1. शब्द ऋषि का सम्मान	विजयदत्त श्रीधर
	2. कृती संपादक भवानीप्रसाद मिश्र	लक्ष्मण केडिया
	3. जिस तरह हम बोलते हैं....	कृष्णदत्त पालीवाल
	4. आज का दैनिक	भवानीप्रसाद मिश्र
	5. पत्रकार गोपालसिंह नेपाली	अर्जुनप्रसाद सिंह
	6. अमेरिकी राष्ट्रपति पर चंद्राकर का जादू	श्यामलाल चतुर्वेदी
	7. शब्दावली विमर्श : रसायन विज्ञान	डा. दिनेश मणि
	8. पानी की कहानी : वैज्ञानिक दृष्टि	प्रो. कपूरमल जैन
जनवरी 2013	1. पत्रकारिता की भाषा	विजयदत्त श्रीधर
	2. भूमंडलीकरण की सुनामी में हिन्दी मीडिया	रमेश नैयर
	3. संप्रेषण भाषा की पहली शर्त	डा. राममोहन पाठक
	4. बदलते मीडिया में भाषा का सवाल	संजय द्विवेदी
	5. हिन्दी पत्रकारिता को आज की देन	डा. धीरेन्द्रनाथ सिंह
	6. विज्ञान पत्रकारिता की भाषा	डा. दिनेश मणि
	7. भाषायी आक्रामकता और मानवता बोध	ऋषिकुमार सिंह
	8. दिखाओ वही जो मन भरमाये	डा. शिवकुमार अवस्थी
	9. पेड न्यूज की काली छाया	डा. आर. रत्नेश
फरवरी 2013	1. मीडिया क्यों सो जाता है?	विजयदत्त श्रीधर
	2. अज्ञेय का 'दिनमान'	प्रो. रमेशचंद्र शाह
	3. भूमंडलीकरण की मीडिया संस्कृति	प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल
	4. 'न्यूजवीक' ने तोड़ा दम	
	5. प्रयाग की पत्रकारिता	मंजुलिका लक्ष्मी
मार्च 2013	1. प्रताप का प्रथम अग्रलेख	गणेश शंकर विद्यार्थी
	2. एक था 'प्रताप' एक थी 'प्रभा'	सुरेश सलिल
	3. महात्मा गांधी पर पहली कविता	डा. लक्ष्मीनारायण दुबे
	4. हिन्दी पत्रकारिता का संत पुरुष	संत समीर
	5. मूल्यनिष्ठ पत्रकार श्री रमेश नैयर	डा. सुशील त्रिवेदी

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
अप्रैल 2013	1. पत्रकारिता का मतलब ही है सामाजिक सरोकार	अरविंद मोहन
	2. कितना सरोकार, कितना कारोबार	डा. मनोहर प्रभाकर
	3. मीडिया का गुण–धर्म और सरोकार	रमेश नैयर
	4. ग्लोबल मीडिया के सरोकार	कुमुद शर्मा
	5. सरोकारों से विमुख क्यों है पत्रकारिता	विजय सहगल
	6. सुकून भरी सुबह की खातिर	प्रकाश दुबे
	7. अपने गिरेबां में भी झाँकिए	कमल किशोर गोयनका
	8. पत्रकारिता के सांस्कृतिक सरोकार	डा. सुशील त्रिवेदी
	9. मीडिया और शिक्षा का लोक माडल	रमेश दवे
मई 2013	1. कुसंस्कारी संवाद, विकृत संप्रेषण	विजयदत्त श्रीधर
	2. जवाबदेही और पारदर्शिता जरूरी	दीपक तिवारी
	3. सोशल मीडिया का सामाजिक सरोकार	विजय प्रताप
	4. आस्था का जन समुद्र और मीडिया	धनंजय चोपड़ा
जून 2013	1. सुबोध विज्ञान पत्रकारिता और संचार	नारायण दत्त
	2. लोकाचार में विज्ञान	प्रो. के.एम. जैन, आनंदकुमार सिंह
	4. रोजी–रोटी से जोड़ना होगा विज्ञान संचार को	शशांक द्विवेदी
	5. क्या हम अपनी नदियों को जिंदा रहने देना चाहते हैं	अमृतलाल वेगड़
	6. जीएम फसलों की चिंताजनक सच्चाई	भारत डोगरा
	7. पहला संपादकीय	कुमुद शर्मा
जुलाई 2013	1. अब तार कभी नहीं आएगा!	विजयदत्त श्रीधर
	2. मीडिया का प्रभाव और बदलता समय	रामशरण जोशी
	3. प्रिंट मीडिया एवं जनसंचार	डा. दिनेश चमोला 'शैलेश'
	4. मीडिया की व्यापकता	डा. अर्जुन तिवारी
अगस्त 2013	1. संपादक के अधिकार	शिवपूजन सहाय
	2. क्यों चाहिए तीसरा प्रेस आयोग	प्रो. रामशरण जोशी
सितंबर 2013	1. किसका खौफ? कितना खौफ?	रामबहादुर राय
	2. 'वाशिंगटन टाइम्स' बिका	
अक्टूबर 2013	1. ठहरो! कौन पुकार रहा है!	अशोक वाजपेयी
	2. मीडिया शिक्षा तंत्र और उभरती चुनौतियाँ	राधेश्याम शर्मा
	3. मीडिया शिक्षा – कुछ विचारणीय बिन्दु	डा. सच्चिदानंद जोशी
	4. पत्रकारिता का लायसेंस क्यों?	उर्मिलेश
	5. जनसंचार शिक्षा चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ	संजय द्विवेदी
	6. मीडिया मुनाफे की कैद में	पी. साईनाथ
	7. संचार माध्यमों में गाँव और गाँवों में संचार माध्यम	उमेश कुमार
	8. मुद्रित माध्यमों से वैज्ञानिक चेतना का प्रसार	डा. दिनेश चमोला
	9. 50 साल में 250 भाषाएँ विलुप्त	
	10. उत्तराखण्ड की त्रासदी का सबक	डा. कपूरमल जैन
नवंबर 2013	1. काली खबरों की कहानी	विजयदत्त श्रीधर
	2. पेड न्यूज बदल रहा है मीडिया के मानदण्ड	प्रमोद भार्गव
	3. राजनीति के लिए मीडिया और मीडिया के लिए राजनीति	उमेश कुमार
	4. 'बिजनौर टाइम्स' एक सपने के पचास साल	पारस अमरोही

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
दिसम्बर 2013	1. 'वसंत' संपादक अभिमन्यु अनत	
	2. द्विवेदी जी और साहित्यिक पत्रकारिता	विजयदत्त श्रीधर
	3. महावीर प्रसाद द्विवेदी की संपादन कला	डा. सुशील त्रिवेदी
	4. मॉरिशस की हिन्दी पत्रिका 'वसंत'	डा. कमल किशोर गोयनका
	5. यह किताब आपके काम की है	अखिलेश आर्येन्दु
	6. बसंत कुमार तिवारी–स्मृति शेष	संतोष कुमार शुक्ल
जनवरी 2014	1. इक्कीसवीं सदी में सोशल मीडिया, राजसत्ता, राष्ट्रवाद और लोकतंत्र–प्रो. रामशरण जोशी	
	2. साइबर–सुपारी और पत्रकारिता	प्रो. राममोहन पाठक
	3. छवि बनाने–बिगाड़ने का धंधा	प्रमोद भार्गव
	4. वसुधा	डा. कांति कुमार जैन
फरवरी 2014	1. स्मृति शेष श्री संतोष कुमार शुक्ल	विजयदत्त श्रीधर
	2. अजातशत्रु शुक्ल जी	रमेश नैयर
	3. सामाजिक सरोकारों के आईने में राष्ट्रीय जल नीति	कृष्णगोपाल व्यास
	4. राष्ट्रीय जल नीति – 2012 एक विश्लेषण	राजेंद्र हरदेनिया
	5. जल संकट समाधान हेतु सोच में बदलाव जरूरी	ज्ञानेन्द्र रावत
	6. खेती में जल प्रबंधन	बाबूलाल दाहिया
	7. पानी नदिया प्यास	अशोक अंजुम
	8. पानी–पानी	रघुवीर सहाय
मार्च 2014	1. विज्ञान चेतना की जवाबदारी से मुँह चुरा रहे हैं समाज और सरकार	विजयदत्त श्रीधर
	2. अंध विश्वास से लड़ते हुए शहीद नरेन्द्र दाभोलकर	प्रकाश दुबे
	3. जनसंचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं साहित्यिक परिप्रेक्ष्य	डा. दिनेश चमोला
	4. जैव विविधता के बिना जिंदगी कहाँ	विश्वेश्वर मिश्र
	5. विकराल होने जा रहा है जल संकट	ज्ञानेन्द्र रावत
	6. जलवायु परिवर्तन : वैश्विक समस्या	डा. दिनेश मणि
	7. देहवाली भीलों में बरसात संबंधी पारंपरिक विज्ञान	जितेन्द्र वसावा
	8. प्राचीन तालाबों में प्रतिबिंबित भारतीय जल विज्ञान	कृष्णगोपाल व्यास
	9. ऊर्जा के अक्षय स्रोत	डा. दिनेश मणि
अप्रैल 2014	1. गणेश शंकर विद्यार्थी की विरासत	विजयदत्त श्रीधर
	2. जालौन जनपद में पत्रकारिता के सौ वर्ष	अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद'
	3. कोई घर तोड़ रहा है, कोई कर रहा है सरेआम अपमान	संजीव कुमार शर्मा
	4. हिन्दी पत्रकारिता : बदलता वक्त, नई चुनौतियाँ	डा. दिनेश मणि
	5. मीडिया के बदलते सरोकार	उमेश कुमार
	6. विज्ञापन लेखन : उद्देश्य एवं प्रकार	डा. दिनेश चमोला
	7. दैनिक समाचारपत्रों में सांस्कृतिक विकास के समाचारों की प्रस्तुति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डा. नृपेन्द्रकुमार शर्मा एवं डा. नरेंद्र त्रिपाठी
मई 2014	1. आचार्य परंपरा और हम	विजयदत्त श्रीधर
	2. आत्म निवेदन	महावीर प्रसाद द्विवेदी
	3. आचार्यजी का चिंतन प्रवाह	महावीर प्रसाद द्विवेदी
	4. पं. बनारसीदास चतुर्वेदी की संपादकीय दृष्टि	डा. कृष्ण बिहारी मिश्र
	5. मीडिया सलाहकार की भूमिका पर सवाल	प्रो. अशोक टंडन
	6. खुशवंत सिंह	विजय सहगल
	7. जल चौपाल	डा. एम.एन. बुच

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
	8. आधुनिक विज्ञान के आईने में पारंपरिक तालाबों पर किताब	अरुण तिवारी
जून 2014	1. ज्ञान तीर्थ का तीसवाँ पड़ाव (सप्रे संग्रहालय)	डा. कृष्ण बिहारी मिश्र, रमेश नैयर, विजय जोशी, अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद', राजेश कालिया, अमृतलाल वेगड़, विजय बहादुर सिंह, डा. प्रभुदयाल मिश्र, डा. मनोहर प्रभाकर रमेश मुक्तिबोध, डा. विष्णुदत्त राकेश, र. शौरिराजन, विजय सहगल, एस.एन. सिंह, डा. कमल किशोर गोयनका, डा. शिवगोपाल मिश्र, गिरिजा शंकर शर्मा, डा. कपूरमल जैन, रमाकांत दुबे, डा. स्वाति तिवारी, प्रमोद भार्गव, गोविंद मिश्र, विष्णु पंड्या, देवेंद्र वर्मा, डा. पूरन सहगल, डा. जवाहर कर्नावट, प्रो. कमल दीक्षित, डा. राधेश्याम दुबे, लक्ष्मण भाण्ड, अशेष गुरु, प्रेमचंद श्रीवास्तव, डा. सुशील उपाध्याय, सतीश एलिया, युगेश शर्मा, डा. सुखनंदन सिंह, कमलेश जैमिनी, कर्मेंदु शिशिर, धनंजय चोपड़ा, डा. कीर्ति शर्मा, डा. शीलेंद्र कुमार कुलश्रेष्ठ, डा. दिनेश मणि, डा. सुरेश उजाला
	2. देवता नहीं रहे	विजयदत्त श्रीधर
	3. हिन्दी पत्रकारिता की सबसे कमजोर कड़ी : सब एडिटर	नारायण दत्त
	4. सही और उचित पत्रकारिता के पक्षधर	विश्वनाथ सचदेव
जुलाई 2014	1. जिनसे हमने पत्रकारिता और मूल्य संस्कार सीखे	हरिवंश
	2. साधुमना संपादक	अनुराग चतुर्वेदी
	3. क्या ऑनलाइन पत्रकारिता 'सच' की वाहक बन पाएगी?	प्रमोद भार्गव
	4. भरोसेमंदी पर टिकी है मीडिया की साख	विजय सहगल
	5. पलायन ग्रामीण भारत की सबसे बड़ी समस्या	पी. साईनाथ
अगस्त 2014	1. विज्ञान पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार	डा. दिनेश मणि
	2. लोकप्रिय विज्ञान संचार क्यों और कैसे	देवेंद्र मेवाड़ी
	3. विज्ञान संचार की अवधारणा	डा. शिवगोपाल मिश्र
	4. कैसे रास्ता बनाएँ विज्ञान संचारक?	डा. कपूरमल जैन
	5. जीवन में लोक विज्ञान	वसंत निरगुणे
	6. जीवन शैली में बदलाव लाए बिना ग्लोबल वार्मिंग का समाधान असंभव – ज्ञानेन्द्र रावत	
	7. जल प्रवाह की निरंतरता	कृष्ण गोपाल व्यास
	8. नदी पुनर्जीवन में भूजल विज्ञान	कृष्ण गोपाल व्यास
	9. जैव विविधता संरक्षण से ही पर्यावरण संरक्षण संभव	बाबूलाल दाहिया
	10. विज्ञान संचार : गणित हाशिए पर	डा. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
	11. सामाजिक दायित्व की उपेक्षा करते विज्ञापन	प्रमोद भार्गव
	12. जनसंपर्क : संकल्पना एवं सिद्धांत	डा. सूर्यनारायण रणसुभे
सितंबर 2014	1. हिन्दी का दायित्व	विजयदत्त श्रीधर
	2. 'विज्ञान' पत्रिका प्रकाशन के सौ वर्ष	डा. शिवगोपाल मिश्र
	3. 'विज्ञान' पत्रिका की शताब्दी	डा. दिनेश मणि
	4. शतजीवी 'विज्ञान' मासिक का विज्ञान पत्रकारिता में योगदान – विजय चितौरी	
	5. यादगार चरित्रों के 'प्राण'	सुनील मिश्र

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
अक्टूबर 2014	1. मीडिया में स्वामित्व की मर्यादा	दिलीप खान
	2. हिंदी पत्रकारिता का प्रस्थान बिंदु 1913 और प्रवासी अखबार 'गदर' – सुरेश सलिल	
	3. 'गदर' ने फूँका था क्रांति का मंत्र	विजय सहगल
	4. गदर आंदोलन की शताब्दी	
	5. भारतीय पत्रकारिता का यथार्थ	ज्ञानेन्द्र रावत
	6. सामाजिक विषमता और आंचलिक पत्रकारिता	अखिलेश आर्येन्दु
	7. विज्ञान लेखन के मेरे प्रथम गुरु श्री नारायण दत्त	देवेंद्र मेवाड़ी
	8. जैसे किसी नदी से मिला मैं	देवेंद्र मेवाड़ी
नवंबर 2014	1. क्यों जरूरी है वैज्ञानिक जागरूकता	देवेंद्र मेवाड़ी
	2. मंदसौर में विज्ञान	देवेंद्र मेवाड़ी की डायरी
	3. देशी अनाजों को भी बचाना होगा	बाबा मायाराम
	4. वाशिंगटन पोस्ट की बिक्री से उठे सवाल	अरुण तिवारी
	5. हुदहुद : मौसम विभाग की सटीक होती भविष्यवाणी	प्रमोद भार्गव
दिसंबर 2014	1. ओज और तेज की मराठी पत्रकारिता	विजयदत्त श्रीधर
	2. मराठी पत्रकारिता	डा. सुधीर गव्हाणे
	3. मेरा छोटा–सा निजी पुस्तकालय	डा. धर्मवीर भारती
	4. हिन्दी में विज्ञान शिक्षण समस्याएँ, चुनौतियाँ और समाधान	डा. के.एम. जैन
	5. परमाणु ऊर्जा	राजेन्द्र हरदेनिया
	6. लोक संस्कृति का संरक्षण आवश्यक है	डा. दिनेश मणि
जनवरी 2015	1. बीसवीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता और 'प्रभा'	सुरेश सलिल
	2. खबरों की सौदागरी	विश्वनाथ सचदेव
	3. मध्यप्रदेश के पहले श्रमजीवी पत्रकार श्री हुक्मचंद नारद	शिवानन्द
	4. डा. धर्मवीर भारती जिन्होंने 'धर्मयुग' के लिए साहित्य सृजन छोड़ा–डा. सच्चिदानंद जोशी	
	5. संवेदनशील संपादक श्री कमलेश्वर	डा. सुशील त्रिवेदी
	6. विज्ञान कथाएँ, विज्ञान संचार की सशक्त माध्यम	विजय चितौरी
फरवरी 2015	1. गुरु आज्ञा की पूर्ति का संतोष	विजयदत्त श्रीधर
	2. स्वामी श्रद्धानन्द और उनका पत्रकार कुल	डा. विष्णुदत्त राकेश
	3. अपने पत्रों में प्रतिबिम्बित श्री नारायण दत्त	डा. ए.एल. श्रीवास्तव
	4. संत पत्रकार	संदीप जोशी
	5. पेरिस में पैगंबर के पैगाम की हत्या	डा. वेदप्रताप वैदिक
	6. 'प्रभा' की विवरणी	सुरेश सलिल
मार्च 2015	1. ग्रामीण पत्रकारिता एक दुर्लक्षित क्षेत्र	विजयदत्त श्रीधर
	2. माधवराव सप्रे का राष्ट्रवादी चिंतन	डा. सुशील त्रिवेदी
अप्रैल 2015	1. इंटरनेट की आजादी का बड़ा फैसला	
	2. क्यों प्रकाशित हों ऑप एड पेज?	उमेश चतुर्वेदी
	3. पत्रिकाओं को सफल बनाने का हुनर था उनमें	भवदीप कांग
	4. आध्यात्मिक पत्रकारिता के पुरोधा पोद्दार जी का पत्राचार	रमेश नैयर
	5. बोलने की आजादी पर खत्म हुई लगाम	प्रमोद भार्गव
	6. मीडिया का धंधा और धंधे का मीडिया	डा. सुशील उपाध्याय
	7. सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिन्दी	प्रो. आनंदमणि त्रिपाठी
	8. नदियों के नजरिये से नजीर कई	अरुण तिवारी

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
मई 2015	1. धारा 66ए : आजादी और मर्यादा	रघु ठाकुर
	2. सोशल मीडिया से परम्परागत मीडिया को चुनौती!	
	3. श्री नारायण दत्त द्वारा संपादित मेरा अंतिम लेख, जो छप न सका –	डा. ए.एल. श्रीवास्तव
	4. भूकंप, मीडिया कवरेज और मुद्दे	डा. सुशील उपाध्याय
	5. राजस्थान से प्रकाशित भारत का एकमात्र विज्ञान पाक्षिक	डा. मनोहर प्रभाकर
	6. मातृभाषा में करना होगा विज्ञान संचार	
	7. पृथ्वी दिवस	कृष्ण गोपाल व्यास
जून 2015	1. चिरंजीव पुस्तकालय, आगरा का सप्रे संग्रहालय से सारस्वत संगम	विजयदत्त श्रीधर
	2. गीता रहस्य, महात्मा तिलक तथा माधवराव सप्रे	डा. अर्जुन तिवारी
	3. हिंदी पत्रकारिता को श्रद्धानंद–कुल का अवदान	रमेश नैयर
	4. केवल तमाशा नहीं हैं न्यूज चैनल	राजदीप सरदेसाई
	5. डिजिटल मीडिया से क्यों डर रहा है मीडिया	ब्रजेश राजपूत
	6. पानी के कारोबार को संस्कारित करने की जरूरत	कृष्ण गोपाल व्यास
	7. आइए सँजो लें विरासत के ये निशां	अरुण तिवारी
जुलाई 2015	1. युगधर्म है पत्रकारिता	राजकिशोर
	2. बेमानी है हिन्दी की विज्ञान पत्रकारिता की प्रगति का दावा	ज्ञानेन्द्र रावत
	3. विज्ञान पत्रकारिता चुनौतियाँ और तैयारियाँ	डा. कपूरमल जैन
	4. विज्ञान पत्रकारिता के निहितार्थ	डा. दिनेश मणि
	5. पैसा नहीं, प्रवाह देकर कहें 'नमामि गंगे'	अरुण तिवारी
	6. नर्मदा कछार : समस्याएँ और समाधान	कृष्ण गोपाल व्यास
	7. जल संकट के समाधान के लिए सबकी भागीदारी जरूरी	अखिलेश आर्येन्दु
	8. पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका	बाबूलाल दाहिया
अगस्त 2015	1. 400 अंक, 34 साल	विजयदत्त श्रीधर
	2. शेर–शेरनी या हम	अनुपम मिश्र
	3. सर्वव्यापी मीडिया आयोग बने	रामबहादुर राय
	4. पत्रकारिता में आंचलिकता की प्रतिष्ठा–स्थापना	डा. सुशील त्रिवेदी
	5. खबरों के आगे–पीछे	विश्वनाथ सचदेव
	6. पं. विद्यानिवास मिश्र और हिन्दी पत्रकारिता	अच्युतानंद मिश्र
	7. 21वीं सदी और मीडिया	रघु ठाकुर
	8. एकाधिकार और केन्द्रीकरण की ओर बढ़ता भारतीय मीडिया	गोविन्द सिंह
	9. शक्ति के इस विस्तार को समझें	प्रो. कमल दीक्षित
	10. नए मीडिया का नया जमाना	धनंजय चोपड़ा
	11. यह आकाशवाणी की लोकप्रसारक सेवा है	अरुण तिवारी
	12. विज्ञान पत्रकारिता की संभावनाओं से भरा है टी.वी. का पर्दा	निमिष कपूर
	13. आपातकाल में पत्रकारिता : कुछ यादें	विष्णु पंड्या
	14. महिला पत्रकारिता की गहरी जड़ें	डा. मंगला अनुजा
	15. सोशल मीडिया स्वरूप और संभावनाएँ	डा. सुशील उपाध्याय
	16. आभासी दुनिया में अश्लीलता	प्रमोद भार्गव
	17. सोशल मीडिया और समाज पर प्रभाव	डा. विनोद कुमार केवलरामानी
	18. एशिया के सबसे पुराने समाचार पत्र की 193 वर्षों की यात्रा	डा. जवाहर कर्नावट
	19. जासूसी दुनिया की राह	हैदर रिजवी
सितंबर 2015	1. सर्वोदय की पैदल पत्रकारिता	भवानीप्रसाद मिश्र

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
अक्टूबर 2015	1. द्विवेदी अभिनन्दन ग्रंथ का पुनर्प्रकाशन	प्रो. मैनेजर पांडेय
	2. चिरंजीव पुस्तकालय का सप्रे संग्रहालय में लोकार्पण	
	3. डा. बालशौरि रेड्डी	ईश्वर करुण
नवम्बर 2015	1. श्री कालिका प्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'	उमाशंकर तिवारी
	2. श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट	डा. मनोहर प्रभाकर
	3. पत्रकारिता के बीज और संस्कार	अरुण तिवारी
	4. भौतिकी का नोबेल	डा. कपूरमल जैन
	5. हिन्दी में विज्ञान : अंदाज–ए–बयां क्या हो	बृजमोहन गुप्त
	6. श्री हरिकृष्ण त्रिपाठी	अशेष गुरु
दिसम्बर 2015	1. भाषा बहता नीर है	संत समीर
	2. वेब पत्रकारिता में महिला पत्रकार	डा. मंगला अनुजा
	3. खबरों और अफवाहों की चौपाल साथ–साथ	धनंजय चोपड़ा
	4. वेब पत्रकारिता में सक्रिय महिला पत्रकार	ममता यादव
	5. हिन्दी में वेब पत्रकारिता	डा. जवाहर कर्नावट
	6. पत्रकारिता के इतिहास पुरुष जोसेफ पुलित्जर	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
जनवरी 2016	1. दादा के बड़प्पन का एक द्रष्टान्त	माखनलाल चतुर्वेदी
	2. मीडिया अध्ययन के यक्ष प्रश्न	डा. देवव्रत सिंह
	3. धीमी शुरुआत के बाद टेलीविजन की तरक्की	ब्रजेश राजपूत
	4. आर्य समाजी पत्रकारिता के दो कीर्तिशेष	डा. मनोहर प्रभाकर
	5. सोशल मीडिया और वेब पत्रकारिता	ममता यादव
	6. पेरिस जलवायु समझौता	अरुण तिवारी
	7. 'गंवई दस्तूर' पानी संकट के समाधान का बेहतर तरीका	अखिलेश आर्येन्दु
फरवरी 2016	1. सबके अपने शुक्ल जी	रमेश नैयर
	2. सद्भाव की धरोहर	गोविंदलाल वोरा
	3. गिरेबान में भी झाँकें टेलीविजन चैनल	डा. देवव्रत सिंह
	4. पत्रकारिता शिक्षा के पितामह : पी.पी. सिंह	डा. मनोहर प्रभाकर
मार्च 2016	1. दयानंद और हिन्दी पत्रकारिता	क्षेमचन्द्र 'सुमन'
	2. डरा हुआ पत्रकार मरा हुआ नागरिक बनाता है	रवीश कुमार
अप्रैल 2016	1. कलम के कारण कैद	सूर्यनारायण शर्मा
	2. 'मूर्धन्य संपादक' : भारत का इतिहास और भविष्य बनाने वालों का इतिहास	डा. सुशील त्रिवेदी
	3. मूल्यवान सन्दर्भ ग्रंथ	डा. मनोहर प्रभाकर
	4. सुमन संपादकों की पत्रकारी सुरभि	डा. आर. रत्नेश
	5. 56 शिखर पुरुषों से साक्षात्कार	युगेश शर्मा
मई 2016	1. पत्रकारिता के ऋषि काशीनाथ चतुर्वेदी	राकेश अचल
	2. पेशेवर बनाम अफसरशाही में झूलती सूचना सेवा	उमेश चतुर्वेदी
	3. जेम्स हिकी : कुछ और ज्ञातव्य तथ्य	डा. मनोहर प्रभाकर
	4. अवध नारायण मुद्गल होने का मतलब	बलराम
	5. मीडिया और नदी के संचार सबक	अरुण तिवारी
जून 2016	1. स्वदेशी–आन्दोलन और बायकाट	माधवराव सप्रे
	2. वेब मीडिया	ममता यादव

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
जुलाई 2016	1. वरेण्य पत्रकार लज्जाराम मेहता	डा. ओंकारनाथ चतुर्वेदी
	2. स्कूलों में मीडिया शिक्षा : बदलते समय की जरूरत	धनंजय चोपड़ा
	3. स्टिंग और खोजी पत्रकारिता : कुछ बुनियादी सवाल	डा. सुशील उपाध्याय
	4. वेब मीडिया : आसान नहीं हैं रास्ते	ममता यादव
	5. पत्रकारिता के लाल थे जवाहरलाल राठौड़	रमण रावल
अगस्त 2016	1. भारतीय पत्रकारिता का अहम किरदार – महिला पत्रकार	डा. मंगला अनुजा
	2. हिन्दी का लोकवृत्त रचने में महिला पत्रकारों का योगदान	उमेश चतुर्वेदी
	3. राजस्थान की पत्रकारिता में महिला सहभागिता	डा. मनोहर प्रभाकर
सितंबर 2016	1. संस्कृति पुरुष–नामवर	
	2. साहित्य और पत्रकारिता का संगम : गुरुदेव काश्यप	रमेश नैयर
	3. सोशल मीडिया का कड़वा सच	ममता यादव
अक्टूबर 2016	1. इक्कीसवीं सदी में गांधी	रमेशचन्द्र शाह
	2. हिन्द स्वराज का पहला पाठ : चम्पारण	विजयबहादुर सिंह
	3. समाज का प्रकृति एजेण्डा – विचारणीय बिन्दु	डा. कपूरमल जैन
नवंबर 2016	1. राजस्थान का ऐतिहासिक पत्र 'सर्वहित'	डा. ओंकारनाथ चतुर्वेदी
	2. डा. सुशील त्रिवेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व	
	3. सोशल मीडिया या डाकिया	रघु ठाकुर
दिसंबर 2016	1. धरती का बुखार और जलवायु परिवर्तन	डा. कपूरमल जैन
	2. दोधारी तलवार पर हैं जम्मू–कश्मीर के पत्रकार	सुरेश डुग्गर
	3. लोकजीवन का चितेरा पत्रकार	संजय द्विवेदी
	4. इसलिए अखरता है विजय सहगल का चले जाना	रमेश नैयर
	5. एक संवेदनशील रचनाकार का यूँ चले जाना...	अरुन नैथानी
जनवरी 2017	1. आए गांधी, छाए गांधी	अरविन्द मोहन
	2. पत्रकारिता में सृजनात्मकता	रामशरण जोशी
	3. परंपरागत पत्रकारिता बनाम समकालीन नागरिक पत्रकारिता	डा. सुशील त्रिवेदी
	4. टीवी एंकरों का खबराटक	डा. धनंजय चोपड़ा
फरवरी 2017	1. संचार है एक राजनीतिक औजार	
	2. रसायनों की मारी, खेती हमारी	राजेन्द्र हरदेनिया
मार्च 2017	1. आजादी के बाद हिन्दी पत्रकारिता : आचार और व्यवहार	रामबहादुर राय
	2. पत्रकारिता का बाजार बनाम बाजार की पत्रकारिता	डा. सुशील त्रिवेदी
	3. राजा राममोहन राय	संतोष कुमार शुक्ल
	4. पंडित अच्युतानंद मिश्र	प्रकाश दुबे
	5. पेड व्यूज निकट भविष्य का बड़ा खतरा	डा. सुशील उपाध्याय
	6. कैसी हो प्रेस की भूमिका	उमेश चतुर्वेदी
	7. नागरिक पत्रकार नन्दकिशोर पारीक	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
	8. मनीषी समर्थदान और राजस्थान समाचार	डा. ओंकारनाथ चतुर्वेदी
	9. मीडिया पर आसमान नहीं टिका	गिरीश उपाध्याय
अप्रैल 2017	1. बिन पानी सब सून	कृष्णगोपाल व्यास

प्रकाशन मास	लेख का शीर्षक	लेखक
मई 2017	1. संवेदना की कलात्मक अभिव्यक्ति	विजयदत्त श्रीधर
	2. कहाँ हैं क्रांतिकारियों की निशानियाँ	सुधीर विद्यार्थी
	3. मौलवी मोहम्मद बाकर	संतोष कुमार शुक्ल
	4. सांस्कृतिक पत्रकारिता	डा. सच्चिदानंद जोशी
	5. हिन्दी पत्रों में संपादक का पन्ना	उमेश चतुर्वेदी
	6. सोशल मीडिया : नए समय का संवाद	संजय द्विवेदी
जून 2017	1. कर्मयोगी पं. माधवराव सप्रे	विजयदत्त श्रीधर
	2. एस. कस्तूरीरंगा अय्यंगार	संतोष कुमार शुक्ल
	3. पूर्व–भारत की हिन्दी पत्रकारिता	डा. कृपाशंकर चौबे
	4. पश्चिम–भारत की हिन्दी पत्रकारिता	प्रकाश दुबे
जुलाई 2017	1. साहित्य और पत्रकारिता के प्रभाकर	डा. कल्याणप्रसाद वर्मा
	2. पत्रकारिता का दृष्टिपरक मुहावरा रचा राहुल देव ने	कृपाशंकर चौबे
	3. मीडिया की 'संदेहास्पद' भूमिका	विश्वनाथ सचदेव
	4. जनसंचार का पर्याय हैं लोक कलाएँ	डा. धनंजय चोपड़ा
	5. दक्षिण–भारत की हिन्दी पत्रकारिता	डा. राधेश्याम शुक्ल
अगस्त 2017	1. माधवराव सप्रे रचना–संचयन : एक बहुमूल्य दस्तावेज	रमेशचन्द्र शाह
	2. हद पार करती विधानसभा	ए. सूर्यप्रकाश
	3. आर.टी.आई. से पत्रकारिता	रामबहादुर राय
	4. उत्तर–भारत की हिन्दी पत्रकारिता	अरुन नैथानी
	5. मदनमोहन मालवीय	संतोष कुमार शुक्ल
	6. पत्रकारिता कठिन डगर है पनघट की	अनिल कुमार पाण्डेय
	7. प्रचार की जल्दबाजी की शिकार सरकारें	रघु ठाकुर

स्मृति शेष

कवि चंद्रकांत देवताले

चंद्रकांत देवताले हिंदी के सबसे निडर और प्रतिबद्ध कवि थे। निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग के संघर्षों के चित्रण में वे त्रिलोचन और नागार्जुन से भी आगे ठहरते हैं। स्त्री–पुरुष संबंधों और गृहस्थी पर सबसे मार्मिक कविताएँ उन्होंने ही लिखी हैं। उक्त विचार साहित्य अकादेमी द्वारा चंद्रकांत देवताले पर आयोजित शोक सभा में २३ अगस्त को नईदिल्ली में वरिष्ठ कवि विष्णु खरे ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि उनकी कविताएँ हमारी सबसे बड़ी ताकत हैं और हिंदी पाठक, समाज और इसके कवियों को जोड़कर रखने का बहुत बड़ा काम देवताले ने किया है। शोक सभा के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने शोक संदेश प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनके लेखन और व्यक्तित्व में अंतर कर पाना संभव नहीं था। युवा पीढ़ी से उनका सघन संवाद था। इसके बाद उनकी स्मृति में मौन रख कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

मराठी के प्रख्यात कवि चंद्रकांत पाटिल ने उन्हें भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ कवि के रूप में याद करते हुए कहा कि वे सभी भारतीय भाषाओं की काव्य धारा को समझने वाले कवि थे। उन्होंने मराठी दलित कविता को लेकर गहरा अध्ययन किया था। मंगलेश डबराल ने उनकी कविता 'औरत' का जिक्र करते हुए कहा कि यह हिंदी कविता में स्त्री विमर्श का आरंभ था, जिसे बाद में अन्य लोगों ने अलग–अलग तरीके से आगे बढ़ाया। उन्होंने उनकी राजनीतिक चेतना की प्रखरता, उसके पैनेपन को उल्लेख करते हुए कहा कि वे लौकिक प्रेम के भी अद्‌भुत कवि थे। उनकी कविता में माँ, पिता, पत्नी, बेटी बिल्कुल नायाब तरीके से प्रस्तुत हुए हैं। शोक सभा में हिंदी जगत के प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार एवं उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे।❑

माध्यम

फिल्मों की समीक्षा और समीक्षक

■ **राकेश दुबे**

हाल ही में आई इम्तियाज अली की फिल्म 'जब हैरी मेट सेजल' रवानगी से भरपूर एक रोचक फिल्म है। पर इसे समीक्षकों ने नकार दिया है। आलोचकों की तीखी टिप्पणियों के बाद सोशल मीडिया में भी इसे लेकर काफी नकारात्मक बातें कही जा रही थीं। ऐसा तब है जब इस फिल्म ने अपने प्रदर्शन के पहले सप्ताहांत में ही बाक्स आफिस पर 100 करोड़ रुपये का आँकड़ा पार कर लिया। आज बात एक फिल्म समीक्षक या फिल्म आलोचक की भूमिका पर है। आखिर उसका क्या काम होता है? उसका काम किस तरह से बदल रहा है? क्या समीक्षक अब भी प्रासंगिक बने हुए हैं?

सवाल यह है कि फिल्म समीक्षक कौन होता है? फिल्म अध्येता बारबरा एल बेकर ने 2016 में वेबसाइट कोरा पर बताया था कि फिल्म समीक्षा के तीन तरीके होते हैं। पहला तरीका लोकप्रियता या मनोरंजन पहलू का आकलन है। इस तरह की समीक्षाएँ दर्शकों की टिप्पणियों या सुझावों के जरिए सामने आती हैं। यानी एक सफल फिल्म वह है जो ढेर सारा पैसा कमाती है। दूसरे तरीके का इस्तेमाल पेशेवर फिल्म समीक्षक करते हैं। समाचारपत्रों या पत्रिकाओं के लिए समीक्षाएँ लिखने के लिए ये लोग फिल्म की गुणवत्ता मापने के तौर-तरीके आजमाते हैं। वे फिल्म को उसकी मौलिकता, दर्शकों के लिए प्रासंगिकता या फिल्म तकनीकों के उम्दा इस्तेमाल के आधार पर आँकते हैं। क्या कोई फिल्म आपको सोचने के लिए बाध्य करती है, भावनात्मक तौर पर उद्वेलित करती है या मानवीय संवेदनाओं के एक नए सिरे को उद्घाटित करने की कोशिश करती है, जैसे पैमाने पर ये आलोचक फिल्मों को तौलते हैं। उनका आकलन फिल्म की लोकप्रियता जैसे पहलू को पूरी तरह नजरअंदाज करता है।

तीसरे तरह के फिल्म आलोचक विश्लेषणात्मक प्रक्रिया का सहारा लेते हैं लेकिन यह विधा अक्सर शोध पत्रों और अकादमिक कार्यों के लिए इस्तेमाल की जाती है। स्पष्ट है कि पेशेवर भारतीय समीक्षकों का एक बड़ा हिस्सा फिल्म समीक्षा के दूसरे तरीके का ही इस्तेमाल करता है। वे समीक्षा के दौरान लोकप्रियता वाले पहलू पर शायद ही अधिक ध्यान देते हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य को भी उनके एजेण्डे में बहुत तवज्जो नहीं मिलती है। सूरज बड़जात्या की 2006 में आई फिल्म 'विवाह' को समीक्षकों ने उसके परंपरावादी मूल्यों के चलते उसे रूढ़िवादी करार दिया था। अधिकतर समीक्षक सीधे-सपाट अंदाज में कहानी बयाँ करने वाली फिल्मों के प्रति पक्षपाती होते हैं। समीक्षक अस्तित्ववादी और सघन फिल्मों को लेकर भी आग्रही होते हैं। बहरहाल जिस तरह समीक्षकों को अपनी पसंद और नजरिए के हिसाब से फिल्मों को आँकने का अधिकार है, उसी तरह दर्शकों को भी हक है। समस्या तब होती है जब दोनों में से कोई भी पक्ष अपनी चाहत को दूसरे पर थोपने की कोशिश करता है। अनुराग कश्यप की गैंग्स आफ वासेपुर सीरीज काफी पसंद की गई थी, लेकिन सिनेमाघर से निकलते समय ऐसा लगा कि इसमें कोई कहानी ही नहीं थी। हालाँकि उन फिल्मों को ऊँची रेटिंग देने वाले समीक्षक इस राय से इत्तफाक नहीं रखते हैं। क्या कोई ऐसी जगह हो सकती है जहाँ आलोचक, दर्शक, लोकप्रिय सिनेमा और बाजार सभी एक-दूसरे से तालमेल बिठा पाएँगे? सच तो यह है कि इस तरह की विषयनिष्ठ चर्चाओं में कभी भी स्पष्ट जवाब नहीं मिल पाते हैं।

(Email - rakeshdubeyrsa@gmail.com)

सप्रे संग्रहालय में 'पुस्तक संस्कृति' पर परिचर्चा का आयोजन

जब तक मानव रहेगा, तब तक रहेंगी किताबें

मनुष्य की प्रवृत्ति ज्ञान पिपासु है। यह उसे किताबों से ही मिल सकता है। इसलिए कहा जा सकता है कि जब तक मानव जिंदा है तब तक पुस्तकें जीवित रहेंगी। भले ही समय के साथ उसके स्वरूप में बदलाव आते रहें। इस आशय के विचार सप्रे संग्रहालय के सभागार में सुनाई दिए। मौका था पुस्तकालय दिवस पर आयोजित परिचर्चा का। भारत में पुस्तकालय संस्कृति के जनक डा. रंगनाथन के जन्म दिवस 12 अगस्त के दिन आयोजित इस परिचर्चा का विषय 'पुस्तक संस्कृति' ही था। कार्यक्रम का आयोजन संग्रहालय की नियमित शृंखला लोक संवाद के तहत किया गया था। परिचर्चा की खासियत यह थी कि सभागार में उपस्थित हर व्यक्ति ने अपनी बात रखी। इस अवसर पर वरिष्ठ कथाकार गोविंद मिश्र, शशांक, उर्मिला शिरीष, विजय मनोहर तिवारी, सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर, निदेशक डा. मंगला अनुजा, डा. रत्नेश, कमलेश पारे, दीपक पगारे सहित अन्य अनेक गणमान्य जन मौजूद थे।

किसने क्या कहा -

वरिष्ठ साहित्यकार राधावल्लभ त्रिपाठी - ''भले ही आज संचार के विभिन्न माध्यम आ गए हों, लेकिन एक दिन हम पुस्तकों की ओर लौटेंगे।''

राजीव शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी - ''नई पीढ़ी किताबों की शौकीन है। आज किताबों के कलेवर भी बदले हैं। मनुष्य को ज्ञान की प्यास है। इसलिए जब तक मानव जिंदा है, किताबें भी जिंदा रहेंगी।''

वसंत निरगुणे - ''जब लिपि नहीं थी, तब ज्ञान का हस्तांतरण वाचक परंपरा से होता था। पुस्तक परंपरा इसी ज्ञान परंपरा का व्यापक रूप है।''

राकेश दीक्षित - ''आज हिन्दी किताबें भले ही पाठकों की कमी महसूस कर रही हों, लेकिन अँगरेजी किताबों के पाठकों की संख्या अधिक है। इसकी वजह यह है कि अँगरेजी साहित्य में विविधता है। हिन्दी लेखकों को भी विषयों का दायरा बढ़ाना होगा।

के.जी. व्यास - ''पुस्तकालय हमारी ज्ञान जरूरतों को पूरा करते हैं।''

■ **दीपक पगारे**

(Email - deepakpagare67@gmail.com)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक विजयदत्त श्रीधर द्वारा दृष्टि आफसेट, भोपाल से मुद्रित तथा माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल (म.प्र.) 462 003 से प्रकाशित संपादक – विजयदत्त श्रीधर

मेरा प्रदेश
मध्यप्रदेश

mygov
मेरी सरकार

आइये सहभागी बने प्रदेश के विकास में

एमपी. MyGov राज्य के
विकास के लिए नागरिकों और सरकार के बीच
साझेदारी का अभिनव मंच है।
सुशासन में सक्रिय भागीदारी
हेतु आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

जुड़ने के लिए
mp.mygov.in पर पंजीयन करें
और राज्य के विकास में
भागीदार बनें।

mp.mygov.in

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

facebook.com/mp.mygov
twitter.com/MP_MyGov
MP MyGov

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2017

माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल

गांधी पर्व

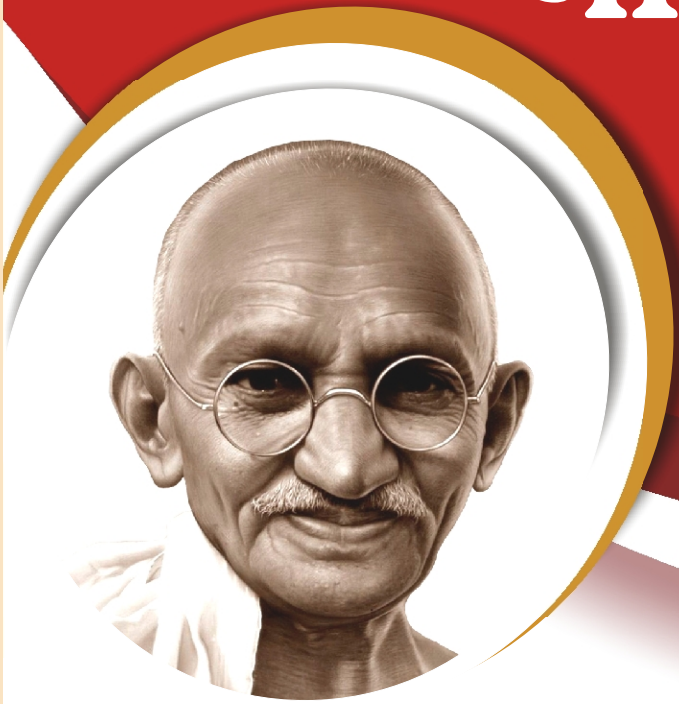

'कर्मवीर' विशेषांक का विमोचन

'गांधी जीवन और विचार'

लेखक : डा. राकेश कुमार पालीवाल

श्री अच्युतानंद मिश्र पर केन्द्रित
'सामयिक सरस्वती' अंक का विमोचन

'समकालीन हिन्दी पत्रकारिता'
पुस्तक का विमोचन

भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा के अध्येता
डा. कपिल तिवारी का व्याख्यान

'गांधी का चित्त और निर्मिति'

अभिनंदन

साहित्य मनीषी प्रो. रमेशचंद्र शाह ¦ इतिहासविद श्री शंभुदयाल गुरु

मुख्य अतिथि

श्री अच्युतानंद मिश्र
लब्ध प्रतिष्ठ संपादक

डा. विश्वनाथप्रसाद तिवारी
अध्यक्ष साहित्य अकादेमी

अध्यक्ष : श्री विजयदत्त पालीवाल

गांधी जयंती, सोमवार, 2 अक्टूबर 2017, अपराह्न 3.30 बजे

सप्रे संग्रहालय, मेन रोड नं. 3, भोपाल